ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

3

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

ख़ुतबात ज़ुलफ़िक़ार फ़क़ीर (3)

इफ़ादातः हज़रत मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी

तर्तीबः प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

संस्करणः 2010

पृष्ठः 288

मूल्यः 110/-

प्रस्तुत-कर्ताः
मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः
فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel.: 011-23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in www.faridexport.com

<u>*Name of the Book*</u>

Khutbat Zulfaqar Faqeer (Vol. 3)

By: **Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi Mujaddidi**

Edition: 2010 Price: Rs. 110/-

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-2

विषय-सूची

मुहब्बते इलाही

❁ ❁ ❁

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मैराज

आजिज़ी और इन्किसारी

○ ○ ○

दुनिया की मज़म्मत

❋ ❋ ❋

दीनी मदरसों की अहमियत

❋ ❋ ❋

सोहबते सुल्हा

❋ ❋ ❋

क़ुरआन पाक की अज़मत

पेश–ए–लफ़्ज़

माद्दा परस्ती के इस ख़तरनाक दौर में बुरी आदतों ने दिलों की बस्तियों को उजाड़कर रख दिया है। बड़ाई और माल की मुहब्बत ने इंसान के अंदर झूठ, लालच, ग़ीबत, धोका, बुग्ज़ और ख़ुदग़र्ज़ी जैसे ज़हरीले जरासीम पैदा कर दिए हैं। इसके अलावा जी की ख़्वाहिशात के घोड़े इस क़दर बेलगाम हो चुके हैं कि उनकी लगाम अल्लाह तआला की इताअत और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों की तरफ़ मोड़ने के लिए बहुत ज़्यादा ईमानी ताक़त की ज़रूरत है। ईमानी ताक़त हासिल करने के लिए अहले दिल (अल्लाह वालों) का वजूद कामयाब दवा का दर्जा रखता है। इन औलिया अल्लाह के दिलों पर इरफ़ाने इलाही की बारिश होती रहती है। वे जिस इंसान के अंदरून पर तवज्जेह डालते हैं तो वह दिल गुले-गुलज़ार बन जाता है। उनके फ़रमान इरफ़ान इलाही की उस फुलवार की तरह है जो इंसानी दिलों पर बहार पैदा कर देती है।

मौजूदा किताब एक ऐसी क़ीमती हस्ती, पीरे तरीक़त, शरियत के रहबर, अरब व अजम के शेख़, उलमा और नेक लोगों के महबूब, हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामत बरकातुहुम के ख़ुत्बात का बाबरकत का एक क़ीमती मजमूआ है। दर्दे दिल हासिल करने वालों को गोया ज़बाने हाल से

यूँ फ़रमा रहे हैं—

मुझे दर्दे दिल मिला है सुन लो ऐ दुनिया वालो
मगर फ़क़ीर बे नवा हूँ मुझे मिल गई है शाही

जिस तरह अल्लाह वालों की सोहबत से मुहब्बते इलाही हासिल होती है और दुनिया की चाहत कम होना शुरू हो जाती है उसी तरह इन खुत्बात को पढ़ने से भी पढ़ने वालों के दिलों में मुहब्बते इलाही पैदा होती है और दुनिया से बेरग़बती नसीब हो जाती है। पढ़ने के दौरान पढ़ने वाले को यूँ महसूस होता है जैसे हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम की महफ़िल में बैठे सुन रहे हों और जब कोई बात पढ़ने वाले के हाल के मुनासिब सामने आती है तो यूँ लगता है कि खुद हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम अलैहिदगी में बैठे समझा रहे हों। इसके अलावा इन खुत्बात के अंदाज़े बयान में इतनी मिठास है कि पढ़ने वालों के दिलों में अल्लाह की मारिफ़त का रस घोल देते हैं।

इस आजिज़ ने इन खुत्बात को लिखकर हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम की ख़िदमत में सही करने के लिए पेश किए। आपने अपनी आलमी मसरूफ़ियतों के बावजूद इन खुत्बात को न सिर्फ़ सही किया बल्कि उनकी तर्तीब वग़ैरह को भी पसंद फ़रमाया।

पढ़ने वालों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि इस किताब की तर्तीब में अगर कहीं कमी-ज़्यादती पाएं तो वह इस आजिज़ की तरफ़ से समझें और कमी-ज़्यादती की इत्तिला देकर अल्लाह के यहाँ अज्र हासिल करें। इससे आइंदा एडिशन में दरुस्ती करने में आसानी हो जाएगी।

इन खुत्बात की तर्तीब में जनाब भाई मुहम्मद सलीम साहब (मुरत्तिब के सादू भाई) डा० शाहिद महमूद साहब (नाज़िम जामियातुल हबीब फ़ैसलाबाद) और हकीम अब्दुस्सबूर साहब ने क़लमी मदद फ़रमाई। अल्लाह तआला इन हज़रात को बड़ा अज्र अता फ़रमाए। *(आमीन सुम्मा आमीन)*

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस आजिज़ को मरते दम तक हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम के ज़ेरे साए खुत्बात शरीफ़ की तर्तीब व तज़य्युन की ज़िम्मेदारी अच्छी तरह अंजाम देने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। *(आमीन सुम्मा आमीन)*

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ि अन्हु

एम०ए०, बी०एड०

मौज़ा बाग़, ज़िला झंग

मुहब्बते इलाही

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

والذين امنوا اشد حبالله ० سبحان ربك رب العزة عما

يصفون ० وسلام على المرسلين ० والحمد لله رب العالمين ०

ताय्युन अव्वल

हदीस क़ुदसी में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿كنت كنزا مخفيا﴾ मैं एक छिपा हुआ ख़ज़ाना था ﴿فاحببت ان اعرف﴾ मैंने चाहा कि मैं पहचाना जाऊँ ﴿فخلقت الخلق﴾ बस मैंने मख़्लूक़ को पैदा फ़रमा दिया यानी मख़्लूक़ को पैदा करने का जो चीज़ ज़रिया बनी वह मुहब्बत थी गोया ताय्युन अव्वल ताय्युन हुब्बी है।

अल्लाह तआला की पसंद

इस सिलसिले में अल्लाह तआला अब चाहते क्या हैं?

﴿والذين امنوا اشد حبا لله०﴾

कि ईमान वालों को अल्लाह तआला से शदीद मुहब्बत होती है। ये मेरे ऐसे बंदे बनकर रहें कि उनके दिल मेरी मुहब्बत से

लबरेज़ हों। उनके दिलों पर मेरी मुहब्बत छाई हुई हो यानी उनके दिलों में अल्लाह आया हो, उनके दिलों में अल्लाह समाया हुआ हो बल्कि उनके दिलों पर अल्लाह छाया हुआ हो।

कामिल मोमिन की निशानी

इंसान के जिस्म के हर उज़्व का कोई न कोई काम है। आँख का काम है देखना, कान का काम है सुनना, ज़बान का काम है बोलना और दिल का काम है मुहब्बत करना। दिल या तो अल्लाह तआला से मुहब्बत करेगा या फिर मख़्लूक़ से। इस दिल में या तो आख़िरत की मुहब्बत होगी या फिर दुनिया की। आख़िरत की मुहब्बत से दिल में नेकी का शौक़ पैदा होता है जबकि दुनिया की मुहब्बत के बारे में हदीस मुबारक में इर्शाद फ़रमाया गया :

﴿حب الدنيا رأس كل خطيئة.﴾

दुनिया की मुहब्बत तमाम बुराईयों की जड़ है।

मशाइख़ किराम ने इसके आगे फिर तफ़्सील बयान कर दी कि ﴿وتركها مفتاح كل فضيلة﴾ इसका छोड़ देना हर फ़ज़ीलत की कुँजी है। दुनिया की मुहब्बत का दिल से निकल जाना और परवरदिगार की मुहब्बत दिल में समा जाना कामिल मोमिन होने की निशानी है।

सिफ़ात और सिफ़ात वाले से अल्लाह तआला की मुहब्बत

क़ुरआन पाक में मोमिनों की कुछ सिफ़ात बयान की गई हैं जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को इतनी पंसदीदा हैं कि मौलाए करीम

ने उन सिफ़ात वाले बंदों के बारे ऐलान फ़रमा दिया कि मैं उनसे मुहब्बत करता हूँ। मसलन फ़रमाया ﴿احسنوا﴾ तुम नेकी करो, नेकोकार बन जाओ ﴿ان اللہ یحب المحسنین﴾ बेशक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नेकोकारों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। ﴿ویحب المتقین﴾ और अल्लाह तआला मुत्तक़ी लोगों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। ﴿إن الله يحب التوابين﴾ बेशक अल्लाह तआला तौबा करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। ﴿ان اللہ یحب المطهرين.﴾ और पाक-साफ़ रहने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। मालूम हुआ कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को इन सिफ़ात से मुहब्बत है।

जब इंसान में ये सिफ़ात आ जाएंगी तो वह इंसान भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का महबूब बन जाएगा क्योंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में ये सारी सिफ़ात थीं। ये कमालात नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में कमाल के दर्जे तक मौजूद थे। इसलिए आप अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के महबूब बने। इसी तरह आज भी इन सिफ़ात को पैदा करने के लिए जो बंदा मेहनत करेगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बंदे से भी मुहब्बत फ़रमाएंगे। रंग का गोरा हो या काला, अजम का हो या अरब का, परवरदिगार की नज़र में कोई फ़र्क़ नहीं। वहाँ तो दिल की हालत को देखते हैं। नाम बिलाल है, होंट मोटे हैं, शक्ल अनोखी है, रंग काला है मगर दिल मुहब्बते इलाही से भरा हुआ है। इस मुहब्बत के साथ ज़मीन पर चलते हैं और पाँव की आवाज़ जन्नत में सुनाई देती है। *(अल्लाहु अकबर)*

एक ठोस दलील

वहाँ तो मुहब्बत देखी जाती है। इसकी इससे बड़ी दलील

क्या हो सकती है कि अल्लाह तआला को शिर्क से नफ़रत है। जिसके बारे में अपने महबूब तक को ख़िताब फ़रमा दिया कि ऐ मेरे महबूब ﴿لئن اشركت﴾ अगर आप भी शिर्क करेंगे ﴿ليحبطن عملك﴾ आपके किए हुए अमलों को हम बर्बाद कर देंगे क्योंकि सिफ़ात से अल्लाह तआला को मुहब्बत है। इसलिए अगर वे सिफ़ात निकल जाएंगी और इंसान के अंदर उनकी ज़िद्द आ जाएगी तो अल्लाह तआला को ऐसे बंदे नापसंद होंगे। लिहाज़ा अगर बंदा चाहे कि वह अल्लाह तआला की नज़र में महबूब बन जाए तो उसे अपने अंदर वे सिफ़ात पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए।

अल्लाह तआला की बंदों से मुहब्बत

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर-हर सुन्नत से महबूबियत की एक मिक़्दार बंधी हुई है। जिस सुन्नत पर अमल हो गया उतनी महबूबियत बढ़ गई अगर सर के बालों से लेकर पाँवों के नाख़ुनों तक जिसने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल किया वह सारा का सारा अल्लाह की नज़र में महबूब बन गया। अब यह मामला हम पर है कि हम कितनी सुन्नतों को अपनाते हैं और अल्लाह तआला की नज़र में महबूब बनते हैं। अल्लाह तआला ने ऐलान फ़रमा दिया है ﴿قل﴾ कह दीजिए ﴿ان كنتم تحبون الله﴾ अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हो तो ﴿فاتبعونى﴾ तुम मेरी इत्तिबा करो ﴿يحببكم الله﴾ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तुमसे मुहब्बत फ़रमाएंगे।

दलीलों से वज़ाहत

कोई आदमी कह सकता है कि जी क्या दलील है कि बंदों से अल्लाह तआला को मुहब्बत है यानी अल्लाह तआला बंदों पर मेहरबान भी है, करीम भी है। अल्लाह की सौ सिफ़ात हैं मगर यह दलील कहाँ है कि अल्लाह तआला को मुहब्बत है। इसके बारे में उलमाए किराम ने दलाईल लिखे हैं। एक मोटी से दलील है जो आम आदमी की समझ में भी आ सकती है यह दी है कि जब किसी से बंदे को मुहब्बत होती है तो वह बंदा अपने महबूब को जो मर्ज़ी आए देता है चाहे कितना ही ज़्यादा क्यों न हो, वह उसे थोड़ा ही समझता है और कहता है कि मैं तो कुछ और भी करना चाहता था क्योंकि मुहब्बत जो होती है और अगर महबूब उसे थोड़ा सा कुछ दे दे तो वह उसे बहुत ज़्यादा समझता है, फूले नहीं समाता कि महबूब ने मुझे तोहफ़ा और हदिया भेजा है। इसी उसूल को क़ुरआन में देखिए। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बंदों को दुनिया की हज़ारों नहीं बल्कि इससे भी ज़्यादा नेमतें अता फ़रमाई मगर उन सारी नेमतों को सामने रखकर फ़रमाया ﴿قل متاع الدنيا قليل﴾ आप कह दीजिए कि दुनिया का मताअ तो थोड़ी सी है मगर जब इस बंदे ने अपने परवरदिगार को लेटे-बैठे थोड़ी देर के लिए याद किया। अमल चाहे थोड़ा सा था, कुछ लम्हों का अमल या सौ पचास साल की ज़िंदगी का अमल मगर क्योंकि महबूब की तरफ़ से अमल हुआ था इसलिए इर्शाद फ़रमाया :

﴿يايها الذين آمنو اذكروا الله ذكراً كثيرا.﴾

सुब्हानअल्लाह! जो महबूब ने अमल किया उसके लिए शर्त

का इस्तेमाल फ़रमाया और जो खुद अता फ़रमाया उसके लिए 'क़लील' का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया। इससे साबित हुआ कि अल्लाह तआला को अपने बंदों से मुहब्बत है।

क़ुरआन मजीद में भी अल्लाह तआला ने इस मुहब्बत का इज़्हार कर दिया। फ़रमाया ﴿اللّٰه ولی الذین آمنوا﴾ अल्लाह तआला ईमान वालों का दोस्त है हालाँकि यूँ भी फ़रमा सकते थे कि जिन्होंने कलिमा पढ़ा वह अल्लाह के दोस्त हैं। हक़ भी यही बनता था मगर नहीं, मुहब्बत का तक़ाज़ा कुछ और था। इसीलिए इस निस्बत को अपनी तरफ़ किया। सुब्हानअल्लाह! क्या करीमी है उस परवरदिगार की। उसने बंदे की हिम्मत बंधाई कि उसने कलिमा पढ़कर तसदीक़ की और परवरदिगार ने मुहब्बत का ऐलान फ़रमा दिया। *(सुब्हानअल्लाह)*

काफ़िरों से मुहब्बत करने की बुराई

अल्लाह तआला को ईमान के साथ ज़ाती मुहब्बत है और कुफ़्र के साथ ज़ाती अदावत है। लिहाज़ा जो कोई आदमी काफ़िरों के तरीक़ों को पसंद करेगा उसके बारे में फ़रमाया ﴿من تشبه بقوم فهو منهم﴾ जो जिस क़ौम से मुशाबिहत अपनाएगा हम उसी क़ौम से उसको उठाएंगे। जो काफ़िरों के रस्म व रिवाज, आदतों, लिबास या किसी और चीज़ से भी मुहब्बत करेगा गोया वह अल्लाह तआला की मुहब्बत से महरूम हो जाएगा। एक बार हिंदुओं की दीवाली का दिन था। हिंदू लोग दुकानों, मकानों और इंसानों पर रंगों का छिड़काव कर रहे थे। एक बूढ़ा मुसलमान किसी गधे के पास से गुज़रा तो गधे पर पान की पीक थूक कर कहा, तुझे

हिंदुओं ने रंगीन नहीं किया, ले मैं तुझे रंग देता हूँ। वह बड़े मियाँ जब फ़ौत हुए तो किसी को ख़्वाब में मिले। हाल पूछने पर कहा मैं सख़्त अज़ाब में हूँ। अल्लाह तआला को काफ़िरों के साथ इतनी नक़ल भी पसंद न आई। *(अल्लाहु अकबर)*

अल्लाह तआला का कोई बदल नहीं

दुनिया की हर माली चीज़ का बदल हो सकता है लेकिन अल्लाह तआला का बदल तो हो ही नहीं सकता। शायर ने कहा–

तर्जुमाः दुनिया की हर चीज़ से तू जुदा हुआ तो तेरे लिए बदल होगा अगर तू अल्लाह तआला से जुदा हो गया तो तेरे लिए कोई बदल मुमकिन नहीं।

अल्लाह तआला से मुहब्बत की दो बड़ी वजहें

अल्लाह तआला की मुहब्बत दिल में क्यों होनी चाहिए? इसकी कई वजहें हैं जिनमें से दो वजहें बहुत बड़ी हैं।

पहली वजह

एक तो यह कि आम दस्तूर है कि बंदे के ऊपर जिसकी मेहरबानियाँ, इनायतें हों वह अपने एहसान करने वाले का शुक्रगुज़ार भी होता है और उससे मुहब्बत भी करता है। मेरे दोस्तो! हम अल्लाह तआला की नेमतों को ज़रा शुमार तो करके देखें मगर ﴿وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها﴾ के मिस्दाक़ एक ही नतीजा निकलेगा कि अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते। आप सोचिए तो सही कि कोई

आदमी बारिश के क़तरों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। सारे समुंद्रों के पानी के क़तरों को कौन गिन सकता है? नहीं गिन सकता। सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों को कौन गिन सकता है? नहीं गिन सकता। आसमान के सितारों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। फिर भी यह आजिज़ ज़िम्मेदारी के साथ अर्ज़ कर रहा है कि यह मुमकिन है कि आसमान के सितारों को गिन लिया जाए, यह मुमकिन है कि दुनिया के समुंद्रों के क़तरों को गिन लिया जाए, यह मुमकिन है कि दुनिया की रेत के ज़र्रों को गिन लिया जाए लेकिन मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नेमतों को गिनना इंसान के लिए मुमकिन नहीं है। अगर वह परवरदिगार बीनाई अता न करते तो हम अंधे पैदा होते, अगर वह गोयाई अता न करते तो हम गूंगे पैदा होते, अगर सुनने की ताक़त ने देते तो हम बहरे पैदा होते, अगर वह पाँव न देते तो हम लंगड़े होते, हम लूले होते, अगर वह सेहत न देते तो हम बीमार होते, अगर वह माल न देते तो हम ग़रीब होते, अगर वह इज़्जत न देते तो हम ज़लील होते, अगर वह औलाद न देते तो हम बेऔलादे होते, अगर वह सुकून न देते तो हम परेशान होते।

मेरे दोस्तो! ये परवरदिगार की नेमतें ही तो हैं कि हम इज़्ज़त भरी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। यह कोई हमारा कमाल है? नहीं यह कमाल वाले का कमाल है। अगर वह किसी की हक़ीक़त को ज़ाहिर कर दे तो हम में से कोई नाप-तोल के क़ाबिल नहीं है। कौन है जो अपने को जाँच के लिए पेश कर सके। एक बुज़ुर्ग ने 'अकमाले ऐशम' में एक बात लिखी है। वह सोने की रोशनाई से

लिखने के क़ाबिल है। फ़रमाया कि ऐ दोस्त! जिसने तेरी तारीफ़ की उसने हक़ीक़त में तेरे परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ की जिसने अपनी रहमत की चादर से छिपाया हुआ है क्योंकि आम दस्तूर है कि इंसान अपने मोहसिन से मुहब्बत करता है। इसलिए हमें भी चाहिए कि हम भी अल्लाह तआला के एहसानों को सामने रखकर उससे मुहब्बत करें। कहते हैं ना, "जिसका खाइए उसके गुण गाइए।" इसलिए हमें भी चाहिए कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की याद दिल में रखें और उसी के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें।

दूसरी वजह

दूसरी बड़ी वजह यह है कि असल क़ुदरत और करने वाली वही ज़ात है। ﴿فعال لما يريد﴾ होना तो वही है जो वह चाहेगा। क्या नहीं देखते कि सैय्यदना नूह अलैहिस्सलाम चाहते हैं कि मेरा बेटा बच जाए। अपने बेटे को समझाते हैं और दुआएं करते हैं मगर वही हुआ जो अल्लाह तआला ने चाहा। आँखों के सामने बेटा ग़र्क़ हो गया। हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिमास्सलाम क़ुर्बानी देने के लिए तैयार है। ﴿فلما اسلما وتله للجبين﴾ बाप ने बेटे को लिटा लिया, छुरी ऊपर रखकर फेरना चाहते हैं, बाप ज़िब्ह करना चाहता है और बेटा ज़िब्ह होना चाहता है मगर अल्लाह तआला नहीं चाहते लिहाज़ा वहाँ बेटे के बजाए कोई और जानवर ज़िब्ह हो जाता है। अल्लाह के महबूब चाहते हैं कि आपके चचा अबू तालिब ईमान ले आएं। इसके लिए बहुत कोशिशें फ़रमायीं, यहाँ तक कि आख़िरी वक़्त में फ़रमाया, मेरे चचा! मेरे कान में

कलिमा पढ़ लें। मैं क़यामत के दिन गवाही दे दूँगा मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाते हैं, ऐ मेरे महबूब! ﴿انك لا تهدى من احببت﴾ आप उसको हिदायत नहीं दे सकते जिसको आप चाहें बल्कि जिसे अल्लाह तआला चाहते हैं उसे हिदायत देते हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पानी में शहद मिलाकर पिया करते थे। किसी वजह से आपने इरादा फ़रमाया लिया कि आज के बाद शहद मिला पानी नहीं पियूँगा मगर अल्लाह तआला नहीं चाहते थे कि ऐसा हो। लिहाज़ा इर्शाद फ़रमाया :

يايها النبى لم تحرم ما احل الله لك تبتغى
مرضات ازواجك. والله غفور رحيمo

मेरे दोस्तो! जब ये अंबिया अलैहिमुस्सलाम और सैय्यदुल अंबिया भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने मजूबर हैं और उनकी भी वही बात पूरी होती है जिसे अल्लाह तआला चाहते हैं तो फिर क्यों न हम भी उसी परवरदिगारे आलम की मुहब्बत का दम भरें।

ईमान की तकमील का पैमाना

बल्कि जिससे वह परवरदिगार मुहब्बत फ़रमाए उससे मुहब्बत करें और जिससे उसको दुश्मनी हो हम भी उसके साथ दुश्मनी रखें। इसी लिए हदीस मुबारका में आया है :

﴿من احب لله وابغض لله واعطى لله ومنع الله فقد استكمل الايمان.﴾

जिसने अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत की, अल्लाह तआला के लिए नफ़रत की, अल्लाह तआला के लिए दिया और

अल्लाह तआला के लिए मना किया उसने अपने ईमान को कामिल कर लिया।

इसलिए सीधी सी बात यह समझ में आती है कि हमें अपने परवरदिगार से मुहब्बत करनी है। यह मुहब्बत व इश्क़ जब तक दिल में नहीं होगा उस वक़्त असली ईमान की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।

इंसान की पाँच कमियाँ

एक और अंदाज़ में बात को समझने की कोशिश करें। जिस मशीन को किसी ने बनाया हो वह उसकी सिफ़ात और कमियों को अच्छी तरह जानता है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इंसान को पैदा किया इसलिए वह अच्छी तरह जानता है कि बाउंड्री क्या है। यही वजह है कि क़ुरआन मजीद में जहाँ इंसान की ख़ूबियाँ बयान की गई हैं, मसलन तमाम मख़्लूक़ से अशरफ़ फ़रमाया गया है वहाँ इंसान की पाँच ख़ामियों की भी निशानदेही की गई है।

इंसान ज़ालिम है

एक कमी यह है कि ﴿ظلوما﴾ यानी ज़ालिम है लेकिन एक बात बिल्कुल साफ़ है कि किसी में ज़ुल्म होना इस बात की दलील है कि उसमें अदल के होने की सलाहियत मौजूद है।

इंसान जाहिल है

दूसरी कमी यह बताई कि ﴿جهولا﴾ यानी इंसान जाहिल है। यहाँ भी देखें कि जाहिल होना इस बात की दलील है कि उसमें

इल्म हासिल करने की सलाहियत है। गोया ये दो लफ़्ज़ (ज़ालिम और जाहिल) जहाँ इंसान के ऐब ज़ाहिर करते हैं वहाँ उसकी ख़ूबियों की तरफ़ भी इशारा करते हैं। मालूम यह हुआ कि अगर इंसान करेगा तो यह अपने ज़ुल्म को अद्ल में और अपने जहल को इल्म में बदल सकता है और अगर यह मेहनत न करे तो यह ज़ालिम भी होगा और जाहिल भी।

इंसान कमज़ोर है

तीसरी कमी बयान करते हुए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ कि इंसान को कमज़ोर पैदा किय गया है। इसलिए इंसान को कमज़ोर बुनियाद वाला कहते हैं। यह इतना कमज़ोर है कि इसके दिमाग़ में एक अजनबी सा ख़ौफ़ (Fear of unknown) हर वक़्त रहता है। देखिए अमरीका का सदर बिल क्लिंटन अपने आपको सुपर पावर कहता है मगर नजूमी को बुलाकर पूछता है कि अगले दिनों में मेरा क्या बनेगा। माद्दी ऐतिबार से इतनी ताक़त है कि उसके हाथ में रिमोट कंट्रोल है मगर कमज़ोर होने की वजह से अंदर डर भी है कि पता नहीं आइंदा मेरे साथ क्या होगा। इंसान इतना कमज़ोर है कि एक छोटा सा वाइरस उसे बीमार कर देता है और हकीम डाक्टर कहते हैं कि यह लाइलाज बीमारी है हालाँकि वह वाइरस और जरासीम इतना छोटा होता है कि इंसान की आँख से भी नहीं देख सकता मगर वही छोटा सा जरासीम इंसान को मौत के मुँह में धकेल देता है।

इंसान जल्दबाज़ है

चौथी कमी यह बताई कि ﴿وكان الانسان عجولا﴾ अजूला का मतलब है जल्दबाज़। यह इंसान अपनी असल के एतिबार से जल्दबाज़ है। इसलिए चार दिन नफलें पढ़ेगा, पाँचवें दिन उम्मीद करेगा कि शिबली और जुनैद रह० की तरह मेरी दुआएं क़ुबूल होनी चाहिएं। एक दुआ को दो दफ़ा मांग ले तो कहता है कि अब तो यह दुआ ज़रूर पूरी होनी चाहिए। अल्लाह के बंदे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने नमाज़ का हुक्म साढ़े सात सौ दफ़ा से ज़्यादा दिया। उसको तो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया मगर खुद अगर किसी को तीन दफ़ा काम को कह दे तो चौथी दफ़ा ग़ुस्से से आँखें सुर्ख़ करके कहता है कि तूने सुना नहीं। तुझे तीन दफ़ा कहा। उस मालिकुल मुल्क ने, उस अहकमुल हाकिमीन ने ﴿له مقاليد السموٰت والارض﴾ जिसके हाथ में ज़मीन की कुँजियाँ हैं, साढ़े सात सौ बार से ज़्यादा नमाज़ का हुक्म दिया मगर हम अल्लाहु अकबर की आवाज़ सुनकर फिर भी मस्जिद में नहीं आते तो हमने उसके हुक्म का क्या भ्रम रखा। यह इंसान की जल्दबाज़ी ही है कि थोड़ी सी मेहनत पर बड़ी बड़ी उम्मीदें वाबस्ता कर लेता है।

इंसान थोड़े दिल वाला है

पाँचवी कमी यह बयान फ़रमाई कि ﴿ان الانسان خلق هلوعا﴾ 'हलुवा' अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसका मतलब है 'थोड़ा दिल' जी कच्चा, थोड़े दिल वाला। यह इंसान थोड़े दिल वाला है। यही वजह है कि खुशी मिलने पर फूल जाता है और थोड़ी सी परेशानी

आने पर मुर्झा जाता है। अगर इसे कामयाबी मिले तो अपने से जोड़ता है। इंटरव्यू में पास हो जाए तो कहता है कि जी हाँ, जब उसने सवाल पूछा तो मैंने यह जवाब दिया, उसने जब यूँ कहा तो मैंने फिर यूँ कहा और मैं कामयाब हो गया। और अगर इंटरव्यू में नाकाम हो जाए और पूछें कि प्यारे क्या बना? तो कहता है जैसी अल्लाह की मर्ज़ी। जब कामयाबी थी तो अपने से जोड़ी कि मैंने यूँ कहा, नाकामी हुई तो अपने से नहीं जोड़ता कि मैंने गड़बड़ की। 'जेढ़ा पुठ्ठा कम, जी जो अल्लाह दी मर्ज़ी।' जनाब अगर यह अल्लाह की मर्ज़ी है तो जो कामयाबी मिली थीं क्या वह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मर्ज़ी नहीं थी। हम क्रेडिट अल्लाह तआला को क्यों नहीं देते। इसलिए कि उस वक़्त हमारा नफ़्स हम पर सवार होता है हालाँकि हक़ तो यह था कि हम ख़ूबियों को उसकी तरफ़ मंसूब करते और कमियों को अपनी तरफ़ मंसूब करते।

इतना बड़ा सौदा

अब बताइए कि इंसान में ये कितनी बड़ी-बड़ी कमियाँ हैं। जिस मशीन में इतनी बड़ी कमियाँ हों भला उस मशीन को कोई ख़रीद सकता है? कोई नहीं ख़रीदता। मगर शायर ने एक अजीब बात कही—

> **तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तूने मुझे अज़ली इल्म के साथ देखा, तूने मेरे सारे ऐबों के साथ मुझे देखा और फिर ख़रीद लिया। तू वही इल्म वाला है और मैं वही ऐबों वाला हूँ। ऐ अल्लाह अब तू उसे रद्द न कर जिसे तूने पसंद किया था।**

यहाँ पसंद करने का मतलब यह है कि ऐब तो इतने ज़्यादा थे मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इतने ऐबों के बावजूद अपनी तरफ़ से सौदा करके अहदनामा लिख दिया और उसका ऐलान फ़रमा दिया :

﴿ان الله اشترى من المؤمنين انفسهم واموالهم بان لهم الجنة﴾

बेशक अल्लाह तआला ने मोमिनों के जान व माल को जन्नत के बदले ख़रीद लिया।

यहाँ नाम तो जन्नत का लिया गया मगर इससे मुराद बाग़ात नहीं थे बल्कि जन्नत के अंदर क्योंकि इसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का मुशाहिदा नसीब होगा इसलिए गोया यूँ फ़रमाया कि हमने तुम्हारी जान और माल को अपने मुशाहिदे के बदले में ख़रीद लिया क्योंकि वहाँ मुशाहिदाए हक़ नसीब होगा। यह हो ही नहीं कि आदमी जन्नत में भी जाए और मुशाहिदा न हो। सुब्हानअल्लाह कितना बड़ा सौदा किया। कहने वाले ने कहा—

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था
तूने ख़रीद कर हमें अनमोल कर दिया

मुहब्बते इलाही का जज़्बा

इंसान के अंदर अपनी बनावट के हिसाब से कमियाँ तो बहुत हैं मगर इसमें एक अजीब जज़्बा रख दिया गया है। वह जज़्बा अगर आ जाए तो इंसान की कमज़ोरी को उसकी क़ुव्वत में बदल देता है, इंसान की जिहालत को उसके इल्म में बदल देता है, इंसान की कमी को उसकी ख़ूबियों में बदल देता है जिसकी वजह

से वह जन्नत का हक़दार बन जाता है। इस जज़्बे का नाम 'मुहब्बते इलाही' है। यह मुहब्बते इलाही का जज़्बा इंसान के लिए ऐसा है जैसे कि पौधे के लिए पानी होता है। पानी न मिले तो सरसब्ज़ पौधे के फूल-पत्तियाँ मुर्झाकर ज़मीन पर गिर जाती हैं और अगर इस मुर्झाए हुए पौधे को पानी दे दीजिए तो वह फिर खिल उठता है। इंसान के अंदर मुहब्बते इलाही के जज़्बे की मिसाल भी यही है कि जिस इंसान में मुहब्बते इलाही का जज़्बा जाग जाए, उसकी सिफ़ात खिलना शुरू हो जाती हैं और उसमें ईमान की ख़ुशबू आने लगती है और ख़ुशबू माहौल को महका दिया करती है।

इश्क़ व अक़्ल की बराबरी

कभी इंसान अक़्ल को सामने रखकर ज़िंदगी गुज़ारता है और कभी मुहब्बत और इश्क़ के जज़्बे को सामने रखकर ज़िंदगी गुज़ारता है। लेकिन याद रखें कि इंसान की अक़्ल तो अय्यार है—

अक़ल अय्यार है सौ भेस बना लेती है
इश्क़ बेचारा न मुल्ला न वाइज़ न ख़तीब

जिस बंदे में इश्क़े इलाही का जज़्बा हो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ उसकी बड़ी क़दर व क़ीमत है। अगर अक़्ल के ज़ोर पर इबादत करेंगे तो इबादत तो लिखी जाएगी मगर यह बुनियाद कमज़ोर है।

अक़्ल को तन्क़ीद से फ़ुर्सत नहीं
इश्क़ पर आमाल की बुनियाद रख

कहने वाले ने तो यहाँ तक कह दिया—

नाला है बुलबुल शोरीदा तेरा ख़ाम अभी
अपने सीनें में ज़रा और उसे थाम अभी
पुख़्ता होती है अगर मसलेहत अंदेश हो अक़्ल
इश्क़ हो मसलेहत अंदेश तो है ख़ाम अभी
इश्क़ फ़रमूदा क़ासिद से सुबक गाम अमल
अक़्ल समझती ही नहीं माइनी पैग़ाम अभी
बे ख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़ल है महू तमाशाए लब बाम अभी

अक़्ल खड़ी देख रही होती है और इश्क़ उन मामलात से गुज़र जाता है, उन मंज़िलों को पार कर लेता है। अक़्ल की परवाज़ वहाँ तक नहीं पहुँचती जहाँ इश्क़ के परों से इंसान पहुँचता है।

इश्क़े इलाही की अहमियत

किसी शायर ने कहा है–

तर्जुमाः इश्क़ न हो तो यह शरअ (शरिअत) व दीन सिर्फ़ तसव्वुरात हैं।

उनमें जान नहीं होती। उनमें जान जब पड़ती है जब दिल में मुहब्बते इलाही और इश्क़े इलाही का जज़्बा हो। फिर इंसान के आमाल में जान आती है। इसीलिए मांगने वालों ने इश्क़ की इंतिहा मांगी।

तेरे इश्क़ की इंतिहा चाहता हूँ
मेरी सादगी तो देख क्या चाहता हूँ
छोटा सा दिल हूँ मगर शोख़ इतना
वहीए लन तरानी सुनना चाहता हूँ

यह इश्क़ ही तो है जिसने दीन में रंग भर दिया है। मुहब्बते इलाही न हो तो फिर पीछे क्या रखा है। ऐ अल्लाह! तेरे इश्क़ के सिवा फिर पीछे क्या बचा? हमें अल्लाह तआला से उसका इश्क़ मक़सूद बनाकर मांगना चाहिए।

अल्लाह से अल्लाह को मांगिए

यही इश्क़ इलाही वाली नेमत ही है जिसके हासिल करने के लिए हमें पूरी ज़िंदगी अता की गई। इसलिए अगर इंसान अल्लाह तआला से मांगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ही मांगे, उसकी मुहब्बत मांगे, उसका इश्क़ मांगे। आज अल्लाह तआला से माल मांगने वाले बहुत हैं, कारोबार मांगने वाले बहुत हैं, घर-बार मांगने वाले बहुत हैं लेकिन अल्लाह से अल्लाह को मांगने वाले बहुत थोड़े हैं। बहुत थोड़े हैं जो इसलिए हाथ उठाते हों कि मैं तुझसे तेरी रज़ा चाहता हूँ, मैं तेरी मुहब्बत मांगता हूँ। मेरे दोस्तो! किसी ने घर-बार मांगा, कारोबार मांगा, बीवी बच्चे मांगे या पूरी दुनिया मांग ली तो यक़ीन कीजिए कि उसने कुछ न मांगा और अगर अल्लाह का इश्क़ मांगा तो सब कुछ मांग लिया क्योंकि ये सब कुछ इश्क़े इलाही के सामने हेच है। इसलिए इसको तमन्ना बनाकर मांगिए कि रब्बे करीम! हम तेरा ऐसा इश्क़ चाहते हैं कि जिसकी वजह से हमारी रग-रग और रेशे-रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए।

तर्जुमाः ऐ काश तू मीठा हो जाए अगरचे सारी दुनिया मेरे साथ कड़वी हो जाए और मेरे और तेरे दर्मियान जो रिश्ता है काश कि वह आबाद हो जाए और मेरा और मख़्लूक़ के

दर्मियान जो रिश्ता है वह बेशक ख़राब हो जाए।

हज़रत राबिया बसरिया रह० की अल्लाह तआला से मुहब्बत

राबिया बसरिया रह० के बारे में आया है कि एक दफ़ा तहज्जुद के बाद यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! सूरज डूब चुका, रात आ गई, आसमान पर सितारे चमकने लग गए, दुनिया के बादशाहों ने अपने दरवाज़े बंद कर लिए, तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है। इसलिए तेरे सामने दामन फैलाती हूँ। सच है कि अल्लाह तआला से मांगने का मज़ा भी वही लोग जानते थे।

झूठी मुहब्बत वाले

अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से फ़रमाया, उन बंदों से कह दो कि झूठा है वह शख़्स है जो मुझ से मुहब्बत का दावा करे और रात आ जाए तो सो जाए। क्या हर आशिक़ अपने महबूब के साथ तन्हाई नहीं चाहता। यह जो मेरी मुहब्बत के दावे करते हैं उन्हें चाहिए था कि मेरे सामने सज्दे में रखते और राज़ व नियाज़ की बातें करते।

शाह फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० की मुहब्बत

हज़रत शाह फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० एक बहुत बड़े शैख़ थे। एक बार हज़रत अक़्दस थानवी रह० तशरीफ़ ले गए। हज़रत ने फ़रमाया, अशरफ़ अली! जब सज्दा करता हूँ तो मुझे यूँ

लगता है जैसे अल्लाह तआला ने मेरा प्यार ले लिया हो और अशरफ़ अली! जब क़ुरआन पढ़ता हूँ तो यूं लगता है कि जैसे परवरदिगार से बात कर रहा हूँ और मुझे इतना मज़ा आता है कि जन्नत में अगर कुछ हूरें मेरे पाए आएं तो मैं उनसे कहूँगा बीबी! मुझे थोड़ा सा क़ुरआन सुना दो। सुब्हानअल्लाह! उन लोगों को कितना मज़ा आता होगा। वह सिलसिलाए नक़्शबंदिया के शैख़ थे और मुराक़्बे को 'प्रेम प्याला' कहते थे। मुराक़्बे में इतना मज़ा आता था कि मुराक़्बे के लिए बैठते तो मुरीदों से फ़रमाते कि आओ प्रेम प्याला पिएं।

मुहब्बते इलाही की लज़्ज़तें

इमाम राज़ी रह० अजीब बात फ़रमाया करते थे कि ऐ अल्लाह! दिन अच्छा नहीं लगता मगर तेरी याद के साथ और रात अच्छी नहीं लगती मगर तुझसे राज़ व नियाज़ के साथ। सुब्हानअल्लाह, जी हाँ इश्क़े इलाही वाले हज़रात रात के अंधेरे के ऐसे ही मुन्तज़िर होते हैं जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन से मुलाक़ात का मुन्तज़िर हुआ करता है। क्यों? इसलिए कि उनको लज़्ज़त मिलती है। देखें एक लज़्ज़त इंसान को ज़बान से मिलती है। खाने-पीने से इंसान को ऐसी लज़्ज़त मिलती है कि कभी मिस्टर बर्गर की तरफ़ जा रहा होता है, कभी चाइनीज़ सूप की तरफ़ जा रहा होता है और कभी किसी और चीज़ की तरफ़। लिहाज़ा कुछ लज़्ज़तें इंसान की ज़बान के साथ वाबस्ता हैं, कुछ लज़्ज़तें इंसान की आँख के साथ जुड़ी हुई हैं। यही वजह है कि जब किसी ख़ूबसूरत चीज़ या ख़ूबसूरत मंज़र को देखता है तो लज़्ज़त महसूस करता है। कुछ

लज़्ज़तें इंसान के कान से जुड़ी हैं जब अच्छी आवाज़ से तिलावत हो रही होती हो, क़ारी अब्दुल बासित, अब्दुस्समद पढ़ रहे हों तो बड़ा लुत्फ़ आता है। जी चाहता है कि सुनते ही रहें। इसी तरह कुछ लज़्ज़तें इंसान के दिल के साथ जुड़ी हैं। वे मुहब्बत और इश्क़ की लज़्ज़तें हैं।

जब दिल तमाम आज़ा का सरदार है तो इससे जुड़ी लज़्ज़तें भी सारे आज़ा की लज़्ज़तों पर हावी होंगी। हम इन लज़्ज़तों को क्या जानें। जिनको इश्क़े इलाही की लज़्ज़तें नसीब हो जाएं वे भी यूँ कहा करते हैं—

तर्जुमाः अल्लाह! अल्लाह यह कितना मीठा नाम है कि जिसको लेने से मेरे बदन में यूँ मिठास आ गई जैसे चीनी को डालने से दूध मीठा हो जाता है।

इश्क़ एक आग है

﴿العشق نار يحرق ما سوى الله.﴾ इश्क़ एक आग है जो अल्लाह के सिवा को जलाकर रख देती है। इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० ने इस पर अजीब शे'र लिखे हैं। एक शे'र का तर्जुमा किसी शायर ने उर्दू में भी कर दिया। वह हमारे लिए समझना आसान है, फ़रमाया—

इश्क़ की आतिश का जब शोला उठा
मा सिवा माशूक़ सब कुछ जल गया
तेग़े ला से क़त्ल ग़ैरे हक़ हुआ
देखिए फिर बाद उसके क्या बचा

फिर बचा अल्लाह बाक़ी सब फ़ना
मरहबा ऐ इश्क़ तुझ को मरहबा

जब इश्क़ दिल में होता है तो मा सिवा (उसके अलावा) पर तलवार बनकर चलता है। इंसान के अंदर नाज़, नमूद, नख़रा, अनानियत सब कुछ को तोड़कर रख देता है।

शादबाद ऐ इश्क़ ख़ुश सौदाए मा
ऐ तबीब जुमला इल्लत हाए मा
ऐ दवाए निख़वत व नामूस मा
ऐ कि अफ़लातून व जालीनूस मा

यह इश्क़ तो बंदे के लिए अफ़लातून और जालीनूस बन जाता है, जी हाँ।

इश्क़े इलाही की शदीद कमी

मेरे दोस्तो इश्क़े इलाही न होने की वजह से हमारे आमाल में जान नहीं है। अल्लामा इक़बाल रह० फ़रमाते हैं—

मुहब्बत का जुनूं बाक़ी नहीं है
वह दिल वह आरज़ू बाक़ी नहीं
नमाज़ व रोज़ा व क़ुर्बानी व हज
यह सब बाक़ी है तू बाक़ी नहीं है

वह जो इंसान के अंदर इश्क़े इलाही का जज़्बा होता था जिसकी वजह से इंसान ज़िंदा होता था, आज वह नहीं। एक वक़्त था कि यह सीने का दिल इश्क़े इलाही से अंगारे की तरह गर्म हुआ करता था और आज तो जले हुए कोयले की तरह बिल्कुल

ठंडा हुआ पड़ा है। एक और जगह पर फ़रमाते हैं–

हक़ीक़त ख़ुराफ़ात में खो गई
यह उम्मत रिवायात में खो गई
लुभाता है दिल को बयाने ख़तीब
मगर लज़्ज़ते शौक़ से बे नसीब
वह सूफ़ी कि था ख़िदमते हक़ में मर्द
अजम की ख़्यालात में खो गया
वह सालिक मुक़ामात में खो गया
बुझी इश्क़ की आग अंधेर है
मुसलमां नहीं राख का ढेर है

आज का मुसलमान राख का ढेर बन गया है। सीने में मुहब्बते इलाही के वह अंगारे नहीं जल रहे जो उसके सीने को गरमा रहे हों जो उसे कभी नमाज़ों में खड़ा कर रहे हों, जो उसे अपने महबूब से मुलाक़ातों पर मजबूर कर रहे हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अल्लाह तआला से मुहब्बत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला से कैसी शदीद मुहब्बत थी। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि अज़ान की अल्लाहु अकबर होती तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे पहचानना छोड़ देते थे। मैं कई मर्तबा सामने आती तो आप पूछते, तुम कौन हो? मैं कहती आएशा। पूछते आएशा कौन? मैं कहती अबू बक्र की बेटी हूँ।

पूछते अबू बक्र कौन? मैं उस वक़्त पहचान लेती कि अब एक नाम दिल में इतना ग़ालिब आ चुका है कि दुनिया में किसी और को यह नहीं पहचानेंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुलबजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहब्बते इलाही

मुहब्बत का जज़्बा इंसान के दिल में तो अल्लाह तआला बड़ी क़द्रदानी फ़रमाते हैं। मुहब्बत में ऐसी कैफ़ियत हो जैसी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुलबजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीब हुई थी।

यह एक नौजवान सहाबी थे तो मदीना तैय्यबा से कुछ फ़ासले पर एक बस्ती में रहते थे। दोस्तों से मालूम हुआ कि मदीने तैय्यबा में एक पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए हैं। लिहाज़ा हाज़िर हुए और चोरी छिपे कलिमा पढ़ लिया। वापस घर आए। घर के सब लोग अभी काफ़िर थे लेकिन मुहब्बत तो वह चीज़ है जो छिप नहीं सकती। अपनी तरफ़ से तो छिपाया कि किसी को पता न चले मगर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का कोई ज़िक्र करता तो ये मुतवज्जेह होते—

एक दम भी मुहब्बत छिप न सकी
जब तेरा किसी ने नाम लिया

घर वालों ने अंदाज़ा लगा लिया कि कोई न कोई मामला ज़रूर है। एक दिन चचा ने खड़ा करके पूछा बताओ भाई कलिमा पढ़ लिया है? फ़रमाने लगे जी हाँ। चचा कहने लगा अब तेरे सामने दो रास्ते हैं या तो कलिमा पढ़कर घर से निकल जा और अगर

घर में रहना है तो फिर हमारे दीन को क़ुबूल कर ले। एक ही लम्हे में फ़ैसला कर लिया। फ़रमाने लगे मैं घर तो छोड़ सकता हूँ लेकिन अल्लाह के दीन को नहीं छोड़ सकता। चचा ने मारा पीटा भी और जाते हुए जिस्म के कपड़े भी उतार लिए जिस्म पर बिल्कुल कोई कपड़ा न था। माँ आख़िर माँ होती थी, शौहर की वजह से ज़ाहिर में कुछ कह तो न सकी लेकिन छिपकर अपनी चादर पकड़ा दी कि बेटा! सतर छिपा लेना। वह चादर लेकर जब बाहर निकले तो उसके दो टुकड़े किए एक से सतर छिपा लिया और दूसरी ओढ़ ली। इसीलिए ज़ुलजादैन यानी दो चादरों वाले मशहूर हो गए। अब कहाँ गए? जहाँ सौदा कर चुके थे क़दम अपने आप मदीना तैय्यबा की तरफ़ बढ़ रहे हैं। रात को सफ़र करके सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हुए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो चेहरे पर अजीब ख़ुशी की कैफ़ियत ज़ाहिर हुई। सहाबा किराम मुतवज्जेह हुए कि यह कौन आया कि जिसको देखकर अल्लाह के महबूब का चेहरा यूँ तमतमा उठा है–

दोनों जहाँ किसी की मुहब्बत में हार के
वह आ रहा है कोई शबे ग़म गुज़ार के

हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! सब कुछ छोड़ चुका हूँ। अब तो आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में हाज़िर हुआ। लिहाज़ा अस्हाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गए और वहीं रहना शुरू कर दिया।

क्योंकि क़ुर्बानी बहुत बड़ी दी थी। मुहब्बते इलाही में अपना

सब कुछ दाँव पर लगा दिया था इसलिए इसका बदला भी ऐसा ही मिलना चाहिए था। इसलिए उनको ऐसी कैफ़ियतें हासिल थीं कि मुहब्बते इलाही में कभी-कभी जज़्ब में आ जाते थे। आजकल के लोग पूछते हैं कि जनाब जज़्ब क्या होता है? जनाब हदीसे मुबारका पढ़ो फिर पता चलेगा कि जज़्ब सहाबा किराम पर भी तारी होता था। हदीसे मुबारका में आया है कि यह (हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुलबजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु) मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर कभी-कभी बैठे होते थे और ऐसा जज़्ब तारी होता था कि ऊँची आवाज़ में *अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!* कह उठते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लहु अन्हु ने देखा तो उन्होंने डांटा कि क्या करता है। यह सुनकर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उमर! अब्दुल्लाह को कुछ न कहो। यह जो कुछ कर रहा है इख़्लास से कर रहा है।

आख़िरत का क़ाबिले रश्क सफ़र

कुछ अरसा गुज़रा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ग़ज़वे में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अब्दुल्लाह भी साथ गए। रास्ते में एक जगह पहुँचे तो बुख़ार हो गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप, हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को लेकर तशरीफ़ लाए। जब वहाँ पहुँचे तो हज़रत अब्दुल्लाह के कुछ लम्हें बाक़ी थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सिर को अपनी गोद मुबारक में रख लिया। यह वह खुशनसीब सहाबी हैं जिनकी निगाहें चेहर-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लगी हुई थीं और वह अपनी

ज़िंदगी के आख़िरी साँस ले रहे थे। सुब्हानअल्लाह! गोद मुबारक में अपनी जान इस कैफ़ियत में जान देने वाले के सुपुर्द कर दी।

अल्लाह तआला की तरफ़ से इज़्ज़त मिलना

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि कफ़न-दफ़न की तैयारी करो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चादर भिजवाई और फ़रमाया कि अब्दुल्लाह को इस चादर में कफ़न दिया जाएगा। सुब्हानअल्लाह! वाह अल्लाह! तू भी कितना क़द्रदान है कि जिस बदन को तेरी राह में नंगा किया गया था आज तू उस बदन को अपने महबूब की कमली में छिपा रहा है। सुब्हानअल्लाह! सौदा करके तो देखें। फिर देखें अल्लाह तआला कैसी क़द्रदानी फ़रमाते हैं। हम लोग ही बेक़द्रे हैं कि अल्लाह तआला को कहना पड़ा :

﴿وما قدرو الله حق قدره﴾

और उन्होंने अल्लाह तआला की क़द्र नहीं की जैसी करनी चाहिए थे।

ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका जनाज़ा पढ़ाया। फिर जनाज़ा लेकर क़ब्रिस्तान की तरफ़ चले। शरिअत का मस्अला यह है कि जो आदमी मैय्यत का सबसे ज़्यादा क़रीबी हो तो वह क़ब्र में उसको उतारने के लिए उतरे। उस वक़्त अबू बक्र व उमर रज़ियल्लहु अन्हुमा भी खड़े थे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ख़ुद क़ब्र में उतरकर फ़रमाया कि अपने भाई को पकड़ो मगर उनके अदब का ख़्याल रखना। आपने उस आशिक़े

सादिक़ को अपने हाथों में लिया और ज़मीन पर लिटा दिया गोया अपनी अमानत को ज़मीन के सुपुर्द कर दिया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हसरत

हदीसे मबारक का खुलासा है अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उनको ज़मीन पर रखा तो आप ने इर्शाद फ़रमाया :

> **"ऐ अल्लाह मैं अब्दुल्लाह से राज़ी हूँ तू भी इससे राज़ी हो जा।"**

ये ऐसे बोल थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी सुनकर वज्द में आ गए और कहने लगे मेरा जी चाहता है कि काश! आज नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथों में मेरी मैय्यत होती। देखा मेहनत व मुजाहिदा और क़ुर्बानियाँ करने वालों को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त यूँ बदला दिया करते हैं। आप सोचिए कि जो आक़ा अपने कमज़ोर बंदों को हुक्म फ़रमाता है,

﴿هل جزاء الاحسان الا الاحسان.﴾

कोई अगर उसके लिए क़ुर्बानियाँ दे तो क्या अल्लाह तआला क़द्रदानी नहीं फ़रमाएंगे? ज़रूर फ़रमाएंगे, *सुब्हानअल्लाह।*

सैय्यदा ज़िन्नैरा रज़ियल्लाहु अन्हा और मुहब्बते इलाही

सैय्यदा ज़िन्नैरा एक सहाबिया हैं जो कि अबू जहल की

ख़ादिमा थीं। आपने कलिमा पढ़ लिया। अबू जहल को भी पता चल गया। उसने आकर पूछा, क्या कलिमा पढ़ लिया है? फ़रमाया हाँ। आप बड़ी उम्र की थीं, मुशक़्क़तें नहीं उठा सकती थीं मगर अबू जहल ने एक दिन अपने दोस्तों को बुलाया और उनके सामने बुलाकर उसने उन्हें मारना शुरू कर दिया लेकिन सहन करती रहीं क्योंकि वह तो अल्लाह के नाम पर इस से बड़ी तकलीफ़ें सहने के लिए तैयार थीं। जब उसने देखा कि मारने के बावजूद उनकी ज़बान से कुछ नहीं निकला तो उसने आपके सिर पर कोई चीज़ मारी जिससे आपकी आँखों की रोशनी चली गई और आप अंधी हो गयीं। अब उन्होंने मज़ाक़ करना शुरू कर दिया। कहने लगे, देखा तू हमारे बुतों की पूजा छोड़ चुकी थी लिहाज़ा हमारे माबूदों ने तुझे अंधा कर दिया। मार सहन कर चुकी थीं, मुशक़्क़तें उठा चुकी थीं। ये सब सज़ाए सहन करना आसान थीं। मगर जब उन्होंने यह बात कही तो आप सहन न कर सकीं इसलिए फ़ौरन तड़प उठीं। उसी वक़्त कमरे में जाकर सज्दे में गिर गयीं और अपने महबूबे हक़ीक़ी से राज़ व नियाज़ की बातें करने लग गयीं। अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! उन्होंने मुझे सज़ाए दीं तो मैंने बरदाश्त किया और मेरी हड्डियाँ भी तोड़ देते, वे मेरे जिस्म को छलनी कर देते तो मैं यह सब कुछ बरदाश्त कर लेती मगर तेरी शान में गुस्ताख़ी की कोई बात सहन नहीं कर सकती। वे तो यूँ कहते हैं कि हमारे माबूदों ने तुम्हारी रोशनी छीन ली। ऐ अल्लाह जब मैं कुछ नहीं थी तो तूने मुझे बना दिया, रोशनी भी अता कर दी, अब तूने ही रोशनी वापस ले ली। ऐ अल्लाह! तू मुझे दोबारा रोशनी अता फ़रमा दे ताकि इन पन तेरी अज़मत खुल जाए।

अभी दुआ वाले हाथ चेहरे पर नहीं फेरे थे कि अल्लाह तआला ने आपकी रोशनी लौटा दी। सुब्हानअल्लाह! उस वक़्त मर्द तो मर्द औरतों में भी मुहब्बते इलाही का जज़्बा भरा हुआ था

हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा के इश्क़ व मुहब्बत की दास्तान

अब आपको एक मलिका का वाक़िआ बताता हूँ कि उसको अल्लाह तआला के साथ कितनी मुहब्बत थी। उसका नाम हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा था। वक़्त के बादशाह फ़िरऔन की बीवी थीं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको हुस्न व जमाल का नूमाना बना दिया था, परी चेहरा बना दिया था, नाज़ुक बदन बनाया था। इसलिए फ़िरऔन उनसे इश्क़ करता था और उनके नख़रे उठाता था। हर क़िस्म की सहूलत और आराम मौजूद था। जो चाहतीं कपड़े पहनतीं, जैसा चाहतीं घर को सजातीं, जैसे चाहतीं अच्छा खाना खातीं। बीसियों नौकरानियाँ उनकी ख़िदमत के लिए हर वक़्त मौजूद रहती थीं। जब वह आँख उठाकर देखती तो नौकरानियाँ भाग पड़तीं। कोई काम नहीं करती थीं। सारा दिन शाही महल में हुक्म चलाती रहती थीं। ग़र्ज़ हर तरह से आराम की ज़िंदगी गुज़ार रही थीं।

इतने में पता चला कि अल्लाह ने एक नेक बंदे को अपना पैग़म्बर बनाकर भेजा है। उन्होंने बंदों को एक अल्लह की तरफ़ बुलाया। उनकी यह तौहीद वाली बात उनके कानों तक भी पहुँची और दिल में उतरती चली गई। उनके दिल ने गवाही दी कि बातें तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सच्ची करते हैं मगर मेरा शौहर तो

खुद खुदाई का दावा करता है। कई दिन इसी सोच-विचार में गुज़र गए कि अब मैं क्या करूं। दिल ने गवाही दी कि परवरदिगार तो अल्लाह है। परवरदिगार तो वही जो ज़िंदगी भी देता है और मौत भी जबकि मेरा ख़ाविन्द तो मेरी खुशामद में लगा रहता है और मेरी खुशी चाहता है, भला यह कैसे खुदा हो सकता है। मगर क्योंकि औरत थीं इसलिए दूसरी तरफ़ ख़ौफ़ भी आता था कि अगर मैंने कोई बात की तो मेरी ये सब सहूलतें छिन जाएंगी और मुझ पर मुसीबतें पड़ जाएंगी। लेकिन दिल ने गवाही दी, आसिया! यह दुनिया की सहूलतें थोड़ी हैं ये सब वक़्ती बातें हैं। आख़िरत की ऐश असल चीज़ है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जो पैग़ाम लेकर आए हैं वही बातें सच्ची हैं। इसलिए चोरी-छिपे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त पर ईमान ले आयीं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी अपने ईमान के बारे में बता दिया।

अब दिल में अल्लाह की मुहब्बत आ गई। सोच का अंदाज़ बदल गया। अब रहती तो फ़िरऔन के पास थीं मगर दिल फ़िरऔन से दूर हो गया। फ़िरऔन से नफ़रत होने लग गई। महल में रहती थीं मगर दिल में ईमान रच-बस चुका था। फ़िरऔन को शुरू में तो पता न चला। आख़िर एक ऐसा वक़्त आया कि फ़िरऔन को उनकी बातों के अंदाज़ से पता चल गया क्योंकि जब फ़िरऔन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बातें करता तो यह बड़े ग़ौर से सुनती थीं। जब वह अल्लाह तआला की बातें करता था उस वक़्त उनके तास्सुरात बदल जाते थे।

एक दम भी मुहब्बत छिप न सकी
जब तेरा किसी ने नाम लिया

जब फ़िरऔन उनके सामने अल्लाह का नाम लेता था तो वह फड़क उठती थीं और अल्लाह तआला की मुहब्बत का समुन्दर दिल में ठाठें मारने लगता। लिहाज़ा फ़िरऔन पर बात खुल गई कि मेरी बीवी तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ला चुकी है। उसने बड़ा समझाया कि तू ऐसा न कर मैं तुझे प्यार करता हूँ और तुझे हर क़िस्म की सहूलत हासिल है। कहने लगी कि नहीं हक़ीक़त तो वही है जो मेरे दिल में उतर चुकी है। मैं उसको बिल्कुल नहीं छोड़ सकती। इस तरह बातें होती रहीं और वक़्त गुज़रता गया।

एक दिन जब फ़िरऔन बड़ी मुहब्बत दिखा रहा था तो उन्होंने अपने शौहर को समझाया कि जब आप मुझसे इतनी मुहब्बत करते हैं तो मेरी बात मान लें कि आप भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आएं। फ़िरऔन का दिल उस वक़्त मोम हो गया। कहने लगा, मैं जाता हूँ उनके पास और ईमान ले आता हूँ। लिहाज़ा वायदा करके चल पड़ा। अभी रास्ते में ही था कि हामान मिल गया। वह उसका वज़ीर था और बड़ा सलाहकार था। फ़िरऔन ने कहा कि मैंने दिल में इरादा कर लिया है कि मैं मूसा अलैहिस्सलाम के परवरदिगार पर ईमान ले आऊँ। हामान यह सुनकर कहने लगा, तोबा! तोबा! गुलाम का ख़ादिम बनने से तो ज़्यादा बेहतर है क आदमी आगे जाकर जहन्नम के अज़ाब में जाकर जल मरे। फ़िरऔन पर उसकी बात असर कर गई। लिहाज़ा फ़िरऔन वहीं से वापस लौट गया। कहने लगा, हाँ मैं गुलाम का गुलाम नहीं बन सकता। इस तरह ईमान लाने से इंकार कर दिया। जब वह इंकारी हो गया तो हज़रत आसिया ने उसको

बुरा-भला कहा कि तू अपने वायदे से फिर गया। जब दोनों मियाँ-बीवी में बातें हुईं तो फ़िरऔन ग़ुस्से में आकर कहने लगा कि मैं तुझे मज़ा चखा दूंगा। वह कहने लगीं फिर तू जो कर सकता है कर ले। लिहाज़ा सारी सहूलतों पर लात मार दी और सारी नेमतों को पीछे फेंक दिया। कहने लगीं तू मुझे महल से तो निकाल सकता है मगर मेरे दिल से ईमान नहीं निकाल सकता।

फ़िरऔन ने पहले तो डराया धमकाया। बाद में फिर उसके लिए भी नाक का मस्अला बन गया। कहने लगा मैं तुझे अज़ाब दूंगा। कहने लगीं तू जो कर सकता है कर ले, मैं तेरा अज़ाब सहने के लिए तैयार हूँ। इसलिए उसने लोगों को बुलवाया। वक़्त की मलिका, परी चेहरा, नाज़ुक बदन को घसीटकर फ़र्श पर लिटा दिया गया। कहाँ गयीं वे नेमतें? कहाँ गए वह महल? कहाँ गए वह नरम बिस्तर? कहाँ गयीं वे हज़ारों बांदियाँ जो उनके इशारे के पीछे भागती फिरती थीं। आज यह अकेली अल्लाह की बंदी फ़र्श के ऊपर घसीटी जा रही है। बाल पकड़े हुए हैं, कान से पकड़कर घसीटी जा रही है, जिस्म ज़ख़्मों से चूर हो चुका है मगर फिर भी अपनी बात पर डटी रहीं। जब फ़िऔन ने देखा कि छोटी-मोटी सज़ा से यह नहीं बदली तो उसने कहा कि मैं तुम्हें ज़मीन पर लिटाकर मेख़ें ठोंक दूंगा। कहने लगीं तू जो कर सकता है कर ले। उनको लिटा दिया गया और उनके हाथ को ज़मीन के ऊपर रखकर बीच में लोहे की कील ठोंक दी गई। तकलीफ़ हो रही थी मगर जानती थीं कि यह तकलीफ़ अल्लाह की ख़ातिर है। फिर दूसरे हाथ को इसी तरह ज़मीन पर रखकर कील ठोंकी गई। फिर पाँव में इसी तरह ज़मीन पर रखकर कील ठोकी गयीं। फ़िरऔन

ने कहा तुम्हारे जिस्म के कपड़े उतार लूंगा और फिर तुम्हारी खाल उतार दूंगा। कहने लगीं तुम जो कर सकते हो कर लो मगर मैं अपने ईमान से बाज़ नहीं आऊँगी। लिहाज़ा उनके जिस्म से जीते जागते खाल उतारना शुरू कर दी। ज़रा सोचिए तो सही बकरे की खाल उतारी जा रही हो तो नरम दिल का आदमी उसको भी देखकर परेशान हो रहा होता है। वह तो औरत ज़ात थीं। ज़मीन पर लेटी हुई थीं। हाथ-पाँव हिला नहीं सकती थीं। सिर एक जगह पड़ा हुआ था और उनके जिस्म से चाक़ुओं और रेज़र के ज़रिए उनकी खाल को जुदा किया जा रहा था। ज़ख़्म लगाए जा रहे थे। तकलीफ़ों पर तकलीफ़ें उठा रही थीं मगर समझी थीं कि यह सब कुछ मेरे परवरदिगार की तरफ़ से है।

इस परेशानी की हालत में उन्होंने परवरदिगार को पुकारा। दुनिया का तो जो साथी था वह अब दुश्मन बन चुका था। अब तो असल सहारा बाक़ी रह गया था। उसी ज़ात को आवाज़ दी ﴿رب ابن لی عندك بيتا فى الجنة﴾ ऐ अल्लाह! मुझे महल से निकाला जा रहा है लेकिन तू मुझे अपने पास महल अता फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! यहाँ फ़िरऔन ने तो अपने से दूर कर दिया है मगर मैं तो तेरा साथ चाहती हूँ, मुझे फ़िरऔन का साथ नहीं चाहिए। इसलिए जब बात करने लगीं तो यह न कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे महल अता कर दे बल्कि जन्नत से पहले 'बैतन' का लफ़्ज़ कहा। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि वह महल तो चाहती थीं लेकिन अल्लाह के पास चाहती थीं, अपने दिलदार के पास चाहती थीं, अपने असली महबूब के पास चाहती थीं। और फिर कहा है ﴿ونجنى من فرعون وعمله﴾ और मुझे फ़िरऔन और उसके अमलों से

निजात अता फ़रमा। कितनी समझदार थीं कि यह न कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे फ़िरऔन से निजात देना क्योंकि अगर फ़िरऔन से निजात मिल भी जाती तो किसी और के पास चली जातीं और वह भी फ़िरऔन की तरह होता। इसलिए दो दुआएं मांगी। सुब्हानअल्लाह कैसी कामिल दुआ मांगी।

एक सहाबी की मुहब्बत का वाक़िआ

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु बकरियाँ चराने वाले जब कुछ दिनों बाद मदीना तैय्यबा आते तो आकर पूछते कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने और क्या बातें बताई हैं या क्या आयतें उतरी हैं? एक दफ़ा वापस आकर पूछा तो पता चला कि एक आयत उतरी है जिसमें अल्लाह तआला ने क़सम खाकर कहा, मैं ही तुम्हारा परवरदिगार हूँ। आसमान और ज़मीन के परवरदिगार की क़सम खाकर बात कही। जब उन सहाबी ने सुना तो गुस्सा हो गए और कहने लगे, वह कौन है जिसको यक़ीन दिलाने के लिए मेरे अल्लाह को क़सम खानी पड़ी? क्या ही दिल में मुहब्बत थी! सुब्हानअल्लाह।

दिल किसके लिए है?

लेकिन आज किसी दिल में माल की मुहब्बत है, किसी दिल में औरत की मुहब्बत है, किसी के दिल में शहवतों की मुहब्बत है। क्या यह दिल इसीलिए दिया गया है? हर्गिज़ नहीं। बारी तआला का इर्शाद है ﴿ما جعل لرجل من قلبين في جوفه﴾ हमने किसी इंसान के सीने में दो दिल नहीं बनाए कि एक तो रहमान को दे दे और

दूसरा नफ़्स व शैतान को दे दे बल्कि दिल एक है और एक ही के लिए है।

मुहब्बत इलाही अल्लाह की नज़र में

बनी इस्राईल में से एक सादा सा आदमी बैठा बातें कर रहा है कि एक अल्लाह! मैंने सुना है कि तेरी बीवी नहीं, तेरे बच्चे नहीं, कभी मेरे पास आता तो मैं तेरी ख़िदमत करता, मैं तेरे कपड़े धोता, तुझे खाना देता। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उधर से गुज़रे। फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के बंदे! यह तो अल्लाह की शान में गुस्ताख़ी है। वह सादा आदमी था, डर गया, काँप गया। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को उसका डरना, काँपना इतना पसंद अया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ 'वही' फ़रमा दी जिसको किसी शायद ने यूँ कहा है—

तू बराए वस्ल करदन आमदी
ने बराए फ़स्ल करदन आमदी

ऐ नबी! मैंने तुझे जोड़ने के लिए भेजा था तोड़ने के लिए नहीं भेजा था। क्यों? इसलिए कि चाहे ज़ाहिर में बातों का मतलब ठीक नहीं था मगर मुहब्बत तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से थी।

सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अल्लाह तआला से शदीद मुहब्बत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से इतनी मुहब्बत की जाए कि दुनिया ही में इंसान को बशारतें मिल जाएं। जब सैय्यदना ख़लील

अलैहिस्सलाम को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने 'ख़लील' (दोस्त) का लक़ब दिया तो फ़रिश्तों ने पूछा या अल्लाह! क्या उनको आपसे इतनी मुहब्बत है कि आपने ख़लील का लक़ब दे दिया? अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया, अगर तुम्हें शक है तो जाकर इम्तिहान ले लो। लिहाज़ा एक फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में सैय्यदना इब्राहीम के क़रीब आया। उस वक़्त आप जंगल में बकरियाँ चरा रहे थे। उस फ़रिश्ते ने बुलंद आवाज़ से ये कलिमात कहे—

سبحان ذی الملك والملكوت سبحان ذی العزة و العظمة والهيبة والقدرة والكبرياء والجبروت. سبحان الملك الحی الذی لا ينام ولا يموت. سبوح قدوس ربنا ورب الملئكة والروح. اللهم اجرنا من النار يا مجير يا مجير.

जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह आवाज़ सुनी तो बड़ा मज़ा आया। उस तरफ़ देखा। एक आदमी नज़र आया। आपने फ़रमाया कि ज़रा यही कलिमात दोबारा सुना दीजिए। वह कहने लगा कि क्या बदला दोगे? फ़रमाया, आधी बकरियाँ ले लेना। उसने दोबारा यही कलिमात कहे। इस बार पहले से भी ज़्यादा मज़ा आया। लिहाज़ा दोबारा मुतालबा किया कि एक बार फिर सुना दीजिए। वह कहने लगा, अब क्या दोगे? फ़रमाया बाक़ी बकरियाँ भी ले लेना। उसने फिर यही कलिमात कहे। इस दफ़ा और ज़्यादा मज़ा और लुत्फ़ आया। आप से रहा न गया। फ़रमाया एक बार फिर सुनाओ। वह कहने लगा, अब आपके पास बकरियाँ भी नहीं हैं, मुझे क्या दोगे? आपने फ़रमाया कि तुम्हें ये बकरियाँ चराने के लिए चरवाहे की ज़रूरत होगी। लिहाज़ा मुझे चरवाहे के तौर पर अपने पास नौकर रख लेना। यह सुनकर वह फ़रिश्ता बोला कि मैं तो एक फ़रिश्ता हूँ और इम्तिहान लेने के लिए तुम्हारे पास आया

हूँ। आप इम्तिहान में कामयाब हो गए हैं। आप वाक़ई अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से इतनी मुहब्बत है कि 'ख़लील' का लक़ब ज़रूर मिलना चाहिए था। *(अल्लाहु अकबर)*

मुहब्बत का मैयार

जी हाँ! जिनको अल्लाह तआला से मुहब्बत होती है अल्लाह तआला को उनसे मुहब्बत होती है। मगर अल्लाह तआला से मुहब्बत कैसी हो? ﴿والذين آمنوا اشد حبا لله﴾ ईमान वालों को अल्लाह से शदीद मुहब्बत होती है। यहाँ सिर्फ़ यह नहीं कहा कि उनको अल्लाह तआला से मुहब्बत होती है बल्कि मुहब्बत का एक पैमाना बयान फ़रमा दिया कि शदीद मुहब्बत होती है—

मुहब्बत मुहब्बत तो कहते हैं लेकिन
मुहब्बत नहीं जिसमें शिद्दत नहीं है

मुहब्बत के अंदाज़ हैं सब पुराने
ख़बरदार हो इसमें जिद्दत नहीं है

मतलब यह कि मुहब्बत तक़ाज़ा करती है कि उसमें शिद्दत होनी चाहिए।

पिलछे बुज़ुर्गों का मुहब्बते इलाही में डूबना

यह शदीद मुहब्बत इंसान की इबादतों में रंग भर देती है, यह शदीद मुहब्बत उसको अकेले में लज़्ज़त अता करती है, यह शदीद मुहब्बत उसको चुप का मज़ा दे दिया करती है। हम चुप का मज़ा क्या जानें? हम तो हर वक़्त टर-टर करने वाले, महफ़िलों में हंसने खेलने वाले हैं। हमें क्या पता है की रात की तन्हाईयों का मज़ा

क्या होता है। हमें क्या पता कि ख़ालिक़ से जब इंसान तार जोड़कर बैठता है तो उस वक़्त की लज़्ज़तें क्या होती हैं। ज़रा उनसे पूछिए जिनकी तार जुड़ जाती है। उनके दिल व दिमाग़ से ग़ैर का ख़्याल भी निकल जाता है।

एक बुज़ुर्ग के बारे में लिखा है कि दो साल तक उनका ख़ादिम उनके पास रहा लेकिन हज़रत को उसका नाम ही याद न हुआ। जब वह सामने से गुज़रता तो पूछते, अरे मियाँ! तुम कौन हो? वह कहते, हज़रत मैं आपका फ़लां ख़ादिम हूँ। फ़रमाते अच्छा! अच्छा। फिर कुछ देर बाद सामने से गुज़रता तो फिर पूछते, अरे मियाँ तुम कौन हो? वह कहते हज़रत! मैं आपका फ़लां ख़ादिम हूँ। फिर फ़रमाते अच्छा! अच्छा! सुब्हानअल्लाह। एक नाम दिल में ऐसा उतर चुका था कि दो साल तक अपने ख़ादिम का नाम पूछते रहे मगर उसका नाम दिल में नहीं समा सका।

पिछले बुज़ुर्गों में से कुछ अज़ान देने के लिए मीनार पर चढ़ते, अल्लाहु अकबर कहते और अल्लाह की जलालते शान से रौब में होकर उसी वक़्त गिरते और अपनी जान दे देते। आज अल्लाहु अकबर की आवाज़ हम भी सुनते हैं लेकिन हमारे दिलों पर उसका कोई असर नहीं होता। क्यों? इसलिए कि मुहब्बत का वह जज़्बा जागा नहीं है, वह आग अंदर अभी लगी नहीं है। काश! वह आग लग जाए।

जिनकी दुआ क़ुबूल हो उन लोगों की पहचान

अल्लाह का नाम दिल में कब उतरता है? जब सच अंदर उतर जाए, जब इंसान को सच्ची और सच्ची ज़िंदगी नसीब हो जाए।

फिर ज़बान से बोल निकलते हैं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ क़ुबूल हो जाते हैं। एक बात लोहे पर लकीर की तरह है कि जिस इंसान का पेट हराम से ख़ाली होगा और उसका दिल ग़ैर से ख़ाली होगा तो उस आदमी के उठे हुए हाथों को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कभी ख़ाली नहीं लौटाएंगे। यह उन लोगों की पहचान है जिनकी दुआ क़ुबूल होती हैं।

इताअत की जड़

जब मुहब्बत होती है तो इताअत करना आसान हो जाती है। ﴿ان المحب لمن يحب مطيع .﴾ जिससे मुहब्बत करता हो वह उसका पाबंद और फ़रमांबरदार होता है। अगर इंसान अल्लाह तआला से मुहब्बत करेगा तो उसके लिए तहज्जुद के लिए उठना बड़ा आसान हो जाता है। देखें क्योंकि दिल में माल की मुहब्बत होती है उसके लिए अगर तहज्जुद के वक़्त कोई डाकिया आए और वह कहे कि मैं मनीआर्डर लेकर आया हूँ और अभी देना है और वापस भी जाना है। उस वक़्त जितनी भी नींद आई हुई होगी तो वह बंदा उठ बैठेगा और मनीआर्डर वसूल कर लेगा। अगर इंसान इस माल को हासिल करने के लिए अपनी नींद क़ुर्बान कर सकता है तो अपने परवरदिगार को राज़ी करने के लिए उस वक़्त क्यों नहीं उठ सकता। जब मुहब्बत दिल में होगी तो रातों को उठने के लिए असबाब नहीं अपनाने पड़ेंगे। अपने आप आँख खुल जाया करेगी। फिर उस वक़्त इंसान दुआओं के क़ाफ़िले में शिरकत के लिए तड़पा करेगा। फिर यह कैफ़ियत होगी कि—

تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم

خوفا و طمعا ومما رزقنهم ينفقون○

उनके पहलू (करवट) ख़्वाबगाहों (बिस्तर) से अलग रहते हैं और अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं और हमने जो रिज़्क़ दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

ख़ानक़ाह फ़ज़लिया में आशिक़ों का मजमा

हमारे हज़रत रह० फ़रमाया करते थे कि ख़ानक़ाह फ़ज़लिया मिस्कीनपूर शरीफ़ में रात को सब सालिकीन एक जगह पर सो जाया करते थे। जब सो जाते और कुछ देर गुज़रती तो उनमें से किसी एक पर जज़्ब तारी हो जाता और वह ऊँची आवाज़ से अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! कहना शुरू कर देता। आवाज़ सुनकर सबकी आँख खुल जाती। थोड़ी देर बाद जब उसकी तबियत ज़रा सही हो जाती तो सो जाते। अभी सोते ही थे किसी और को जज़्ब हो जाता और वह अल्लाह! अल्लाह! कहना शुरू कर देता। सारी रात यूँही साते जागते गुज़र जाती। यह आशिक़ों का मजमा था।

मुहब्बत के ग़लबे में दो बूढ़ों की लड़ाई

मक़ामाते ज़वारिया में एक अजीब बात लिखी हुई है कि एक बार ख़ानक़ाह फ़ज़लिया में दो बूढ़े आदमी आपस में उलझना शुरू हो गए। देखने वाले बड़े हैरान हुए कि ये दोनों ज़ाहिर में बड़े नेक और मुत्तक़ी नज़र आते हैं। इत्तिबाए सुन्नत भी उनके जिस्म पर बिल्कुल ज़ाहिर है मगर एक दूसरे से लड़ रहे हैं। एक उसको थप्पड़ लगाता है और दूसरा उसको लगाता है। वह इसे खींचता है और यह उसे खींचता है और कुछ बातें भी कर रहे हैं। एक साहब

क़रीब हुए कि आख़िर बात क्या है? जब क़रीब हुए तो क्या देखते हैं कि वे दोनों अल्लाह की मुहब्बत में इतने मस्त थे कि आपस में बैठे हुए उनमें से एक ने कह दिया, "अल्लाह मैडा ऐ" यानी अल्लाह मेरा है। जब दूसरे ने सुना तो वह उलझने लगा कि नहीं, "अल्लाह मैडा ऐ।" वह इसे मारता है और कहता है कि अल्लाह मैडा है और यह उसे मारता है और कहता है अल्लाह मैडा ऐ। मुहब्बत की इतनी ज़्यादती थी कि दोनों इस बात पर उलझ रहे थे। *(अल्लाहु अकबर)*

हज़रत शिबली रह० पर मुहब्बते इलाही का रंग

हज़रत शिबली रह० के बारे में सुना है कि जब आपके सामने कोई अल्लाह का नाम लेता था तो आप अपनी जेब में हाथ डालते, शीरनी निकालते और उस बंदे के मुँह में डाल देते और फ़रमाते कि जिस मुँह से मेरे महबूब का नाम निकले मैं उस मुँह को शीरनी से क्यों न भर दूँ।

महबूब से मुलाक़ात का लुत्फ़

मुहब्बत का फ़र्क़ बस इतना ही है कि एक मज़दूर को ले आइए और उससे कहिए कि पत्थर तोड़ दो, मज़दूरी देंगे। वह पत्थर पर चोट लगाएगा मगर चोट में जज़्ब और कैफ़ियतें शामिल नहीं होंगी क्योंकि उसने मज़दूरी लेनी है। वह चोट तो लगा रहा होगा मगर बेदिली के साथ बोझ समझकर। एक चोट फ़रहाद ने भी लगाई थी। उसके महबूब ने कहा कि उसमें से दूध की नहर निकालिए। वह भी कुदाल की चोट लगाता था। किसी शायर ने

उसकी इस कैफ़ियत को यूँ बयान किया है—

हर ज़र्ब तैशा साग़र कैफ़ व विसाल दोस्त
फ़रहाद में जो बात है वह मज़दूर में नहीं

वह तैशे की जो चोट लगाता था उसे हर चोट पर दोस्त के मिलाप की मज़ा नसीब होता था। अब हम नमाज़ें पढ़ते हैं मज़दूरों वाली और जब दिल में मुहब्बत पैदा होगी तो फिर फ़रहाद वाली नमाज़ें पढ़ेंगे।

मजनूँ की नमाज़ी को फटकार

एक दफ़ा एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था। मजनूँ लैला की मुहब्बत में ग़र्क़ था। वह इसी मदहोशी में नमाज़ी के सामने से गुज़र गया। उस नमाज़ी ने नमाज़ पूरी करके मजनूँ को पकड़ लिया। कहने लगा तूने मेरी नमाज़ ख़राब कर दी कि मेरे सामने से गुज़र गया, तुझे नज़र नहीं आता? उसने कहा कि ख़ुदा के बंदे! मैं मख़्लूक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार हूँ मगर वह मुहब्बत इतनी हावी हुई कि मुझे पता न चला कि मैं किसी के सामने से गुज़र रहा हूँ और तू ख़ालिक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार है कि नमाज़ पढ़ रहा था। तुझे अपने सामने से जाने वालों का पता चल रहा था।

मुहब्बत वालों की नमाज़े

इसके ख़िलाफ़ पिछले बुज़ुर्ग अपनी नमाज़ों पर मेहनत करते थे। इसीलिए जब भी ज़मीन पर उनका सिर पड़ता था तो अल्लाह तआला उनके हक़ में फ़ैसले फ़रमा देते थे। कुछ ऐसे लोग भी थे कि जब अज़ान कहते थे तो पहाड़ भी पारे की तरह काँपते थे।

शायर ने कहा—

सुनी न मिस्र व फ़लस्तीन में अज़ां मैंने
दिया था जिसने पहाड़ों को रेश सेमाब

सुब्हानअल्लाह! कितने खुलूस से सज्दे करते थे। वह जानते थे कि वही अमल अल्लाह तआला हाँ क़ाबिले क़ुबूल है जो इंसान सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करता है। वे जानते थे कि ﴿لا صلوة الا بحضور القلب.﴾ दिल के ध्यान के बग़ैर नमाज़ नहीं होती। शायर ने आगे आज के नमाज़ियों की हालत भी बयान कर दी, फ़रमाया—

वह सज्दाए रूह ज़मीं जिससे कांप जाती थी
उसी को आज तरसते हैं मिंबर व मेहराब

महबूब से मिलने के बहाने

मेरे दोस्तो! जिनके दिल में मुहब्बते इलाही होती है वे महबूब से मिलने के बहाने ढूंढते हैं। यही वजह है कि अल्लाह वाले पाँच नमाज़ें पढ़ते हैं तो मगर छकते नहीं, जी नहीं भरता। फिर जी चाहता है कि महबूब से बातचीत करें। महबूब का दीदार करें। कभी इश्राक़ के नफ़्लों के बहाने बनाते हैं, कभी चाश्त की नफ़्लों के बहाने बनाते हैं, कभी अव्वाबीन को बहाना बनाते हैं, कभी तहज्जुद की नफ़्लों का बहाना बनाते हैं। कभी वुज़ू करके फ़ौरन दो रकूअत की नियत बांधकर खड़े हो जाते हैं। कभी मस्जिद में दाख़िल होकर तहय्युतुल-मस्जिद (मस्जिद में दाख़िल होने की नमाज़) की नियत से दो रकूअत नफ़्ल की नियत कर लेते हैं। ये सब बहाने हैं, हक़ीक़त में तो वे परवरदिगार से बातचीत चाहते

हैं।

हम बाज़ सालिकीन दोस्तों को देखते हैं कि फ़र्ज़ और सुन्नत पढ़ते हैं और नफ़्लों को नफ़्ल समझकर छोड़ देते हैं। नहीं! मेरे दोस्तो! इतनी बड़ी बात है कि क़यामत के दिन अगर फ़र्ज़ों में कमी हुई तो उसके बदले नफ़्लों को शामिल करके क़ुबूल कर लिया जाएगा और इससे भी बढ़कर बात यह है कि मालूम नहीं किस ज़मीन पर किस वक़्त के किए हुए सज्दे पर परवरदिगार की ख़ास नज़र हो और वह सज्दा क़ुबूल हो कर लिया जाए। लिहाज़ा नफ़्लों को जिसकी वक़्त की भी शरिअत के मुताबिक हों उनको ज़रूर अदा कर लिया जाए।

मुशाहिदाए हक़ का राज़

फ़र्ज़ नमाज़ों का पढ़ना तो फिर उससे बहुत शान वाली बात है। उसको तो बहुत पाबंदी से पढ़ना चाहिए क्योंकि उस वक़्त तो महबूब की तरफ़ से पैग़ाम आता है। ﴿حی الصلوة حی الفلاح﴾ आ जाओ नमाज़ की तरफ़, आ जाओ फ़लाह की तरफ़। क्या मतलब? इसका मतलब यह है कि तुम मुझे दुनिया में ढूंढते फिरते हो। आओ नमाज़ पढ़ लो तुम्हें मेरा मुशाहिदा नसीब हो जाएगा और फिर उसके सदक़े तुम्हें दुनिया की कामयाबी नसीब हो जाएगी।

सच्चे सूफ़ी की पहचान

मेरे दोस्तो! मुहब्बते इलाही का जज़्बा जिन हज़रात के दिलों में होता है तो फिर उनके दिल में दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा

अल्लाह तआला की मुहब्बत होती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत उन तमाम मुहब्बतों पर हावी होती है और यही कामिल मोमिन की पहचान है। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

قل ان كان اباؤكم وابناؤكم واخوانكم وازواجكم وعشيرتكم واموال ن اقترفتموها وتجارة تخشون كسادها و مسكن ترضونها احب اليكم من الله و رسوله وجهاد فى سبيله فتربصوا حتى ياتى الله بامره.

आप फ़रमा दीजिए अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और बीवियाँ और बिरादरी और माल जो तुमने कमाए हैं और तिजारत जिसके बंद होने से डरते हो और तुम्हारे मकानात जिनको पसंद करते हो तुमको अल्लाह और रसूल और उसके रास्ते में जिहाद करने से ज़्यादा पसन्द हैं तो इंतिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए।

यही वजह है कि मुहब्बत करने वालों को आमाल आसान होते हैं। वे नमाज़ों के लिए वक़्त से पहले तैयार होते हैं। ज़ोहर की नमाज़ पढ़ते हों तो उन्हें अस्र का इंतिज़ार होता है, अस्र की नमाज़ पढ़ते हैं तो फिर उन्हें मग़रिब का इंतिज़ार होता है और जब रात को सोते हैं तो वे इस नियत से सोते हैं कि तहज्जुद के लिए उठेंगे।

इसलिए इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० अपने ख़तों में फ़रमाते हैं कि तसव्वुफ़ तड़पने का दूसरा नाम है। तड़पना न रहा तसव्वुफ़ ख़त्म हो गया। सूफ़ी है ही वही जो अल्लाह की मुहब्बत में तड़पता हो। शौक़ में, इश्तियाक़ में, उसकी बंदगी करने में, आमाल करने में हर वक़्त बेताब रहे बल्कि एक जगह फ़रमाया

कि सूफ़ी वह है जिसकी कैफ़ियत ऐसी हो कि जैसी क़ुरआन मजीद में बताई गई है। फ़रमाया ﴿حتی اذا ضاقت علیهم الارض بما رحبت﴾ हत्ताकि ज़मीन अपनी फ़राख़ी के बावजूद उन पर तंग हो गई। ﴿وضاقت علیهم انفسهم﴾ और उनकी अपनी जानें तंग हो गयीं। फिर फ़रमाया ﴿وظنوا﴾ और उनका यह गुमान हो गया ﴿ان لا ملجا من الله الا الیه.﴾ कि अल्लाह के सिवा अब उनका मलजा और मावा नहीं है। फ़रमाया कि जिस बंदे में यह कैफ़ियत मौजूद है वह तसव्वुफ़ में दाख़िल है और जिसमें यह कैफ़ियत नहीं उसे तसव्वुफ़ में भी दाख़िला नसीब हुआ।

मुहब्बते इलाही में सरमस्त नौजवान के अशूआर

जिनमें यह कैफ़ियत पैदा हो जाती है वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से राज़ व नियाज़ की अजीब बातें करते हैं। हज़रत अली हिजौरी रह० कश्फ़ुल महजूब में फ़रमाते हैं कि एक आदमी अजीब-अजीब अश'आर पढ़ता हुआ जा रहा था जिनका तर्जुमा यह बनेगा कि :

तर्जुमा : अल्लाह की क़सम! कभी सूरज नहीं निकला और कभी छिपा नहीं मगर यह कि तू मेरे दिल में और मेरे ख़्याल में होता है। और मैं किसी मज्लिस में नहीं बैठा मगर यह कि उस मज्लिस में तेरा ही तो ज़िक्र होता रहा। और मैंने कभी तेरा ज़िक्र नहीं किया ख़ुशी और ग़म की हालत में मगर यह कि तेरी मुहब्बत मेरे सांसों में लिपटी हुई होती है। और मैंने कभी पानी नहीं पिया मगर इस हाल में कि पानी के प्याले में भी तेरा ही तसव्वुर कर रहा होता हूँ और ऐ

महबूब! अगर मुझे इजाज़त होती तेरी ज़ियारत को आऊँ तो मैं अपने गालों और सिर के बल चलता हुआ तेरी मुलाक़ात को पहुँच जाता।

इश्क़े इलाही का अजीब इज़्हार

कहते हैं कि मजनूं ने हर चीज़ का नाम लैला रख दिया था और ज़ुलेख़ा ने हर चीज़ का नाम यूसुफ़ रख दिया था। इसी तरह जिनके दिलों में मुहब्बते इलाही का जज़्बा होता है वे भी हर बात के सामने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम लेते हैं।

ख़्वाजा फ़रीद रह० के मुहब्बते के अश'आर

हज़रत ख़्वाजा ग़ुलाम फ़रीद रह० कोट मिठ्ठन वाले मुहब्बते इलाही में पंजाबी में कुछ शे'र कहते हैं। वह फ़रमाते हैं–

मैडा इश्क़ वी तूं मैडा यार वी तूं
मैडा दीन वी तूं ईमान वी तूं

मैडा जिस्म वी तूं मैडी रूह वी तूं
मैडा क़ल्ब वी तूं जंद जान वी तूं

मैडा काबा क़िब्ला मस्जिद मिंबर
मस्हफ़ ते क़ुरआन वी तूं

मैडे फ़र्ज़ फ़रीज़े हज ज़कातां
मैडी सोम सलात अज़ान वी तूं

मैडा ज़ोहद इबादत ताअत तक़्वा
इल्म वी तूं इरफ़ान वी तूं

मैडा ज़िक्र वी तूं मैडा फ़िक्र वी तूं
मैडा ज़ौक़ वी तूं वज्दान वी तूं

मैडी आस उम्मीद ते खटिया विटया
मैडा तकिया मान तुरान वी तूं

मैडा धर्म वी तूं मैडा भ्रम वी तूं
मैडा शर्म वी तूं मैडी शान वी तूं

मैडी ख़ुशियाँ दा असबात वी तूं
मैडे सोलां दा सामान वी तूं

मैडी मेहंदी काजल मसाग वी तूं
मैडी सुर्ख़ी बीड़ा पान वी तूं

मैडा हुस्न ते भाग सुहाग वी तूं
मैडा बख़्त ते नाम निशान वी तूं

जे यार फ़रीद क़ुबूल करे
सरकार वी तूं सुल्तान वी तूं

मैडा इश्क़ वी तूं मडा यार वी तूं
मैडा दीन वी तूं ईमान वी तूं

एक जगह इर्शाद फ़रमाते हैं–

अलिफ़ हक़्क़ो हम बस वे मियां जी
बे ते दी मैंकू लोड़ न काई

अलिफ़ केतम बे वस वे मियाँ जी
दिल विच चाहत हो न काई

अलिफ़ लीम दिल खसवे मियाँ जी
ई शाहत साहत वे मियाँ वे मियाँ जी

जिंदया मर्दियाँ यार वी रहसां
विसरी होर हवस वे मियाँ जी

रांझन मैडा ते मैं रांझन दी
रोज़ अज़ल दी हक़ वे मियाँ जी

इश्क़ों मोल फ़रीद न फिर सूं
रोज़ नवीं हम चिस दे मियाँ जी

सुब्हानअल्लाह! यह बात कौन कर सकता है? जिसका दिल मुहब्बत इलाही से भरा हुआ हो। यह बेइख़्तियारी की बातें होती हैं। यह अक़्ल की बातें नहीं बल्कि इश्क़ की बातें होती हैं। उन्होंने अपने दिल को खोलकर काग़ज़ पर रख दिया था।

मुहब्बत इलाही पर लाख रुपए का शे'र

ख़्वाजा अब्दुल अज़ीज़ मज्ज़ूब रह० हज़रत अक़्दस थानवी रह० के ख़लीफ़ा मजाज़ थे। उन्होंने एक शे'र लिखा और अपने पीर मुर्शिद को दिखाया। हज़रत थानवी रह० ने शे'र सुनकर फ़रमाया कि अगर मैं मालदार होता तो एक लाख रुपया ईनाम देता। यह उस ज़माने की बात है जब स्कूल जाने के लिए एक पैसा भी नहीं मिलता था। वह शे'र क्या था? बड़ा छोटा सा, सादा, दिल में उतर जाने वाला, अजीब बात कही मगर दिल हिकायत बयान कर दी, फ़रमाया–

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

हज़रत चिल्लासी रह० के मुहब्बत के अश'आर

हज़रत चिल्लासी रह० ने तो यहाँ तक कह दिया–

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! हम तेरे इश्क़ के तालिब हैं और वाइज़ मुझे तेरे इश्क़ का ताना देता है। तू ज़रा इस वाइज़ के दिल पर भी नज़र डाल दे। उसे भी मेरी तरह दीवाना बना दे और उसके दिमाग़ से तकब्बुर को दूर कर दे। चिल्लासी जुदाई में सो जाना हराम है। लिहाज़ा जुदाई की यह रात तो उसकी याद में रोते हुए गुज़ार दे, सुब्हानअल्लाह।

आशिक का काम

याद रखें कि आशिक़ जिस हाल में भी हो वह महबूब की मुहब्बत में ठंडी आहें भरता है और रोता रहता है। किसी ने क्या ही ख़ूब बात कही–

आशिक़ दा कम रोना धोना ते बिन रोन नहीं मंज़ूरी
दिल रोवे चाहे अंखियाँ रोवन ते विच इश्क दे रोवन मंज़ूरी
कोई ते रावे दीद दी ख़ातिर ते कोई रौंदे विच हुज़ूरी
आज़म इश्क़ विच रोना पैंदा भावें वस्ल हुए भावें दूरी

कुछ दोस्त सोचते हैं होंगे कि यह भी दीवाना और मजनूं आदमी है कि अल्लाह की मुहब्बत और इश्क़ की बातें कर बैठता है। हाँ भई ठीक है आपने दुनिया की मुहब्बत देखी होगी। काश! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत की शीरी भी चख लेते।

ख़ैर न कर सका मुझे जज़्बाए दानिश व फ़िरंग
सुर्मा है मेरी आँख का ख़ाक मदीना हो अगर

आज मुहब्बते इलाही का जज़्बा क्यों कम हो गया है? इसकी वजह यह है कि नफ़्स की ख़्वाहिशात ग़ालिब आ चुकी हैं। इंसान की ख़्वाहिशें यूँ समझिए जैसे एक बल्ब जल रहा हो और उसके ऊपर टोकरी रख दें तो कमरे में अंधेरा हो जाएगा। ग़ाफ़िल मोमिन की मिसाल यही हे कि उसका बल्ब तो रोशन है क्योंकि उसने कलिमा पढ़ लिया है मगर उसके ऊपर ग़फ़लत की टोकरी आ गई। इसीलिए अब इस बेचारे के दिल में अंधेरा है। अगर यह ग़फ़लत की इस टोकरी को दूर हटा देगा तो यह दिल का बल्ब उसी वक़्त जगमगा उठेगा।

मुहब्बते इलाही पैदा करने के ज़रिए

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया ﴿الله ولى الذين آمنوا﴾ कि अल्लाह तआला ईमान वालों का दोस्त है। विलायत का इब्तिदाई दर्जा है जो कलिमा पढ़ने वाले हर बंदे को नसीब होता है मगर उसको और बढ़ाने की ज़रूरत है। उसके बढ़ाने के लिए दो चीज़ों की ज़रूरत है, एक अल्लाह का ज़िक्र दूसरे अल्लाह के वलियों की सोहबत।

शैख़ अब्दुल अल्लाह अंसारी रह० फ़रमाते हैं ﴿من لا ورد لهٗ وارد لهٗ﴾ जिसके विर्द व वज़ाईफ़ नहीं होंगे उसके ऊपर वारदात और कैफ़ियतें नहीं होंगी और फ़रमाया करते थे कि कोई नक़्शबंदी है, कोई चिश्ती है, कोई क़ादरी है, कोई सहरवर्दी है। अगर दिल में एक ख़ुदा की याद है तो तुम सब कुछ हो वरना तुम कुछ भी नहीं हो।

मेरे दोस्तो! यह मुहब्बते इलाही का जज़्बा दर्दे दिल की बात

है। यह मशीनों के पास बैठकर, दुकानों पर बैठकर, सड़कों और बाज़ारों में बैठकर बेदार नहीं होगा बल्कि उसके लिए तो अहले दिल के पास आना पड़ता है।

तमन्ना दर्दे दिल की हो तो कर ख़िदमत फ़क़ीरों की
नहीं मिलता यह गोहर बादशाहों के ख़ज़ीनों में

क्यों? इसलिए कि

न पूछ उन ख़रक़ा पोशों की अक़ीदत हो तो देख उनको
यदे बैज़ा लिए बैठे हैं अपनी आस्तीनों में

चलो देख आएं तमाशा जिगर का

मेरे दोस्तो! जब आदमी औलिया अल्लाह की सोहबत में आता है तो फिर उसकी ज़िंदगी बदल जाती है। इसीलिए किसी ने कहा–

निगाहे वली में वह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी

शायरों में जिगर मुरादाबादी एक अज़ीम शायर थे। उनकी इब्तिदाई ज़िन्दगी बड़ी ग़फ़लत वाली थी, ख़ूब पीते थे। वह मयनोश न थे बिलानोश थे। मुशायरों में कहीं हज़रत ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० के साथ मिलना जुलना हुआ जो हज़रत अक़्दस थानवी रह० के ख़लीफ़ा मजाज़ थे। उस वक़्त हज़रत मज्ज़ूब रह० तालीम के महकमे में कलक्टर के तौर पर काम कर रहे थे इतनी अच्छी दुनियावी तालीम थी मगर क्योंकि घुंडी खुल चुकी थी लिहाज़ा दरवेशी ग़ालिब थी। ऐसे-ऐसे अश्आर कहे जैसे मोतियों को उन्होंने माला में पिरा दिया हो।

उस्ताद जिगर उनकी फ़क़ीराना ज़िन्दगी से बड़े मुतास्सिर हुए। एक दफ़ा जिगर साहब कहने लगे जनाब! आप मिस्टर की 'टर' कैसे 'मिस' हुई? उन्होंने कहा थाना भवन जाकर। कहने लगे, कभी मैं भी जाऊँगा। हज़रत ने फ़रमाया बहुत अच्छा। अब हज़रत ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन मज्ज़ूब रह० ने मेहनत करना शुरू कर दी। सादिक़ीन की सोहबत के बारे में तफ़सीलात बताना शुरू कर दीं। एक दफ़ा उन्होंने पूछा। सुनाइए हज़रत! क्या हाल है? हज़रत ख़्वाजा साहब रह० ने अजीब अश्आर सुना दिए फ़रमाया—

पेंशन हो गई है क्या बात है अपनी
अब दिन भी अपना और रात भी अपनी

अब और है कुछ मेरे दिन रात का आलम
हर वक़्त ही रहता है मुलाक़ात का आलम

जब उन्होंने यह अश्आर सुने तो दिल में सोचने लगे कि उनके दिल में मुहब्बते इलाही इतनी भरी हुई है तो इनके शैख़ के दिल का आलम क्या होगा। लिहाज़ा कहने लगे थाना भवन तो जाऊँगा लेकिन मेरी एक शर्त है। फ़रमाया वह कौन सी? कहने लगे कि वहाँ जाकर भी पियूँगा। यह मेरी आदत है इसे छोड़ नहीं सकता। हज़रत मज्ज़ूब रह० ने फ़रमाया, मैं हज़रत से पूछँगा। पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर होकर पूछा कि हज़रत! एक बंदा बड़े काम का है, आना भी चाहता है मगर शर्त लगाता है कि यहाँ आकर भी पियूँगा। हज़रत ने फ़रमाया कि भाई! ख़ानक़ाह अवामी जगह है यहाँ पर तो इस बात की इजाज़त नहीं दी जा सकती क्योंकि शराब तो गुनाह की चीज़ है। अलबत्ता मैं उसे अपने घर

में मेहमान की हैसियत से ठहरा लूँगा क्योंकि मेहमान को अपनी हर आदत पूरी करने की इजाज़त है, काफ़िर को भी मेहमान बना सकते हैं। लिहाज़ा जिगर साहब वहाँ तैयार होकर पहुँच गए। वहाँ जाकर पीना तो क्या हज़रत के चेहरे को देखते ही बात दिल में उतर गई। कहने लगे हज़रत तीन दुआएं करवाने आया हूँ। हज़रत रह० ने पूछा कि वह कौन सी? कहने लगे पहले यह दुआ कीजिए कि मैं पीना छोड़ दूँ। हज़रत ने दुआ फ़रमा दी, दूसरी यह दुआ कीजिए की मैं दाढ़ी रख लूँ, हज़रत ने यह भी दुआ फ़रमा दी। तीसरी दुआ कीजिए कि मेरा ख़ात्मा ईमान पर हो जाए। हज़रत ने यह दुआ भी फ़रमा दी। *(सुब्हानअल्लाह)*

सोहबत और शैख़ की तवज्जेह रंग लाती रही। लिहाज़ा इसी मुहब्बत व अक़ीदत के साथ हज़रत रह० से बैत का ताल्लुक़ क़ायम कर लिया। जब वापस हुए तो ज़िन्दगी बदलना शुरू हो गई।

एक बार बैठे हुए थे कि दिल में ख़्याल आया कि न पियूँगा तो क्या होगा? अगर मैं अल्लाह को नाराज़ कर बैठा और नफ़्स को खुश कर लिया तो क्या फ़ायदा होगा। लिहाज़ा ऐसे ही बैठे बैठे पीने से तौबा कर ली क्योंकि बहुत अरसे से पी रहे थे। इसलिए बीमार हो गए। हस्पताल गए। डाक्टरों ने कहा कि एकदम तो छोड़ना तो ठीक नहीं, थोड़ी सी पी लें वरना मौत आ जाएगी। पूछने लगे थोड़ी सी पी लूँ तो कितनी लम्बी हो जाएगी? उन्होंने कहा दस-पंद्रह साल। कहने लगे दस-पंद्रह साल के बाद भी तो मरना है। बेहतर है कि अभी मर जाऊँ ताकि मुझे तोबा का सवाब मिल जाएगा। लिहाज़ा पीने से इन्कार कर दिया। इसी

दौरान एक बार अब्दुर्रब नश्तर से मिलने गए माशाअल्लाह वह उस वक़्त वज़ीर थे। उनका तो बड़ा प्रोटोकाल था। यह उनसे मिलने गए तो जिस्म पर फटे-पुराने कपड़े थे और बाल भी ऐसे ही शक्ल व सूरत भी बिल्कुल सादी थी। जब वहाँ गए तो चौकीदार ने समझा कि कोई मांगने वाला फ़रियाद लेकर आया होगा चुनाँचे उसने कहा मियाँ! जाओ वह मसरूफ़ हैं। उन्होंने कहा अच्छा, अपने पास काग़ज़ का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला और उस पर एक मिसरा लिखकर अब्दुर्रब नश्तर को भेजा क्योंकि वह भी साहिबे ज़ौक़ थे अजीब मिसरा लिखा :

नश्तर से मिलने आया हूँ मेरा जिगर तो देख,

कहना यह देखिए क्या ही उस्तादाना बात कही। जब वह काग़ज़ का पुर्ज़ा वहाँ गया तो अब्दुर्रब नश्तर उस पुर्ज़े को लेकर बाहर निकल आए। कहा, जनाब! आप तशरीफ़ लाए हैं और अन्दर ले गए। बिठाया और हाल पूछा चुनाँचे बताया कि ज़िन्दगी का रुख़ बदल लिया है। थोड़े अरसे के बाद चेहरे पर सुन्नत सजा ली। लोग उन्हें देखने के लिए आए तो उन्होंने इस हालत पर भी शे'र लिख दिया। अब क्योंकि तबियत से तकल्लुफ़ात ख़त्म हो गए थे, सादगी थी। इसलिए सीधी-सीधी बात लिख दी, फ़रमाया :

चलो देख आएं तमाशा जिगर का
सुना है वह काफ़िर मुसलमान हुआ है

शैख़े कामिल की सोहबत से जिगर पर फिर ऐसी वारदात होती थीं कि आरिफ़ाना शे'र कहना शुरू कर दिए। चुनाँचे एक वह वक़्त भी आया कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको बातिनी

बसीरत अता फ़रमा दी। एक ऐसा शे'र लिखा जो लाख रुपए से भी ज़्यादा क़ीमती है। इस सारी तफ़सील सुनाने का मक़सद भी यही शे'र सुनाना है जो इस आजिज़ को भी पसंद है। यह शे'र याद करने के क़ाबिल है:

मेरा कमाल इश्क़ में इतना है बस जिगर
वह मुझ पे छा गए मैं ज़माने पे छा गया

फ़ना फ़िल्लाह का मुक़ाम

मेरे दोस्तो! यह कैफ़ियत इंसान में उस वक़्त आती है जब फ़नाए क़ल्बी नसीब हो जाए। यह तसव्वुफ़ का पहला क़दम है। जब फ़ना नसीब हो जाती है तो इंसान अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आ जाता है। इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं ﴿الفانی لا یرد﴾ कि फ़ानी वापस नहीं आता यानी फिर गिरता नहीं है। इससे पहले-पहले गिर भी सकता है। जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे। बाज़ सालिकों के ज़हन में यह सवाल पैदा होता है कि फ़ानी क्यों नहीं लौट सकता? इसके जवाब में हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने एक आसान सी मिसाल समझाई। फ़रमाते हैं कि जैसे कोई आदमी बालिग़ होने के बाद फिर नाबालिग़ नहीं हो सकता इसी तरह जिसने फ़ना फ़िल्लाह का मक़ाम हासिल कर लिया वह तरीक़त में बालिग़ हो गया। अब अल्लाह तआला उसे गिरने से महफ़ूज़ फ़रमा लेंगे। तो ज़िक्र को ऐसे नुक़्ते तक पहुँचाना ज़रूरी है कि जिस पर इंसान को अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त नसीब हो जाए वरना मेरे दोस्तो! इससे पहले कई लड़खड़ा जाते हैं। मालूम नहीं कि किस वक़्त हमारे साथ क्या

मामला बन जाए—

फ़ना फ़िल्लाह की तह में बक़ा का राज़ मुज़मिर है
जिसे मरना नहीं आता उसे जीना नहीं आता

चार दिन की चाँदनी

इश्क़ इंसान के लिए एक तबीब का दर्जा रखता है। इससे मुराद इश्क़े इलाही है, दुनिया का हुस्न नहीं। यह तो चार दिन की चाँदनी है फिर अंधेरी रात। दुनिया वाले जब हसीनों को देखते हैं तो वह रीझ जाते हैं। उनका वुज़ू टूट जाता है, ईमान कमज़ोर हो जाता है, डगमगा जाते हैं। लेकिन याद रखें कि यह ग़ाज़े, ये डिस्टम्पर अल्लाह वालों को पैग़म्बर की राह से नहीं हटा सकते।

ख़ाक हो जाएंगे क़ब्रों में हसीनों के बदन
उनके डिस्टम्पर की ख़ातिर पैग़म्बर की राह न छोड़

अल्लाह की क़सम! जिनके दिलों में अल्लाह के साथ एक डोर जुड़ जाती है वे दुनिया की हसीनों की तरफ़ देखना तो क्या उनकी तरफ़ थूकना भी गवारा नहीं करते। उनके सामने ज़ुल्फ़ फ़ित्ना गर गधे की दुम बन जाया करती है।

एक आयत की तफ़्सीर

यह फ़नाइय्यते क़ल्बी पैदा करने के लिए दिल पर मेहनत करने की ज़रूरत है। इसीलिए क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया ﴿يا ايها الذين آمنوا﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿امنوا بالله و رسوله﴾ अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यहाँ 'आमिनू' का मतलब है 'इत्तक़ू' कि तुम अपने अंदर तक़्वा पैदा

करो। ज़बान से अल्फ़ाज़ अदा करने वालो! इनमें हक़ीक़त पैदा कर लो। ज़िंदगी उसके तक़ाज़ों के मुताबिक़ ढाल लो। मेरे दोस्तो! बात करना आसान है मगर दिल में उसकी हक़ीक़त का उतारना बहुत मुश्किल काम है। इंसान का नफ़्स ऐसा मक्कार है कि उसका ज़ोर जल्दी नहीं टूटता। इसीलिए अल्लामा इक़बाल रह० ने फ़रमाया—

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की हरारत वालों ने
दिल अपना पुरानी पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका

बाहर की मस्जिद बनाना आसान और इस (दिल) को मस्जिद बनाना मुश्किल काम।

बैतुल्लाह के मफ़हूम में वुसअत

यह दिल अब्दुल्लाह (इंसान का दिल) अल्लाह का अर्श है। अल्लाह तआला ने इसको अपना घर कहा है और अल्लाह तआला के घर को ही तो मस्जिद कहते हैं। बैतुल्लाह दुनिया की मस्जिदों की माँ है। बाक़ी सब मस्जिदें गोया उसकी बेटियाँ हैं। क्या बैतुल्लाह में ख़ुदा न ख़्वास्ता अल्लाह तआला रहते हैं? नहीं! नहीं! बल्कि वहाँ अल्लाह तआला की ख़ास तजल्लियाते ज़ातिया नाज़िल होती हैं। जिस तरह बैतुल्लाह पर तजल्लियात वारिद होती हैं उसी तरह जो बंदा अपने दिल को बना लेता है, अल्लाह तआला की ख़ास तजल्लियात (ज़ातिया) उस बंदे के दिल पर वारिद होती हैं। इसीलिए फ़रमाया—

﴿لا يسعني ارضي ولا سمائي ولكن يسعني قلب عبد مؤمن﴾

मैं न ज़मीनों में समाता हूँ न आसमानों में समाता हूँ बल्कि मैं मोमिन बंदे के दिल में समा जाता हूँ।

मेरे दोस्तो! हम अपने घर की सफ़ाई तो रोज़ाना करवाएं ताकि बदबू न आए और जिसे अल्लाह तआला अपना घर कहें उसमें गुनाहे कबीरा की गंदगी फैलाएं। इस घर में अगर हम गुनाहों की गंदगी फैलाएंगे तो फिर अल्लाह तआला इस घर की तरफ़ निगाहे रहमत से कैसे देखेंगे।

मुर्दा दिल की पहचान

एक आदमी हज़रत हसन बसरी रह० के पास आया और कहने लगा, हज़रत पता नहीं क्या हो गया है, हमारे दिल तो शायद सो गए हैं? हज़रत रह० ने पूछा, वह कैसे? कहा हज़रत आप वाअज़ फ़रमाते हैं, क़ुरआन व हदीस बयान करते हैं मगर हमारे दिलों पर असर नहीं होता। यूँ लगता है कि हमारे दिल सो गए हैं। हज़रत ने फ़रमाया, भई! अगर यह हाल है तो फिर यह न कहो कि दिल सो गए हैं बल्कि यूँ कहो कि दिल मो गए हैं, दिल मर गए हैं। उसने कहा हज़रत दिल मर कैसे गए? फ़रमाया, भई! जो सोया हो उसे झंझोड़ा जाए तो वह जाग उठता है और जो झंझोड़ने से भी न जागे वह सोया हुआ नहीं वह तो मोया हुआ होता है। क़ुरआन व हदीस जिसे सुनाई जाए और वह अगर फिर भी न जागे तो वह सोया हुआ नहीं बल्कि मोया हुआ होता है।

दिल को ज़िंदा करने की ज़रूरत है

जी हाँ, इंसान का दिल कभी-कभी गुनाहों की ज़ुलमत से मर

जाता है मगर उसे ज़िंदा करने की जरूरत है—

दिल मुर्दा दिल नहीं है उसे ज़िंदा कर दोबारा
कि यही है उम्मतों के मर्ज़ कहन का चारा

पुराने मर्ज़ का इलाज दिल को ज़िंदा करना है। दिल ज़िंदा हो गया तो हमारे आमाल में जान आ जाएगी। बल्कि सच्ची बात यह है कि ज़िंदगी में बहार आ जाएगी—

दिल गुलिस्तां था तो हर शै से टपकती थी बहार
दिल बयाबाँ हो गया आलम बयाबाँ हो गया

आज हमारे आमाल बेजान क्यों हैं? इसलिए कि दिल में मुहब्बते इलाही की वह कैफ़ियत नहीं जो होनी चाहिए थी। इस मुहब्बत के साथ जो आदमी अमल कर लेता है तो फिर अल्लाह तआला को वे अमल पसंद आ जाते हैं। अगर दिल पर मेहनत करके शीशे की तरह चमका दिया जाए तो फिर देखिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इंसान को कैसी कामयाबियाँ अता फ़रमाते हैं। वह परवरदिगारे आलम का चुना हुआ बंदा बन जाता है। उसके क़दम जिधर लग जाएं ज़मीन के वे टुकड़े खुश हो जाते हैं।

मोमिन बंदे की दुआ की शान

हदीस मुबारक में आया है कि जब मोमिन की दुआ के बोल ऊपर पहुँचते हैं तो फ़रिश्ते हैरान होते हैं और कहते हैं कि यह बड़ी जानी-पहचानी आवाज़ है। यह आवाज़ तो वह है जो हम पहले सुना करते थे। फ़रिश्ते इस दुआ के लिए दरवाज़े खोलते चले जाते हैं। इस बंदे की आवाज़ अल्लाह के हुज़ूर में पहुँचती है

और अल्लाह तआला उसे क़ुबूलियत का शर्फ़ अता फ़रमा देते हैं।

(अल्लाहु अकबर)

मुहब्बते इलाही के असरात

मेरे दोस्तो! जब मुहब्बते इलाही दिल में उतर जाती है तो यह इंसान को बहुत बुलंदी पर पहुँचा देती है। जिस आँख में मुहब्बत समा गई वह निगाह, निगाहे नाज़ बन गई। जिस ज़बान में मुहब्बत समा गई वह ज़बान शजूरे मूसवी की तरह हो गई। जिस दिल में मुहब्बत इलाही समा गई वह दिल अल्लाह के अर्श की तरह हो गया, जिस शख़्सियत में मुहब्बते इलाही समा गई वह शख़्सियत बरकाते इलाही का सरचश्मा बन गई। ग़र्ज़ यह मुहब्बते इलाही इंसान को इतना ऊँचा उठाती है कि यह ख़ाक की मुठ्ठी फ़रिश्तों को भी पीछे छोड़ जाती है—

फ़रिश्तों से बेहतर है इंसान बनना
मगर इसमें लगती है मेहनत ज़्यादा

जब इंसान सही माइनों में इंसान बन जाता है तो फिर उसकी ज़ात में, कलाम में, निगाह में और हाथों में तासीर पैदा हो जाती है जिसकी वजह से उसके आमाल में तासीर पैदा हो जाती है। वह नमाज़ें पढ़ते हैं तो मज़ा और होता है, मेहमान नवाज़ी का मज़ा और होता है, रातों को उठने का मज़ा और। उनकी पूरी ज़िंदगी रातों को जागने में गुज़र जाती है—

मुझको न अपना होश न दुनिया का होश है
बैठा हूँ मस्त होके तुम्हारे ख़्याल में

तारों से पूछ लो मेरी रूदादे ज़िंदगी
रातों को जागता हूँ तुम्हारे ख़्याल में

इन बातों की वज़ाहत दो मिसालों से समझिए।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किसी मुर्दे को ﴿قم باذن اللّٰه﴾ फ़रमाते तो अल्लाह तआला थोड़ी देर के लिए उस मुर्दे को ज़िंदा फ़रमा देते थे। आज हम सब मिलकर किसी मर्दे को ﴿قم باذن اللّٰه﴾ कहें तो क्या खड़ा हो जाएगा? नहीं खड़ा होगा हालाँकि बोल वही हैं मगर कहने वाली ज़बान में फ़र्क़ है। उनकी ज़बान ऐसी मुबारक थी कि ﴿قم باذن الله﴾ के बोल निकलते थे और मुर्दे खड़े हो जाते थे।

आई०जी० पुलिस की मिसाल

एक आम आदमी सड़क पर जा रहा हो और वह किसी पुलिस वाले को देखे कि वह ठीक काम नहीं कर रहा। इस पर वह पुलिस वाले से कहे कि मैंने तुम्हें नौकरी से हटा दिया तो क्या वह पुलिस वाला नौकरी से हट जाएगा? नहीं होगा बल्कि वह उसकी गर्दन नापेगा कि तू कौन होता है ऐसी बात करने वाला। उसके बाद अगर उसी सड़क से आई०जी० पुलिस गुज़रे और उसी पुलिस वाले को बुलाकर कहे कि तेरा पेटी नम्बर क्या है? जाओ मैंने तुम्हें बर्ख़ास्त कर दिया। अब वह बर्ख़ास्त हो जाएगा या नहीं? ज़रूर बर्ख़ास्त हो जाएगा जबकि अल्फ़ाज़ वही हैं। एक आदमी ने कहा तो उल्टा उसकी जान का मुख़ालिफ़ बना और

वही अल्फ़ाज़ आई०जी० पुलिस ने कहे तो वह बर्ख़ास्त हो गया। फ़र्क़ यह है कि आई०जी० को एक मक़ाम हासिल है जबकि आम आदमी को वह मक़ाम हासिल नहीं है।

इसी तरह जब इंसान को अल्लाह तआला के क़ुर्ब का मक़ाम हासिल हो जाता है तो उसके किरदार और बात में असर पैदा हो जाता है–

हर लह्ज़ा मोमिन की नई आन नई शान
गुफ़्तार में किरदार में अल्लाह की बुरहान
यह राज़ किसी को नहीं मालूम कि मोमिन
क़ारी नज़र आता है हक़ीक़त में है क़ुरआन

एक सहाबी के बोलने का असर

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जब फ़ारस पर हमला किया तो एक ऐसे शहर का घिराव किया जिस में बादशाह का तख़्त भी था। घिराव किए हुए मुसलमानों को काफ़ी दिन गुज़र गए। बादशाह ने अपने साथियों से मश्वरा किया कि कैसे छुटकारा हासिल करें? ये तो जिधर भी क़दम उठाते हैं कामयाब हो जाते हैं अगर ये हम पर मुसल्लत हो गए तो हम क्या करेंगे? लोगों ने मश्वरा दिया कि बादशाह सलामत! आप इनको बुलाकर अपना रौब-दबदबा और जाह व जलाल दिखाएं। ये भूखे नंगे लोग हैं, ये हमारे माल व दौलत से डर जाएंगे। उसने कहा बहुत अच्छा। लिहाज़ा उसने पैग़ाम भिजवाया कि समझौते के लिए कोई आदमी भेजो जो बातचीत करे। सहाबा किराम ने एक सहाबी को उस तरफ़ रवाना किया।

यह ऐसे सहाबी थे कि जिनका कुर्ता फटा हुआ था और बबूल के कांटों से सिला हुआ था। उनके बैठने के लिए घोड़े पर ज़ीन नहीं थी बल्कि नंगी पीठ पर बैठकर आए और हाथ में सिर्फ़ भाला था। वहाँ जाकर बादशाह के तख़्त पर बैठ गए। बादशाह को बड़ा ग़ुस्सा आया, कहने लगा, तुम्हें कोई लिहाज़ नहीं कि तुम किसके पास आए हो, न कोई अदब का ख़्याल, न तरीक़ा न सलीक़ा? फ़रमाया हमारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बादशाहों के दरबार में इसी शान से आने का तरीक़ा सिखाया है। यह सुनकर उसे बड़ा ग़ुस्सा आया। कहने लगा तुम क्या चाहते हो? फ़रमाया ﴿اسلم تسلم﴾ इस्लाम क़ुबूल कर ले सलामती पा जा। कहने लगा, नहीं क़ुबूल करता। फ़रमाया, अगर नहीं क़ुबूल करता तो फिर हुकूमत हमारी होगी और तुम्हें रहने की पूरी आज़ादी होगी। उसने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम अपनी हुकूमत को ऐसे नंगे-भूखे लोगों के हवाले कर दें। सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे, अच्छा याद रखना अगर यह बात न मानी तो हम तुम्हारे साथ जंग करेंगे। तलवार हमारा और तुम्हारा फ़ैसला करेगी और तुम्हारी बेटियाँ हमारे बिस्तर बनाया करेंगी।

भरे दरबार में तलवारों के साए में बादशाह को इस तरह निडर होकर एक बात कह दी। कहने लगा, अच्छा! तुम्हारी तो ये ज़ंग भरी तलवारें हैं तुम इनके साथ हमारा क्या मुक़ाबला करोगे? आप तड़पकर बोले ऐ बादशाह! तुमने हमारी ज़ंग भरी तलवारों को तो देखा है लेकिन इन तलवारों के पीछे वाले हाथों को नहीं देखा। तुम्हें पता चल जाएगा कि किन हाथों में ये तलवारें हैं। उन्होंने अल्लाहु अकबर का नारा लगाया, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन्हें कामयाबी

से हमकिनार फ़रमा दिया। जी हाँ जो ग़ैरुल्लाह से नहीं डरते अल्लाह तआला उनकी बातचीत में यूँ असर पैदा फ़रमा देते हैं—

लगाता था तू जब नारा तो ख़ैबर तोड़ देता था
हुक्म देता था दरिया को तो रस्ता छोड़ देता था

मुफ़्ती इलाही बख़्श नक़्शबंदी की बात में असर

कांधला में ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा था जिस पर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच झगड़ा था। हिंदू कहते थे कि यह हमारा है, हम यहाँ मंदिर बनाएंगे और मुसलमान कहते थे कि यह हमारा है हम यहाँ मस्जिद बनाएंगे। जब दोनों तरफ़ से इस क़िस्म की बातें होने लगीं तो पूरे शहर के अंदर आग लगने का ख़तरा पैदा हो गया। अंग्रेज़ हुक्मुरान था। वह परेशान हुआ कि अब इस बात को कैसे संभाला जाए। मुक़दमा अदालत में पहुँच गया। जज अंग्रेज़ था। उसके सामने मुसलमान भी खड़े थे और हिंदू भी। जज ने कहा कोई तरीक़ा बता दो जिससे झगड़े के बग़ैर ही कोई फ़ैसला हो सके। हिंदुओं ने कहा कि हमारे पास एक हल है। जज ने पूछा वह कौन सा? कहने लगे, हम एक मुसलमान आलिम का नाम बता देते हैं। आप उनको अपने पास बुला लीजिए और उनसे पूछ लीजिए कि यह जगह किसकी है। अगर वह कहें कि हिंदुओं की है तो हमारे हवाले कर दीजिए और वह कहें कि मुसलमानों की है तो उनके हवाले कर दीजिए मगर हम उनका नाम सिर्फ़ आपको अकेले में बताएंगे, लोगों के सामने ज़ाहिर नहीं करेंगे। जज ने मुसलमानों से पूछा क्या आपको मंज़ूर है? मुसलमानों ने सोचा कि वह बंदा मुसलमान होगा लिहाज़ा वह मस्जिद बनाने के

लिए बात करेगा इसलिए कहने लगे हाँ हमें मंज़ूर हे। जज ने फ़ैसले के लिए अगली तारीख़ दे दी।

जज ने हिंदुओं से तन्हाई में पूछा तो उन्होंने मुफ़्ती इलाही बख़्श का नाम बताया जो कि सिलसिलाए आलिया नक़्शबंदिया के साहिबे निस्तबत बुज़ुर्ग थे। बाहर निकलकर दूसरे हिंदुओं ने अपने नुमाइंदे हिंदुओं को बड़ा बुरा भला कहा कि तुमने एक मुसलमान का नाम दे दिया हे। वह तो मुसलमानों के हक़ में गवाही देगा। तुमने अपने हाथों से खुद ही ज़मीन दे दी मगर मुसलमानों के दिल बड़े खुश थे कि एक मुसलमान की गवाही ली जाएगी। लिहाज़ा वे ख़ुशियाँ मनाने लगे।

जब अगली तारीख़ आई तो बड़ी तादाद में लोग अदालत में पहुँच गए। मुफ़्ती इलाही बख़्श रह० भी वहाँ तशरीफ़ ले आए। जज ने मुफ़्ती साहब से कहा आप बताइए कि यह ज़मीन मुसलमानों की है या हिंदुओं की? मुसलमान खुश थे कि अभी कहेंगे कि मुसलमानों की है मगर मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया, यह ज़मीन हिंदुओं की है। जज ने पूछा क्या इस ज़मीन पर हिंदू अपना घर बना सकते हैं। मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया जब हिंदुओं की मिल्कियत है तो मंदिर बनाएं या घर बनाएं उनकी मर्ज़ी है उनको इख़्तियार है। लिहाज़ा जज ने उसी वक़्त एक तारीख़ी फ़ैसला तारीख़ी अल्फ़ाज़ में लिखा :

"आज के इस मुक़दमे में मुसलमान हार गए मगर इस्लाम जीत गया।"

जब जज ने यह फ़ैसला सुनाया तो हिंदुओं ने कहा, जज साहब! आपने फ़ैसला हमारे हक़ में दे दिया है। हम कलिमा

पढ़कर मुसलमान होते हैं। अब हम अपने हाथों से इस जगह मस्जिद बनाएंगे। *(सुब्हानअल्लाह)*

एक अल्लाह वाले की ज़बान से निकली हुई सच्ची बात का यह असर हुआ कि हिंदुओं ने इस्लाम भी क़ुबूल किया और अपने हाथों से मस्जिद बना दी। किसी ने क्या ही अच्छी बात कही—

हज़ार ख़ौफ़ हो लेकिन ज़बां हो दिल की रफ़ीक़
यही रहा है अज़ल से क़लन्दरों का तरीक़

हज़रत मुहम्मद दरबंदी रह० की निगाह में तासीर

मेरे दोस्तो! जिस आदमी के दिल में मुहब्बत इलाही रच-बस जाती है परवरदिगार आलम उसकी बरकत से ऐसे-ऐसे बड़े काम करवा देते हैं जो बड़ी-बड़ी क़ौमें मिलकर नहीं कर सकतीं। सातवीं सदी हिज्री में मुसलमानों में ग़फ़लत की अजीब कैफ़ियत थी। तातारी आंधी की तरह उठे और उन्होंने मुसलमानों से तख़्त व ताज छीन लिया। बग़दाद में एक दिन में ढाई लाख मुसलमानों को ज़िब्ह किया गया। मुसलमानों पर उनका इतना रौब था कि कि एक मक़ूला बन गया था कि कि अगर कोई तुम्हें कहे कि फ़ला मोर्चे पर तातारी हार गए तो उसे तसलीम न करना।

दरबंद एक शहर था। तातारियों ने उसमें दाख़िल होने का इरादा किया तो वहाँ के सब लोग मुसलमान शहर से भाग निकले मगर ख़्वाजा दरबंदी रह० और उनके एक ख़ादिम ख़ास मस्जिद में बैठे रहे। जब तातारी शहज़ादा शहर में दाख़िल हुआ तो मुसलमानों के दौलत और माल से भरे हुए आलीशान घरों को देखकर बड़ा हैरान हुआ कि देखो दुश्मन इतना डरपोक है कि अपने नाज़ व

नेमतों से भरी हुई जगहों को छोड़कर भाग गया है। उसने फ़ौजियों को कहा पूरे शहर में देखो कोई आदमी मौजूद तो नहीं। उसको इत्तिला मिली कि दो बंदे मौजूद हैं। उसने कहा कि गिरफ़्तार करके पेश करो। लिहाज़ा फ़ौजी आए और उन्होंने उन दोनों को ज़ंजीरों से बांध दिया।

वे उनको लेकर शहज़ादे के समाने पेश हुए। शहज़ादे ने देखकर कहा कि तुम्हें मालूम नहीं था कि इस शहर में हम दाख़िल हो रहे हैं। उन्होंने कहा हाँ हमें मालूम था। वह कहने लगा फिर तुम शहर छोड़कर क्यों नहीं निकले? फ़रमाया, हम तो अल्लाह के घर में बैठे थे। उसने कहा तुम कहते हो कि हम अल्लाह के घर में बैठे थे, तुम्हें नहीं पता कि हमारे पास तलवारें भी हैं, तुम्हें पता नहीं कि हम ने तुम्हें ज़ंजीरों से बांधा हुआ है? उन्होंने फ़रमाया, ये ज़ंजीरें क्या हैं? कहने लगा, क्यों? फ़रमाया, ये ज़ंजीरें हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। वह हैरान हुआ कि यह क्या कह रहे हैं कि ज़ंजीरें कुछ नहीं कर सकतीं। कहने लगा, तुम्हें इन ज़ंजीरों से हमारे सिवा कोई नहीं छुड़ा सकता। फ़रमाया क्या कोई नहीं छुड़ा सकता? हज़रत मुहम्मद दरबंदी रह० को जलाल आया और वहीं खड़े-खड़े शहज़ादे के सामने कहा “अल्लाह”। अल्लाह के लफ़्ज़ से ज़ंजीरें ऐसे टूटीं जैस कच्चा धागा टूट जाता है। इससे शहज़ादे के दिल पर रौब बैठ गया। लिहाज़ा उसने अपने फ़ौजियों से कहा इनको इसी शहर में रहने की इजाज़त दे दी जाए। शहज़ादे को उनसे अक़ीदत हो गई। लिहाज़ा वह कभी-कभी इन बुज़ुर्गों के पास आता जाता। हज़रत दरबंदी रह० ने उसके सीने पर निगाहे गाड़कर उसके दिल की दुनिया को बदल दिया। यहाँ तक कि एक

वक़्त आया कि उसके दिल पर ऐसा असर हुआ कि उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। उसकी वजह से दूसरे शहज़ादे भी मुसलमान हो गए। इस तरह अल्लाह तआला ने पूरी सलतनत फिर मुसलमानों के हवाले कर दी—

है अयां यूरिशे तातार के अफ़साने से
पासबां मिल गए काबे को सनमख़ाने से

जो काम पूरी क़ौम न कर सकी अल्लाह के एक बंदे ने वह काम कर दिया।

नहीं फ़क्र व सलतनत में कोई इम्तियाज़
यह निगह की तीरबाज़ी वह सिपह की तीरबाज़ी

हज़रत अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० की बातचीत में असर

मुहब्बते इलाही से इंसान की बात में असर पैदा हो जाता है। वही बातें आप आम आदमी से भी सुनेंगे मगर तबियत पर असर नहीं होगा और अगर किसी इश्क़ वाले कामिल बंदे से सुनेंगे तो तबियत पर असर होगा। अल्फ़ाज़ एक जैसे होंगे मगर अल्फ़ाज़ कहने वाली ज़बान का फ़र्क़ होगा। मशाइख़ ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० के बेटे शाह रुक्नुद्दीन पढ़कर आए। मजलिस में बैठे हुए थे। हज़रत ने फ़रमाया, रुक्नुद्दीन कुछ नसीहत करो। रुक्नुद्दीन ने बड़ा इल्म हासिल किया था। लिहाज़ा उठे और बड़ी मारिफ़त की बातें बयान करना शुरू कर दीं, बड़े नकात बयान किए। मजमा ख़ामोशी से सुनता रहा मगर किसी के दिल पर कोई असर नहीं हुआ। जब

उन्होंने बयान पूरा कर लिया तो हज़रत रह० फ़रमाने लगे कि हाँ रुक्नुद्दीन! रात हम ने अपने लिए दूध रखा था, बस एक बिल्ली आई और वह दूध पीकर चली गई। हज़रत के ये बोल कहने थे कि मजमा लोट-पोट होने लग गया। हज़रत ने पूछा, बेटे! आपने मारिफ़ बयान किए मगर मजमे पर कोई असर अंदाज़ न हुए। मैंने तो इतना ही कहा कि मैंने दूध रखा था और बिल्ली पी गई। यह सुनकर मजमा लोट-पोट होने लग गया है, इसकी क्या वजह है? बेटा समझ गया। लिहाज़ा कहने लगा, अब्बू! जिस ज़बान से ये अल्फ़ाज़ निकले उस ज़बान में तासीर थी जिसने लोगों के दिलों को इस तरह पिघला दिया।

शाह अब्दुल क़ादिर रह० की निगाह में तासीर

अल्लाह वालों की निगाह जिस पर पड़ जाती है उस चीज़ पर भी असर हो जाया करता है। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने एक बार मस्जिदे फ़तेहपूरी देहली में चालीस दिन का ऐतिकाफ़ किया। जब बाहर दरवाज़े पर आए तो एक कुत्ते पर नज़र पड़ गई। ज़रा ग़ौर से देखा तो उस कुत्ते में ऐसा असर हुआ कि दूसरे कुत्ते उसके पीछ-पीछे चलते। जहाँ जाकर बैठा दूसरे कुत्ते उसके साथ जाकर बैठे। हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने जब यह वाक़िआ सुना तो हँसकर फ़रमाया कि वह ज़ालिम कुत्ता भी कुत्तों का पीर बन गया। देखा एक वली कामिल की नज़र एक जानवर पर पड़ी तो उसके अंदर यह कैफ़ियत पैदा हो गई अगर इंसान पर नज़र पड़ेगी तो उस इंसान के अंदर वह कैफ़ियत पैदा क्यों नहीं होगी।

मुफ़्ती लुत्फ़ुल्लाह रह० के किरदार में तासीर

मुफ़्ती लुत्फ़ुल्लाह सहारनपुरी रह० दारुल उलूम देवबंद के एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। एक बार अपनी औरतों लेकर किसी शादी में शामिल होने के लिए जाना था। एक सवारी बना ली जिसके ऊपर घर की सारी औरतें बैठ गयीं, बच्चे भी बैठ गए। मर्द सिर्फ़ आप ही साथ थे। आप उनको लेकर शादी में शरीक होने के लिए दूसरी जगह जा रहे थे। रास्ते में एक जगह वीराना आया। वहाँ कुछ डाकू पीछे हो लिए थे। उन्होंने देखा जब देखा कि कोई सवारी आ रही है जिस पर बहुत सारी पर्दादार औरतें हैं और सिर्फ़ एक मर्द है तो वह बाहर निकल आए। सवारी को घेर लिया। कहने लगे हम माल भी लूटेंगे और इज़्ज़तें भी ख़राब करेंगे। हज़रत फ़रमाने लगे यह सारा माल ले जाएं मगर इन पर्दादार औरतों के सरों पर चादरें न खींचिए। आपको उनके कानों से ज़ेवर खींचने की ज़रूरत नहीं, हम खुद ही उतारकर सारे का सारा ज़ेवर आपको दे देते हैं। डाकू कहने लगे बहुत अच्छा। आपने घर की औरतों से फ़रमाया कि सब ज़ेवरात उतारकर दे दो। वे नेक औरतें थीं। उन्होंने सब चूड़ियाँ, सब अंगूठियाँ वग़ैरह एक रुमाल में रख दीं। आपने उसकी गठरी बांधी और डाकुओं के सरदार के हवाले कर दी और फ़रमाया कि हमारे पास जितना ज़ेवर था हमने आपको दे दिया है। आप हमारी पर्दादार औरतों की इज़्ज़त को धब्बा न लगाएं और अब हमारी जान बख़्शी कर दें। डाकुओं ने जब देखा कि माल की गठरी खुद उन्होंने अपने हाथों से बाँध कर दे दी तो कहने लगे, बहुत अच्छा आप जाइए।

जब आप थोड़ा सा आगे बढ़े तो घर की औरतों में से एक ने कहा ओह! मेरी उंगली में सोने का बना हुआ एक छोटा सा छल्ला रह गया है, मेरा ध्यान ही नहीं गया, मैंने तो वह दिया नहीं। आपने सुना तो सवारी को रोक दिया और उसे कहा कि वह भी उतार कर दे दो क्योंकि मैंने कहा था कि हम तुम्हें सारे ज़ेवरात देंगे। अब यह मुनासिब नहीं कि हम यह छल्ला वापस ले जाएं। लिहाज़ा आपने वह छल्ला लिया और डाकुओं के पीछे भागने लगे। जब डाकुओं ने देखा कि कोई पीछे भागता हुआ आ रहा है तो पहले तो वे घबराए फिर उन्होंने कहा कोई बात नहीं, यह तो अपने हाथ से पूरी गठरी दे चुका है, अब हमारा क्या कर लेगा तो वे खड़े हो गए। जब हज़रत रह० वहाँ पहुँचे तो आपकी आँखों में आँसू थे। आप उनकी मिन्नत करके फ़रमाने लगे कि मैंने आपसे तो वायदा किया था कि हम अपने सब ज़ेवरात आपको दे देंगे मगर यह छोटा सा छल्ला हमारी एक बेटी ने पहना हुआ था। इसकी तरफ़ ध्यान नहीं किया और यह हमारे साथ जा रहा था, मैं यह लेकर आया हूँ ताकि यह भी आप लोगों के हवाले कर दूं।

डाकुओं के सरदार ने जब सुना तो उसके जिस्म के अंदर एक लहर सी दौड़ गई कि उसे पसीना आ गया और कहने लगा ओहो! यह इतना नेक और दयानतदार बंदा है, यह तो इतनी छोटी सी बात का इतना लिहाज़ रखता है और मैंने अपने परवरदिगार का कलिमा पढ़ा है मगर मैं अपने परवरदिगार के कलिमे की लाज नहीं रखता। उसी वक़्त कहने लगा, हज़रत! मेरी ज़िंदगी बुराई करने और लोगों की इज़्ज़तें लूटने में गुज़र गई और मैंने लोगों का माल भी छीना, बहुत गुनाहगार हूँ। मुझे आप माफ़ कर दें और

तोबा का तरीक़ा भी बता दें ताकि मेरा परवरदिगार भी मुझे माफ़ कर दे।

एक औरत की बरकत से क़हतसाली ख़त्म

मेरे दोस्तो! याद रखिए कि जिस इंसान के अंदर मुहब्बते इलाही पैदा हो जाती है अगर उसकी बरकत से दुआएं मांगी जाएं तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उन दुआओं को भी क़ुबूलियत का शर्फ़ अता फ़रमा देते हैं। शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है एक बार देहली में सूखा पड़ा। बारिश होना बंद हो गई जिसकी वजह से दरिया, नहरें और तालाब सूख गए। सब्ज़ियाँ, खेतियाँ सूख गयीं। पानी और अनाज की कमी हो गई। हर तरफ़ गर्मी की वजह से लोग बेताब हो गए, बच्चे रोने लगे, माँएं तड़पने लगीं, जानवर परेशान हो गए, चरिन्दे-परिन्दे निढाल हो गए कि सूखा कैसे ख़त्म हो। उलमाए किराम ने फ़ैसला किया कि सारे शहर वाले मर्द, औरतें, बच्चे, बूढ़े ख़ुद भी बाहर निकलें और अपने जानवरों को भी बाहर लाएं और एक बड़े मैदान में नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा करें और अल्लाह तआला से दुआ मांगे ताकि अल्लाह तआला रहमत की बारिश बरसा दें। देहली शहर उस वक़्त छोटा होता था। लिहाज़ा सब बाहर निकले। नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा की और रो-रो कर दुआ मांगने लगे कि ऐ रब्बे करीम! अपनी रहमत से बारिश बरसा दे और हमें इस मुश्किल से निजात अता फ़रमा मगर देखने में कोई असबाब नज़र न आए।

एक नौजवान अपनी माँ के साथ ऊँट पर सवार क़रीब से गुज़रा। जब उसने यह मंज़र देखा तो रुक गया। अपने ऊँट को

वहीं रोककर मजमे के पास आया और पूछा कि ये लोग क्यों जमा हैं? लोगों ने बताया कि सूखे से तंग आकर लोग बारिश के लिए दुआ मांग रहे हैं लेकिन बारिश की कोई शक्ल नज़र नहीं आती। उसने कहा, बहुत अच्छा, मैं आपके लिए बारिश की दुआ मांगता हूँ। लिहाज़ा वह अपनी सवारी के पास गया। उसने अपनी माँ की चादर का कोना पकड़कर कुछ अल्फ़ाज़ कहे। उसके अल्फ़ाज़ कहने ही थे कि उसी वक़्त आसमान पर बादल आ गए। मजमा वहीं था, उलमा व मशाइख़ वहीं, मर्द व औरतें वहीं खड़ी थीं कि अल्लाह तआला की रहमत ने बारिश बरसा दी। इतनी बारिश हुई कि लोग निहाल हो गए।

उलमाए किराम बड़े हैरान हुए कि क्या वजह है कि इतने लोगों ने दुआ मांगी मगर क़ुबूल न हुई और इस नौजवान ने दुआ मांगी और क़ुबूल हो गई। उस नौजवान के पास आकर पूछा कि आपने कौन सी दुआ मांगी? वह कहने लगा कोई ऐसी ख़ास दुआ तो नहीं हाँ मैं एक नेक माँ को बेटा हूँ, मेरी माँ साफ़-सुथरी और पाक-साफ़ ज़िंदगी गुज़ारने वाली है, कभी ग़ैर-महरम का हाथ उसके जिस्म के साथ नहीं लगा। जब आपने कहा हम मुश्किल और पेरशानी में गिरफ़्तार हैं तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि मैं एक ऐसी माँ का बेटा हूँ जिसने अपनी सारी ज़िंदगी पाकदामनी में गुज़ार दी है। इसलिए मैंने अपनी माँ की चादर का कोना पकड़कर दुआ की कि ऐ अल्लाह! तुझे उसकी पाकदामनी का वास्ता देता हूँ रहमत की बारिश नाज़िल फ़रमा दे। अल्लाह तआला को मेरी माँ की नेकी इतनी पसंद आई कि उसने उसके वास्ते से रहमत की बारिश बरसा दी।

मुहब्बते इलाही से ज़ात में तासीर

एक बुज़ुर्ग थे। वह सफ़र पर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक ईसाई मिला। उसने कहा मुझे भी सफ़र पर जाना है, चलो हम इकठ्ठे सफ़र करें। लिहाज़ा इकठ्ठे चल पड़े। रास्ते में उनके पास जो खाने-पीने की चीज़ें थीं वे ख़त्म हो गयीं। फ़ाक़े शुरू हो गए। आगे चले तो सोचा कि अब क्या करें। उन बुज़ुर्ग (मुसलमान) ने मश्वरा दिया कि आज मैं दुआ मांगता हूँ और अल्लाह तआला जो रिज़्क़ देंगे वह हम खा लेंगे और कल आप दुआ मांगना। उसने क़हा, बहुत अच्छा। लिहाज़ा पहले दिन मुसलमान ने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मैं मुसलमान हूँ, अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन की हक़्क़ानियत को ज़ाहिर फ़रमा दे और मेरी लाज रख ले—

मेरी लाज रख ले मेरे ख़ुदा
यह तेरे हबीब की बात है

अभी दुआ मांगी ही थी कि थोड़ी देर के बाद एक आदमी खाने की भरी हुई एक बड़ी सी तश्तरी लेकर आ गया। मुसलमान देखकर बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया, अल्लाह का शुक्र है अल्लाह तआला ने मेरी लाज रख ली। फिर सोचने लगे कि आज तो इस्लाम की बरकत से खानां मिल गया, अब देखेंगे कि कल ईसाई के साथ क्या मामला होता है।

कल का दिन आ गया। अब ईसाई की बारी थी। लिहाज़ा वह भी एक तरफ़ चला गया। उसने एक मुख़्तसर सी दुआ मांगी और वापस आ गया। थोड़ी देर के बाद एक आदमी दो बड़ी-बड़ी

तश्तरियों में भुना हुआ गोश्त लेकर हाज़िर हो गया। जब मुसलमान ने देखा तो हैरान हुए कि मैंने कल इस्लाम की बरकत से दुआ मांगी तो एक तश्तरी में खाना मिला और आज इस ईसाई ने दुआ मांगी तो इसकी दुआ पर दो तश्तरियों में खाना आ गया। यह क्या मामला हुआ? इधर ईसाई बड़ा ख़ुश है। उसने दस्तरख़्वान बिछाया और कहने लगा जनाब! आकर खाना खा लीजिए। मुसलमान बुज़ुर्ग बुझे दिल के साथ खाना खाने के लिए बैठे, खाने को जी नहीं चाह रहा था, खाना ज़हर लग रहा था। ईसाई ने कहा, मुझे आपका दिल परेशान सा नज़र आता है। उन्होंने कहा हाँ मैं वाक़ई परेशान हूँ कि यह क्या मामला हुआ।

वह कहने लगा, आप तसल्ली से खाना खा लें, मैं आपको दो ख़ुशख़बरियाँ सुनाऊँगा। वह फ़रमाने लगे, नहीं मैं खाना नहीं खा सकता क्योंकि मेरा दिल ग़मज़दा है, तुम ख़ुशख़बरी पहले सुनाओ तब खाना खाऊँगा। वह ईसाई कहने लगा, जब मैं वहाँ गया तो मैंने यह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! यह तेरा इज़्ज़त वाला मोमिन बंदा है, तू इसकी बरकत से मेरे लिए दो तश्तरियों में खाना भेज दे। अल्लाह तआला ने तेरा वास्ता देने पर दो तश्तरियों में खाना भिजवा दिया। लिहाज़ा पहली ख़ुशख़बरी तो यह है कि आप अल्लाह के मक़बूल बंदे हैं और दूसरी ख़ुशख़बरी यह है कि मैं कलिमा पढ़ता हूँ और मुसलमान होता हूँ। *(अल्लाहु अकबर)*

मुहब्बते इलाही से हाथ में तासीर

इसी तरह का एक और वाक़िआ किताबों में लिख है कि एक बुज़ुर्ग कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक आदमी मिला। पूछा कौन

हो? कहने लगा, मैं आग का पुजारी हूँ। दोनों ने मिलकर सफ़र शुरू कर दिया। रास्ते में बातचीत होने लगी। उस बुज़ुर्ग ने उसको समझाया कि आप बिला वजह आग की पूजा करते हैं। आग ख़ुदा नहीं, ख़ुदा तो वह है जिसने आग को भी पैदा किया है। वह न माना। इस पर उन बुज़ुर्ग को भी जलाल आ गया। उन्होंने फ़रमाया कि अच्छा अब ऐसा करते हैं कि आग जलाते हैं और दोनों अपने-अपने हाथ उस आग में डालते हैं। जो सच्चा होगा, आग का उस पर कुछ असर नहीं होगा और जो झूठा होगा तो आग उसके हाथ को जला देगी। वह भी तैयार हो गया। उस जंगल में उन्होंने आग जलाई। आग जलाने के बाद मजूसी घबराने लगा। जब उन बुज़ुर्ग देखा कि अब पीछे हट रहा है तो उन्होंने उसका बाज़ू पकड़ लिया और अपने हाथ में उसका हाथ लेकर आग में डाल दिया। उन बुज़ुर्ग के दिल में तो पक्का यक़ीन था कि मैं मुसलमान हूँ और अल्लाह तआला मेरी हक़्क़ानियत को ज़रूर ज़ाहिर फ़रमाएंगे। दीन व इस्लाम की शान व शौकत वाज़ेह फ़रमाएंगे। लेकिन अल्लाह की शान, न उन बुज़ुर्ग का हाथ जला और न उस आग की पूजा करने वाले का हाथ जला। वह आतिश परस्त बड़ा ख़ुश हुआ और यह बुज़ुर्ग दिल ही दिल में रंजीदा हुए कि यह क्या मामला हुआ। अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुए किए ऐ अल्लाह! मैं सच्चे दीन पर था, आपने मुझ पर तो रहमत फ़रमा दी कि मेरे हाथ को महफ़ूज़ फ़रमा लिया, यह आतिश परस्त तो झूठा था, आग इसके हाथ को जला दे देती। जब उन्होंने यह बात कही तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में यह बात डाली कि मेरे प्यारे! हम उसके हाथ को कैसे जलाते

जबकि उसके हाथ को आपने पकड़ा हुआ था। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह वालों के हाथों में ऐसी बरकत आ जाती है। इसीलिए फ़रमाया ﴿هم رجال لا يشقى﴾ कि वे ऐसे बंदे होते हैं कि उनके पास बैठने वाला बदबख़्त नहीं हुआ करता। जिस काम में हाथ डाले अल्लाह तआला उस काम को आसान फ़रमा दें। उनके हाथों में पेड़ों की टहनियाँ हों और दुश्मन तलवार लेकर आए तो वह टहनियाँ भी तलवारें बन जाया करती हैं–

काफ़िर है तो शमशीर पे करता है भरोसा
मोमिन है तो बे तेग़ भी लड़ता हैं सिपाही

सात आदमियों की बरकत

हदीस पाक में आता है ﴿ان لله في كل زمان﴾ सात बंदे ऐसे होते हैं कि ﴿بهم ينزلون﴾ कि उनकी बरकत से अल्लाह तआला बारिश बरसाते हैं। ﴿وبهم ينصرون﴾ उनकी बरकत से अल्लाह तआला अपने बंदों की मदद फ़रमाते हैं। ﴿وبهم يرزقون﴾ और उनकी बरकत से अल्लाह तआला अपने बंदों को रिज़्क़ देते हैं। यह ऐसे लोग हैं जिन्होंने मेहनत की होती है। उनके रग व रेशे में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत समा चुकी होती है।

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला

कुछ लोगों को यह ग़लतफ़हमी होती है कि हम इस दर्जे को कैसे पहुँच सकते हैं। मेरे दोस्तो! यह दर्जा और मक़ाम हर आदमी हासिल कर सकता है बशर्ते कि वह अपने आपको शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ ढाल ले। यह नहीं कि यह सिर्फ़ क़िस्मत में

था बल्कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस (इस मारिफ़त ख़ुदावंदी) को सबके लिए आसान फ़रमा दिया। जैसे आप में से कोई आदमी चाहे कि मैं पहलवान बन जाऊँ और वह इसके लिए अच्छी ग़िज़ा खाए, मेहनत करे और मुशक़्क़त उठाए तो कुछ दिनों के बाद उस की सेहत यक़ीनन पहले से बेहतर होगी। यही रूहानी सेहत का हाल है कि अगर कोई इंसान सच्ची-पक्की तोबा कर ले और आइंदा नेकोकारी का इरादा कर ले और सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी को ढालता चला जाए, तक़्वे की ज़िंदगी को अपना ले तो परवरदिगार उसकी रूहानी सेहत में ज़रूर बिल ज़रूर इज़ाफ़ा फ़रमा देंगे और उसे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का क़ुर्ब नसीब हो जाएगा। यहाँ एक उसूल ज़हन में रखिए कि नबुव्वत वहबी (ख़ुदादाद) चीज़ है जो सिर्फ़ अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम को नसीब होती है और विलायत कस्बी (कोशिश से हासिल होने वाली) चीज़ है जो हर आदमी मेहनत करके हासिल कर सकता है।

मुहब्बते इलाही का रंग

इंसान को जब यह मक़ाम हासिल हो जाता है तो फिर उस पर मुहब्बते इलाही का ऐसा रंग चढ़ जाता है कि उसे हर चीज़ से ज़्यादा अपने परवरदिगार की रज़ा मतलूब होती है। इसी रंग के बारे में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया ﴿صبغة الله ومن احسن من الله صبغة الله.﴾ अल्लाह का रंग और अल्लाह से बेहतर कौन है रंगने में। याद रखें कि एक रंग होता है, एक रंग बेचने वाला होता है और एक रंगाई करने वाला होता है। यह किताब व सुन्नत रंग है, उलमाए किराम रंग बेचने वाले हैं और औलिए

उज़्ज़ाम रंगाई करने वाले हैं। क़पड़े पर जिस तरह रंगाई करने वाला रंग चढ़ा देता है, उसी तरह अल्लाह वाले अल्लाह का रंग चढ़ा देते हैं—

दो रंगी छोड़ दे यक रंग हो जा
सरासर मोम हो जा या संग हो जा

मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० पर मुहब्बते इलाही का रंग

मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० क़रीब ज़माने में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उन्होंने नक़्शबंदी मशाइख़ के साए में तर्बियत पाई। उन मशाइख़ ने उनके दिल में मुहब्बते इलाही भर दी। उन्होंने दिल में अहद कर लिया कि मुसलमानों को जब तक आज़ादी नहीं मिलेगी मैं उस वक़्त तक क़लम के ज़रिए से जिहाद करता रहूँगा। इस मक़सद के लिए आप इंगलैंड तशरीफ़ ले गए। वहाँ के अख़बारों में अपने मज़मून लिखने शुरू कर दिए कि अंग्रेज़ों को चाहिए कि वे मुसलमानों को आज़ादी दे दें। उन्होंने वहाँ यह नियत कर ली कि जब तक आज़ादी नहीं मिलती मैं वापस वतन नहीं जाऊँगा। इसी हालत में कई बार उनको तकलीफ़ें भी आयीं। जेल में भी मुसीबतें सहन करना पड़ीं। उन्होंने जेल में कुछ अश'आर लिखे, फ़रमाते हैं—

तुम यूँ ही समझना फ़ना मेरे लिए है
पर ग़ैब में सामाने बक़ा मरे लिए है

पैग़ाम मिला था जो हुसैन इब्ने अली को
ख़ुश हूँ कि वह पैग़ामे क़ज़ा मेरे लिए है

यूँ अबरे स्याह पर फ़िदा हैं सभी मयकश
पर आज की घंघोर घटा मेरे लिए है
अल्लाह के रस्ते में जो मौत आए मसीहा
इक्सीर यही एक दवा मेरे लिए है
तौहीद यह है कि ख़ुदा हश्र में कह दे
यह बंदा दो आलम से ख़फ़ा मेरे लिए है

इसी क़याम के दौरान आपकी बेटी बीमार हो गई। डाक्टरों ने ईलाज करने से जवाब दिया। माँ ने अपनी जवान उम्र बेटी से पूछा, बेटी कोई आख़िरी तमन्ना हो तो बता दे। बेटी ने कहा, अब्बा जी की ज़ियारत करने को जी चाहता है। लिहाज़ा माँ ने ख़त लिखवा दिया। मरने के क़रीब बेटी का ख़त परदेस में मिला कि मैं अपनी ज़िंदगी की आख़िरी घड़ियाँ गिन रही हूँ और दिल की आख़िरी तमन्ना है कि अब्बा हुज़ूर तशरीफ़ लाएं तो मैं आपका दीदार करूं। हज़रत को जब वह ख़त मिला तो दो शे'र उसी ख़त के पीछे लिखकर वापस भेज दिया

मैं तो मजबूर सही अल्लाह तो मजबूर नहीं
तुझ से मैं दूर सही वह तो मगर दूर नहीं
तेरी सेहत हमें मंज़ूर है लेकिन उसको
नहीं मंज़ूर तो फिर हम को भी मंज़ूर नहीं

हज़रत उस्मान ख़ैराबादी रह० पर मुहब्बते इलाही का रंग

हज़रत उस्मान ख़ैराबादी रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनकी एक

दुकान थी। उनकी आदत थी कि जब कोई ग्राहक आता और उसके पास कभी कोई खोटा सिक्का होता तो वह पहचान तो लेते थे मगर फिर भी वह रख लेते और सौदा दे देते थे। उस दौर में चाँदी के बने हुए सिक्के होते थे। वह सिक्के घिसने की वजह से खोटे कहलाते थे। वह खोटे सिक्के जमा करते रहते थे। सारी ज़िंदगी यही मामूल रहा। जब मौत का वक़्त आया तो आख़िरी वक़्त उन्होंने पहचान लिया। उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर हाथ उठाकर दुआ करने लगे कि ऐ अल्लाह! मैं सारी ज़िंदगी तेरे बंदों के खोटे सिक्के वसूल करता रहा तो तू भी मेरे खोटे अमलों को क़ुबूल फ़रमा ले। *सुब्हानअल्लाह!* मुहब्बते इलाही के रंग में ऐसे रंगे हुए थे।

इश्क़ व मुहब्बत की दुकानें

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी रह० ने हज़रत शाह फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० की सोहबत में जाना शुरू कर दिया। यह ज़रा अक़्ली बंदे थे। एक बार हज़रत शाह साहब रह० ने बड़े राज़दाराना लहजे में पूछा कि मुहम्मद अली! क्या तूने कभी इश्क़ की दो दुकान देखी है? उन्होंने थोड़ी देर सोचा, फिर कहने लगे जी हज़रत! मैंने इश्क़ की दुकान देखी है, एक शाह आफ़ाक़ रह० की और दूसरी शाह अब्दुल्लाह की, गुलाम अली देहलवी रह० जो नक़्शबंदी सिलसिले के शैख़ हैं और हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० की औलाद में से है। दुकानों से मुराद ख़ानक़ाहें हैं क्योंकि इश्क़े इलाही का सौदा अल्लाह वालों की ख़ानक़ाहों से मिलता है।

इश्क़ की एक दुकान का आँखों देखा हाल

मेरे दोस्तो! अल्लाह की क़सम खाकर अर्ज़ करता हूँ, इस आजिज़ ने कभी इस तरह क़समें नहीं खायीं मगर आज मेरे जी ने चाहा कि यह बात अर्ज़ कर दी जाए कि इस आजिज़ ने भी अपनी ज़िंदगी में इश्क़ की एक दुकान देखी है, इसके गवाह हज़रत हकीम अब्दुल लतीफ़ साहब बैठे हैं। वह इश्क़ की दुकान चकवाल में देखी थी। वहाँ पीने वाले आते थे। कोई पूरब से आता कोई पश्चिम से आता, कोई पेशावर से आता था तो कोई कराची से आता था, कहीं से मुनीर साहब चले आ रहे होते थे, कहीं से हकीम अब्दुल लतीफ़ साहब चले आ रहे होते थे, कहीं से मौलाना नईमुल्लाह साहब आ रहे होते थे। कहीं से कोई इश्क़ की पुड़िया लेने आता था और कहीं से कोई इश्क़ का प्याला पीने के लिए आता था। ये इश्क़ के सौदाई, ये मुहब्बते इलाही के मंगते, ये मुहब्बते इलाही लेने वाले फ़क़ीर बेताब होकर अपने घरों से खिंचे चले आते थे।

ये वहाँ जाते थे। वहाँ एक मोहसिन और शैख़ थे जिनकी ज़िंदगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों के मुताबिक़ ढल चुकी थी, जिनका सीना इश्क़े इलाही से भर चुका था। वह इश्क़ की दवा बेचते थे। कभी किसी को तन्हाइयों में बिठाकर देते, कभी किसी से बयान करवा देते, कभी किसी को सामने बिठाकर देते, कभी किसी को डांट पिलाकर देते। जो इश्क़ की दवा पी लेते थे वे अपने सीनों में इश्क़ की गर्मी लेकर जाते थे। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि जब इन हज़रात के सीनों में उन्होंने इश्क़ की ऐसी

गर्मी भर दी तो पता नहीं कि अल्लाह तआला ने उनके अपने दिल में इश्क़ की क्या हरारत रखी होगी।

जिस क़लब की आहों ने दिल फूंक दिए लाखों
उस क़लब में या रब क्या आग लगी होगी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें उन जगहों पर बार-बार जाने की और वहाँ से इश्क़ की पुड़िया लेने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे।

मुहब्बत का सुलगना और भड़कना

मेरे दोस्तो! हमारे दिलों में मुहब्बते इलाही मौजूद तो है मगर सुलग रही है। भड़कने वाली चीज़ और होती है। कुछ लोगों के दिलों में मुहब्बते इलाही की आग भड़क रही होती है। यही फ़र्क़ एक आम आदमी और एक वली में होता है।

अल्फ़ाज़ व मानी में तफ़ावुत नहीं लेकिन
मुल्ला की अज़ां और मुजाहिद की अज़ां और

दोनों के अल्फ़ाज़ व माइने एक जैसे होते हैं, कुछ फ़र्क़ नहीं होता मगर मस्जिद में खड़े होकर अज़ान देना और बात है और जिहाद के मौक़े पर दुश्मन के सामने खड़े होकर अज़ान देना और बात है।

परवाज़ है दोनों की इसी एक जहाँ में
कुरगस का जहाँ और है शाहीं का जहाँ और

हम जैसे तो गिद्ध जैसी ज़िंदगी गुज़ारते हैं और अल्लाह वाले बाज़ की सी ज़िंदगी गुज़ारते हैं क्योंकि वे तो बुलंदी पर परवाज़ करते हैं। *(सुब्हानअल्लाह)*

फ़िक्र की घड़ी

आज इस महफ़िल में अपना हिसाब करने की ज़रूरत है कि हमारे दिलों में किसकी मुहब्बत ग़ालिब है। माल की, अपने ओहदे की, मकान की, कार की या किसी इंसान की। अगर दिल कहता है कि अभी मुहब्बते इलाही का जज़्बा ग़ालिब नहीं तो फिर वह वक़्त कब आएगा। हम अपनी ज़िंदगी के बारे में कितना वक़्त कलिमा पढ़ते गुज़ार चुके हैं अगर अभी तक यह कैफ़ियत हासिल नहीं हुई तो फिर यह कैफ़ियत हमें कब हासिल होगी—

तू अरब है है या अजम है तेरा ला इलाहा इल्लल्लाह
लुग़त ग़रीब जब तक तेरा दिल न दे गवाही

जब तक दिल गवाही नहीं देगा यह ज़बान से ला इलाहा इल्लल्लाह कहने का क्या असर समाने आएगा—

ज़बां से कह भी दिया ला इलाहा तो क्या हासिल
दिल ओ निगाह मुसलमां नहीं तो कुछ भी नहीं

हिंदू अल्लाह को राम कहते हैं। इसलिए उनके कहने वाले ने कहा—

राम राम जप दियां मेरी जिब्हां घिस गई
राम न दिल विच वसिया इंही की दहाड़ पई
गले विच माला काठ ते मनके लिए पिरो
दिल विच घुंडी पाप दी ते राम जपिया की हो

जब दिल में पाप की घुंडी होगी तो फिर राम जपने का क्या फ़ायदा होगा। इसलिए मेरे दोस्तो! दिल से इस बात का अहद करें कि ऐ अल्लाह! आज से तेरी नाफ़रमानी नहीं करेंगे, आज के बाद

तेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को नहीं छोड़ेंगे।

लोग कहते हैं कि जी क़ुरआन मजीद पढ़ते हुए एहसास नहीं होता, जी नमाज़ तो पढ़ते हैं लेकिन पता नहीं चलता। भई हमें मुहब्बत ही कहाँ है। हमें नफ़्स से मुहब्बत ज़्यादा है तभी तो हम तहज्जुद में नहीं उठते। हम आराम पसंद हैं। हमें माल से मुहब्बत ज़्यादा है इसीलिए ज़कात नहीं देते, माल से मुहब्बत ज़्यादा है इसीलिए हराम-हलाल खाते फिरते हैं। हमें खाने की ज़्यादा लज़्ज़त मिलती है इसीलिए गली बाज़ारों में जो कुछ बना हुआ है खाते फिरते हैं। कोई तहक़ीक़ नहीं होती कि कहाँ बना है और कैसे बना।

मेरे दोस्तो! एक वक़्त था कि अंदर जागता हुआ दिल होता था, अंदर का इंसान जागता था और आज अंदर का इंसान सोया हुआ है बल्कि सच कहो तो अंदर का इंसान मरा हुआ है। हमें अपनी नमाज़ों पर मेहनत करनी चाहिए क्योंकि क़यामत के दिन सबसे पहले इंसान की नमाज़ों को देखा जाएगा। यह कितनी अजीब बात है कि हमें अब यह एहसास भी नहीं रहा कि हम जो सज्दे करते हैं काश! कि वे हुज़ूरी के साथ कर लेते। इसलिए दिल में जहाँ और तमन्नाए हैं उनमें सबसे बड़ी तमन्ना यह हो कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे ऐसे सज्दे करना चाहता हूँ कि मैं उस वक़्त सब को भूला हुआ हूँ। हम अपने दिल मे सोचें कि क्या हम चार रकूअतें ऐसी पेश कर सकते हैं कि जिनमें तकबीरे तहरीमा से लेकर सलाम फेरने तक ग़ैर का ख़्याल न आया हो। यक़ीनन हमारे लिए अपनी ज़िंदगी में ऐसी चार रकूअतें ढूंढतना मुश्किल हैं।

अगर आज हम अपनी नमाज़ों पर मेहनत कर लें तो मेरे दोस्तो! इसी नमाज़ के पढ़ने से हमारी परेशानियों के हल निकल सकते हैं। हमने अपनी नमाज़ पर मेहनत नहीं की होती। खड़े मस्जिद में होते हैं और दिल व दिमाग़ घर में पहुँचा हुआ होता है। कई ऊट-पटांग ख़्याल जो आम वक़्त में नहीं आते ठीक नमाज़ की हालत में आ जाते हैं। मेरे दोस्तो! ये बेजान सज्दे कब तक हम करते रहेंगे? अल्लाह से यूँ मांगें कि ऐ अल्लाह! हमें हुज़ूरी वाली नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। हम ऐसी नमाज़ पढ़ने वाले बन जाएं जिसमें किसी ग़ैर का ख़्याल न आए। किसी शायर ने क्या ही अच्छी बात कही—

तर्जुमा : कि जब मैंने ज़मीन पर सज्दा किया तो ज़मीन से आवाज़ आई कि ऐ दिखावे के सज्दे करने वाले! तूने मुझे भी ख़राब कर डाला।

मैं जो सर बसज्दा हुआ तो ज़मीं से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

मेरे दोस्तो! हमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रज़ा के लिए इबादत करनी चाहिए। नियाज़ फ़त्ही ने क्या ख़ूब फ़रमाया—

बंदगी से हमें तो मतलब है
हम सवाब ओ अज़ाब क्या जानें
किस में कितना सवाब मिलता है
इश्क़ वाले हिसाब क्या जानें

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें अपनी सच्ची-पक्की मुहब्बत नसीब फ़रमा दे—

या रब दिले मुस्लिम को वह ज़िंदा तमन्ना दे
जो क़ल्ब को गरमा दे जो रूह को तड़पा दे

भटके हुए आहू को फिर सूए हरम ले चल
इस शहर के ख़ूगर को फिर वुसअते सहरा दे

इस दौर की ज़ुलमत में हर क़ल्ब परेशां को
वह दाग़े मुहब्बत दे जो चाँद को शर्मा दे

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मैराज

الحمد للّٰہ و کفی وسلام علی عبادہ الذین اصطفیٰ اما بعد

فاعوذ باللّٰہ من لاشیطن الرجیمo

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم o

سبحان الذی اسریٰ بعبدی لیلا من المسجد الحرام الی المسجد الاقصا الذی برکنا حولہٗ لنریہٗ من ایتنا ط انہٗ ھو السمیع البصیر o سبحان ربك رب العزۃ عما یصفون o وسلام علی المرسلین o والحمد للّٰہ رب العالمین.

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़ाम

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सैय्यदुल अव्वलीन वल् आख़िरीन, इमामुल अंबिया, इमामुल मलाइका, इमामुल कुल बनाकर भेजा। आपको वे इज़्ज़ते और बुलंदियाँ बख़्शी कि जिन पर इंसान तो क्या फ़रिश्ते भी अश-अश कर उठे।

किन दिनों को याद करने का हुक्म दिया गया है?

आज की यह महफ़िल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैराज के वाक़िए के बारे में कुछ बातचीत सुनने के लिए लगाई

गई है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें इस बात का हुक्म दिया है कि ऐसे वाक़िआत जिनसे अल्लाह तआला की याद दिल में आए उनका हम आपस में ज़िक्र करते रहा करें। ﴿وذكرهم بايام الله﴾ तुम अल्लाह के दिनों का उनसे ज़िक्र करते रहा करो।

इस्लामी महीनों में क़ुर्बानियाँ

आप ग़ौर कीजिए कि इस्लामी साल की शुरूआत मुहर्रम से हुई। इस महीने में क़ुर्बानियों की यादें ताज़ा होती हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को 10 मुहर्रम के दिन आग में डाला गया, सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को 10 मुहर्रम के दिन सज्दे की हालत में शहीद किया गया। इस्लामी साल का आख़िर ज़िलहिज्जा पर हुआ तो उसमें भी क़ुर्बानियाँ हैं। इस महीने में सैय्यदना इस्माईल अलैहिस्सलाम ने क़ुर्बानी दी। अल्लाह तआला ने उनके बदले एक जानवर को क़ुर्बानी के लिए क़ुबूल फ़रमाया तो इस्लामी साल के शुरू में भी क़ुर्बानी और आख़िर में भी क़ुर्बानी। अगर इस्लामी साल का बीच देखें तो रजब महीना बनता है। यह महीना इंसानियत के शर्फ़ और इन्सानियत की बुलंदी के उजागर होने का महीना है। इसकी सत्ताइसवीं रात में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने पास अर्श से ऊपर बुलाया और वह मक़ाम अता किया जिस पर फ़रिश्ते हैरान रह गए। फिर साल का जो पहला आधा हिस्सा है उसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने रबिउल अव्वल के महीने में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत मुबारक फ़रमाई और जो दूसरा आधा हिस्सा है उसे अल्लाह तआला ने रमज़ान के ज़रिए सआदत

अता फ़रमाई तो पूरे इस्लामी साल में कुछ महीने और कुछ दिन परवरदिगार की ख़ास रहमतें अपने में रखते हैं।

नबुव्वत का ऐलान

यह बात खुली हुई है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चालीस साल की उम्र में नबुव्वत का इज़्हार फ़रमाया। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम तो आप से पहले भी थे। फ़रमाया :

﴿كنت نبيا و آدم بين الماء والطين.﴾

मैं तो उस वक़्त भी नबी था जब कि आदम अभी गारे और मिट्टी में थे।

नबुव्वत का इज़्हार अलबत्ता चालीस साल की उम्र में हुआ। गोया 12 रबिउल अव्वल को मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रुनुमाई हुई फिर चालीस साल के बाद मुहम्मदुर्रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जलवा नुमाई हुई।

नबुव्वत के ऐलान के बाद अज़ीज़ों का हाल

जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत का ऐलान फ़रमाया वे लोग जो आपकी तारीफ़ करते थे और अज़ीज़ रिश्तेदार थे वे सब के सब आप की मुख़ालिफ़त में सरगर्म हो गए। उन्होंने आपको तकलीफ़ पहुँचाने में कोई कसर न छोड़ी। सब के सब आपस में जमा होकर मश्वरा करते कि हम किस तरह आपको तकलीफ़ें पहुँचा सकते हैं।

शैबे अबि तालिब का वाक़िआ

एक ऐसा वक़्त आया कि क़ुरैशे मक्का ने यह सोचा कि क्यों न हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके क़रीबी लोगों का समाजिक बाइकाट कर दें। कोई आदमी न उनसे सामान का लेन-देन करे और न उनके साथ मेल-मिलाप रखे ताकि इसकी वजह से क़रीबी रिश्तेदार भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ दें। नबुव्वत के ऐलान के सातवें साल का वाक़िआ है कि उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके अज़ीज़ व अक़ारिब को मक्का शहर के बाहर की तरफ़ धकेल दिया। एक पहाड़ की घाटी थी जिसे शोबा अबि तालिब कहा जाता था। आप और दूसरे अज़ीज़ अक़ारिब सब वहीं आकर घिर गए। मक्का के लोग वहाँ जाते नहीं थे और ज़िंदगी गुज़ारने की वहाँ कोई सहूलत नहीं थी। बच्चे प्यास की ज़्यादती की वज़ह से बिलखते थे, माँओं के सीनों में दूध न रहा जो उन बच्चों को पिलाया जाता। काफ़िर लोग तमाशा देखते। उन लोगों के दिल ऐसे पत्थर बन चुके थे कि वह टस से मस नहीं होते थे कि उन मासूम बच्चों पर रहम खाकर उनकी ज़रूरियाते ज़िंदगी का इंतिज़ाम कर दिया जाता। यहाँ तक कि एक बार हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के एक क़रीबी रिश्तेदार कोई खाने की चीज़ लेकर आपको देने के लिए आए तो क़ुरैश मक्का ने उनको भी रास्ते में रोक लिया कि तुम यह नहीं दे सकते। न ख़ुद चीज़े देते थे और न किसी दूसरे को ये चीज़े देने दिया करते थे। लिहाज़ा तीन साल बहुत मुश्किल से कटे।

'वही इलाही' या ग़ैब से आपकी मदद

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर 'वही' नाज़िल फ़रमाई कि क़ुरैश मक्का ने बाइकाट का जो मुआहिदा लिखा था उसको तो दीमक खा गई और उसमें सिर्फ़ 'अल्लाह' का लफ़्ज़ बचा है। आपने यह बात अपने चचा को बताई और उन्होंने क़ुरैश मक्का की तरफ़ यह पैग़ाम भेजा कि जाओ जो बाइकाट का मुआहिदा तुमने बैतुल्लाह में लगाया था देखो कि दीमक ने उसे चाट लिया है और सिर्फ़ 'अल्लाह' का लफ़्ज़ बाक़ी बचा है। जब उन्होंने जाकर देखा तो वाक़िआ ऐसा ही था। लिहाज़ा अब उनमें से कुछ ऐसे थे जिन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि यह बाइकाट और नहीं रहेगा। हम अपनी रिश्तेदारी का पास करते हुए कुछ न कुछ उनसे मेल-मिलाप ज़रूर रखेंगे। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने 10 नबवी में आपको इस परेशानी के माहौल से निकाल लिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा का आपके साथ रवैय्या

एक परेशानी ख़त्म हुई थी कि अगली परेशानियाँ शुरू हो गयीं। कुछ अरसे के बाद क़ुरैश मक्का आए और आपके चचा से कहा कि देखिए, आपके भतीजे हमारे माबूदों को बुरा कहते हैं। हम चाहते हैं कि अगर यह माल चाहते हैं तो हम उनको पूरे मक्का का माल इकठ्ठा करके दे देंगे, अगर यह सरदारी चाहते हैं तो हम आज के बाद इनको अपने क़ुरैश क़बीले का सरदार बना

देते हैं और अगर यह चाहते हैं कि इनको सबसे ख़ूबसूरत लड़की का रिश्ता मिल जाए तो पूरे मक्का की नौजवान लड़कियों में से जिसकी तरफ़ इशारा करें हम उसी का रिश्ता उनसे करने को तैयार हैं। चचा ने आपको बुलाया और क़ुरैश मक्का की पूरी बात आपको सुनाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चचा! अगर यह लोग मेरे एक हाथ पर चाँद और दूसरे हाथ पर सूरज भी रख दें तो जो पैग़ाम में पहुँचाने के लिए आया हूँ उसको पहुँचाने से बाज़ नहीं आऊँगा। क़ुरैश मक्का उठकर चले गए और उनके दिलों में ग़ुस्सा और बढ़ता चला गया।

ग़म का साल

यही साल था कि आपके चचा फ़ौत हो गए। वह आपके लिए बड़ा सहारा थे। अभी कुछ अरसा गुज़रा था कि आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा भी अल्लाह को प्यारी हो गईं। लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको 'आमुल हुज़्न' (ग़म के साल) का नाम दिया कि यह मेरे लिए ग़म का साल था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहतरम बीवी भी वफ़ात पा गयीं और चचा भी वफ़ात पा गए तो अब क़ुरैश मक्का के लिए मैदान खुला था। उन्होंने रिश्तेदारियों के लिहाज़ को ताक़ पर रखते हुए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और तकलीफ़ें पहुँचानी शुरू कर दीं।

ताएफ़ का सफ़र

जब आप अपने रिश्तेदारों से बहुत ज़्यादा परेशान हो गए तो

दिल में बात आई कि ज़रा बाहर वालों को भी आज़मा लिया जाए। मुमकिन है अल्लाह तआला उनके लिए हिदायत का रास्ता खोले। लिहाज़ा आप ताएफ़ में तश्रीफ़ ले गए। वहाँ तीन भाई थे। तीनों को अपनी-अपनी एक बिरादरी और इलाक़ा था। आप उन तीनों सरदारों के पास तश्रीफ़ ले गए। एक ने बात सुनकर कहा अगर आप को अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा है तो फिर काबे का पर्दा जल्दी ही चाक होने वाला है। दूसरे ने बात सुनकर कहा कि अल्लाह तआला को आपके अलावा कोई और नहीं मिला? किसी और को नबी बनाकर भेज देता। तीसरा ज़रा मुनासिब सा आदमी था। उसने कहा अगर तो आप अल्लाह के नबी हैं तो फिर आपसे बात करना अदब के ख़िलाफ़ है और अगर आप नबी नहीं हैं तो मैं आपसे बात करना पसंद नहीं करता कि मैं झूठे आदमी से बात करूं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वहाँ से दिल टूट गया। जब वहाँ से वापस आने लगे तो उन्होंने कुछ शरारती लड़कों को पीछे लगा दिया। लड़कों ने आप पर पत्थर फेंके। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जूते मुबारक ख़ून से भर गए। आप सारे दिन के थके हुए थे। कुछ खाया-पिया नहीं था। आप वहाँ से वापस आने लगे तो एक जगह रुके और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक तारीख़ी दुआ फ़रमाई। आपने कहा :

ऐ मेरे अल्लाह! क्या आप मुझसे नाराज़ हैं जो आपने मुझे इन लोगों के हवाले कर रखा है। ऐ अल्लाह! अगर आप नाराज़ हैं तो आपको उस वक़्त तक मनाना ज़रूरी है जब तक कि आप राज़ी न हो जाएं और ऐ अल्लाह! मैं तेरे चेहरे

के उस नूर के तुफ़ैल मांगता हूँ जिससे तमाम अंधेरे रोशन हो गए।

लिहाज़ा अल्लाह की बारगाह में यह दुआ ऐसी क़ुबूल हुई कि फ़रिश्ते नीचे उतरे और कहने लगे कि ऐ अल्लाह के महबूब! अगर आप इर्शाद फ़रमा दें तो इस बस्ती वालों का नाम व निशान मिटाकर रख दिया जाए। ऐसी आंधी चलेगी कि इनका नाम नहीं रहेगा। आप चाहें तो इन दो पहाड़ों को आपस में टकरा दिया जाए और इनको बीच में पीस दिया जाएगा। मगर अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ये लोग मुझे नहीं पहचानते, मुमकिन है कि इनकी आने वाली औलादों में से कुछ लोग कलिमा पढ़ने वाले बन जाएं। सुब्हानअल्लाह ﴿اللهم اهدى قومى فانهم لا يعلمون.﴾ ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को हिदायत अता फ़रमा यह मुझे नहीं पहचानते हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताएफ़ से वापस तशरीफ़ ले आए तो आप का ग़म और ज़्यादा हो गया। आप के दिल में कुढ़न और बढ़ गई। अपनों का सुलूक भी देख लिया और ग़ैरों का सुलूक भी देख लिया। गोया दुश्मनों ने आपको तकलीफ़ पहुँचाने में वह सब कुछ कर दिया जो वे कर सकते थे।

फ़रिश्ता जिब्राईल अलैहिस्सलाम की आमद

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़मज़दा हालत में उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए और एक अजीब दुआ मांगी। फ़रमाया, काश! मेरा कोई दोस्त होता जो मेरा साथ देता, कोई मेरा रफ़ीक़ होता जो ग़मख़्वारी करता, कोई मेरा ऐसा यार

होता जो मेरी दिलदारी करता। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से ये बोल निकले और इसी ग़म में आप सो गए। अभी रात का वक़्त बाक़ी था और आप सोए हुए थे कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ﴿ان اللّٰه يقرئك السلام ويدعك.﴾ अल्लाह तआला आपकी तरफ़ सलाम भेजते हैं और आपको अपनी तरफ़ दावत देते हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत खुश होकर हज़रत जिब्राईल को देखा और सलाम का जवाब दिया। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने दूसरा फ़िक़रा फिर कहा ऐ अल्लाह के महबूब! ﴿ان ربك يشتاق اليك.﴾ आप का परवरदिगार आपसे मुलाक़ात के लिए बहुत मुश्ताक़ है। आप तशरीफ़ ले चलिए। लिहाज़ा आप तशरीफ़ ले आए। वहाँ से आपका 'शक़्क़े सदर' (सीना चाक) हुआ। आपके दिल मुबारक को खोलकर अल्लाह तआला की ख़ुसूसी रहमतों से भर दिया गया। जैसे हम लोगों को नमाज़ से पहले परवरदिगार ने वुज़ू करने का हुक्म अता फ़रमाया है। उस फ़ख़्रे इन्सानियत की यह नमाज़ थी जिसके लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसके दिल का वुज़ू करवाया। उनके दिल को धोया गया। यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ नमाज़ भी अदा फ़रमाई। फिर आप को वहाँ से लेकर आगे पहुँचाया गया।

सफ़र की शुरूआत

आपके लिए जो सवारी लाई गई जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया कि ऐ अल्लाह के नबी! उसका नाम बुर्राक़ है। बुर्राक़ बर्क़

से बना जो बर्क़ रफ़्तार से चलने वाला हो। ऐसी सवारी जो बिजली की तरह तेज़ी से चले। तो बुर्राक़ आप के लिए लाया गया। आप बुर्राक़ पर सवार हुए और बैतुल हराम से बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ चले। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपको सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया, ऐं अल्लाह के नबी! यह रहमत व बरकत की वादी है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ भी नमाज़ अदा फ़रमाई। फिर जब आप तशरीफ़ ले गए तो रास्ते में कोहे तूर पर भी आपका थोड़ी देर ठहरना हुआ यहाँ तक कि आप मस्जिदे अक़्सा तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद में अंबियाए किराम की इमामत

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देखते हैं कि मस्जिदे अक़्सा में तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम मौजूद हैं। सफ़ बंधी हुई है। जिब्राईल अमीन अर्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह के महबूब! मुक़्तदी तो सफ़ों में खड़े हो चुके हैं। इमाम की ज़रूरत हैं। आप तशरीफ़ ले आए हैं, आप इमामत फ़रमाइए ताकि सब के सब अंबिया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इक़्तिदा कर सकें। लिहाज़ा आपने वहाँ पर नमाज़ पढ़ाई। अल्लाह तआला ने गोया आपको इमामुल अंबिया बना दिया।

मेराज का सफ़र

जब आपने नमाज़ अदा कर ली तो उसके बाद आप को एक दूसरी सवारी पेश की गई। हदीसों में उसका नाम 'रफ़रफ़' आता है। रफ़रफ़ का अगर उर्दू तर्जुमा किया जाए तो इसका मतलब

एक ऊँचाई की तरफ़ ले जाने वाली सीढ़ी बनेगा और इंगलिश में तर्जुमा किया जाए तो इसका तर्जुमा 'ऐलिवेटर' बनेगा। यह दूसरी सवारी ऐलिवेटर की तरह थी जिसमें अगर इंसान सवार हो जाए तो वह इंसान को बुलंदियों की तरफ़ ले जाती है। बुर्राक़ आपको मक्के से लेकर मस्जिदे अक़्सा तक पहुँचाता है। इस पहले सफ़र को अरबी में 'असरा' कहा गया है। असरा का लफ़्ज़ी मतलब रात को सफ़र करना है। सफ़र के दूसरे हिस्से को मैराज कहा गया है। मैराज के लफ़्ज़ी माइने ऊँचाई और बुलंदी की तरफ़ जाना है। मैराज उरूज से है गोया आपको वहाँ से उरूज नसीब हुआ। जिब्राईल अलैहिस्सलाम साथ थे। आप ऊपर गए यहाँ तक कि पहले आसमान से भी ऊपर, दूसरे आसमान से भी ऊपर, तीसरे आसमान से भी ऊपर, चौथे आसमान से भी ऊपर, सातवें आसमान से भी ऊपर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए। यहाँ तक कि आप अर्श से ऊपर तशरीफ़ ले गए। आपको रास्ते में मुख़्तलिफ़ अजाएबात दिखाए गए।

एक जगह वह भी आई जहाँ लौह व क़लम थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको भी अपनी आँखों से देखा। फ़रिश्तों को भी देखा जो बैठे हुए आमाल के अज्र वहाँ लिख रहे थे। उनको क़लमों की आवाज़ को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुना। फिर आप को वहाँ पर जन्नत व दोज़ख़ के नज़ारे दिखाए गए।

जन्नत के नज़ारे

रिवायत में आता है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने जन्नत के नज़ारों को देखा कि कुछ लोग हैं जिन्होंने खेती की। उनकी खेती उसी वक़्त पक कर तैयार हो गई। वे उसको काटते हैं। दोबारा उनकी खेती फिर बड़ी हो जाती है तो आपने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा कि यह क्या मामला है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! यें नेक लोगों की मिसाल है जिन्होंने नेक अमल किए वे अपने आमाल का बदला पाते हैं। ज़िंदगी में उसकी बकरतें उनको बार-बार मिलती चली जाती हैं। इसी हाल में आपने सुना किसी के क़दमों की आवाज़ आ रही है तो अल्लाह के महबूब बड़े हैरान हुए। पूछा, जिब्राईल! यह किसके चलने की आवाज़ है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! यह आपके ग़ुलाम बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़मीन पर चलने की आवाज़ है मगर क़दमों की चाप यहाँ सुनाई जा रही है। आपने पूछा कि क़दमों की चाप यहाँ क्यों सुनाई जा रही है? अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! वह आपका ग़ुलाम अल्लाह के यहाँ वह मक़ाम रखता है कि फ़र्श पर उसके क़दम पड़ते हैं, अर्श पर उसके क़दमों की चाप सुनाई देती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपको अपने ग़ुलामों के भी मुक़ामात दिखा दिए।

जहन्नम के नज़ारे

फिर आप को जहन्नम के कुछ नज़ारे दिखाए गए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि कुछ लोग ऐसे थे कि जिनके होंट काटे जा रहे थे। एक फ़रिश्ता कैंची लेकर खड़ा है। लोगों के होंट ऊँटों की तरह हैं जो लम्बे और लटक रहे हैं। और उनके होंट फ़रिश्ते काटते चले जा रहे हैं। पूछा जिब्राईल! यह

क्या मामला है? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! ये वे लोग हैं जो फ़ित्ना परवाज़ (फैलाते) थे और दुनिया में ऐसी-ऐसी बातें किया करते थे जिससे लोगों में फ़ित्ने फैलते थे। इधर की सुनी उधर लगा दी। कोई बात कानों में पड़ी, सुनी सुनाई पर यक़ीन करके दूसरें से बदगुमानी शुरू कर दी। कुछ अपनी तरफ़ से दास्तान सजाने के लिए मिला लिया। ये फ़ितना फैलाने वाले लोग थे। इनके होंटों को ये फ़रिश्ते कैंची से कुतर रहे हैं।

फूट डालने वालों का अंजाम

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि एक फ़रिश्ता एक आदमी का गला दबा रहा है। जब फ़रिश्ता उसका गला दबाता है तो उसे सख़्त तकलीफ़ होती है। फिर फ़रिश्ता छोड़ देता है। फिर गला दबाता है फिर छोड़ देता है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिब्राईल! यह क्या मामला है? जवाब दिया कि ऐ अल्लाह के नबी! ये आपकी उम्मत के वे बयान और तक़रीर करने वाले और ख़िताब करने वाले हैं जो ऐसी बातें करते थे कि उम्मत को टुकड़ों में बांट दिया करते थे। आज उनके गलों को दबाया जा रहा है कि तुम्हें अल्लाह तआला ने बोलने की ताक़त इसलिए तो नहीं दी थी कि उम्मत को इकठ्ठा करने के बजाए उम्मत को टुकड़े-टुकड़े कर दो। उनके साथ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह मामला फ़रमा दिया।

झूठी गवाही देने वाले का अंजाम

फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि कुछ

लोग हैं जिनका धड़ तो इंसानों की तरह है मगर उनका चेहरा सुअर की तरह है। हैरान होकर पूछने लगे, जिब्राईल अमीन! यह क्या मामला है? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! ये झूठी बातों की गवाही देने वाले लोग थे। लिहाज़ा आज दुनिया में देखिए कि इंसान अपने दोस्त की दोस्ती की ख़ातिर हाँ में हाँ मिला देता है जबकि वह ग़लत बयानी होती है, वह झूठी गवाही होती है। क़यामत के दिन अल्लाह तआला झूठी गवाही देने वाले की सुअर की शक्ल में बदल देंगे। तब पता चलेगा कि हमने झूठी गवाहियाँ कैसे दी थीं।

ख़ाविंद के साथ बदसुलूकी करने वालियों की सज़ा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि कुछ औरतें कुत्तो की तरह चीख़ती और आवाज़ निकालती हैं, विलाप करती हैं, बिखरे बाल हैं, बुरा हाल है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, जिब्राईल अमीन! ये कौन हैं? फ़रमाया अल्लाह के महबूब! ये वे औरतें हैं जो दुनिया में अपने ख़ाविन्दों के साथ ज़बान चलाती थीं, जो ख़ाविन्दों को कढ़वे जवाब देती थीं, ज़रा सी बात पर गोया ईंट का जवाब पत्थर से देती थीं। ये ख़ाविन्द की इताअत के बजाए और उनके साथ अच्छा सुलूक करने के बजाए उनको जली कटी सुनाती थीं। आज अल्लाह तआला ने ये सज़ा दी कि ये कुत्तों की तरह आवाज़े निकाल रही हैं।

घमंड करने वाले का अंजाम

फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि कुछ लोग हैं जिनके क़द छोटे हैं और उनके ऊपर पहाड़ रखा जाता है

और वे पहाड़ के नीचे कुचले जाते हैं। फिर उनके क़द ठीक हो जाते हैं, फिर पहाड़ उनके ऊपर गिराया जाता है। पूछा जिब्राईल! यह क्या है? जवाब दिया, ऐ अल्लाह के नबी! ये आपकी उम्मत के घमंडी हैं। ये वे लोग हैं जो दुनिया में अपने आपको बड़ा समझते थे। घमंड करते थे कि जी हम जैसा कौन है? हम ये कर देंगे और वह कर देंगे। अल्लाह तआला क़यामत के दिन तक उनको इसी तरह ज़लील व रुसवा करेंगे।

बेईमानी का अंजाम

फिर आप ने देखा कि कुछ लोग हैं जिनके सर पर बहुत बड़े गठ्ठर, बड़े-बड़े बोझ लदे हुए हैं जबकि वह बोझ उनसे उठाया नहीं जाता। वे बोझ की वजह से गिरते हैं। फ़रिश्ते फिर वह बोझ उठाकर उनके सर पर रख देते हैं। पूछा जिब्राईल अमीन! यह क्या है? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! ये आपकी उम्मत के वे लोग हैं जो अमानत में ख़्यानत करने वाले थे। लोग इनको अमानतें देते थे और वे अमानत का सही इस्तेमाल करने के बजाए उनमें ख़्यानत कर लेते थे। आज उनके सरों पर इतने-इतने भारी गठ्ठर रखे हुए हैं।

बेनमाज़ी का अंजाम

फिर आपने देखा कि कुछ लोग हैं जिनके माथे पर पत्थर मारे जा रहे हैं और उनका सर कुचल दिया जाता है। वे तकलीफ़ पाने के बाद ठीक हो जाते हैं तो फ़रिश्ता फिर दोबारा पत्थर उठाकर उनके माथे पर मारता है फिर सर कुचल जाता है। पूछा जिब्राईल!

यह क्या मामला है? अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के महबूब! ये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के बेनमाज़ी हैं जो अपने माथे को अल्लाह तआला के सामने नहीं टेका करते थे, जो अपनी माथों को नहीं झुकाया करते थे। आज फ़रिश्ते उनकी खोपड़ी को चूरा-चूरा कर रहे हैं।

ज़िनाकारी का अंजाम

नबी अकरम ने देखा कि कुछ लोग हैं कि जिनके सरों के ऊपर शर्मगाहें हैं जिनसे पीप निकल रही है। वे उसको पी रहे हैं। पूछा, जिब्राईल! ये कौन हैं? अर्ज़ किया, ऐ मेरे महबूब! ये आपकी उम्मत के ज़ानी हैं। वह मर्द जिन्होंने ज़िना किया और वे औरतें जो ज़िना करवाने वाली थीं उनके सर पर आज शर्मगाहें हैं जिनसे पीप निकल रही है और ये पी रहे हैं।

ग़ीबत करने वालों का अंजाम

कुछ लोग थे जो अपना गोश्त काटकर खा रहे हैं। पूछा जिब्राईल अमीन! ये कौन हैं? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! ये आपकी उम्मत की ग़ीबत करने वाले लोग हैं। आज उन्हीं का गोश्त काटकर उनको खिलाया जा रहा है। ये दुनिया में अपने भाईयों की ग़ीबत किया करते थे।

आगे का सफ़र

आपने जन्नत की रहमतें भी देखीं, जहन्नम के मंज़र भी देखे। फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उससे भी बुलंदी

अता फ़रमाई गई यहाँ तक कि अर्श के ऊपर जाने के लिए एक ऐसी जगह आई जहाँ हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम रुक गए। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! यहाँ तक मेरा साथ था। इससे आगे अल्लाह तआला की जलालते शान का यह हाल है कि मैं अगर एक क़दम भी आगे बढ़ाऊँ तो मेरे पर जल जाएंगे। गोया महबूब को मुलाक़ात के लिए जब बुलाया गया तो लाने वाले ने दरवाज़े तक तो पहुँचा दिया और कहा कि आगे आप को अपने महबूब से मिलने के लिए इख़्तियार है। आप अकेले जाएं क्योंकि मुहिब अपने महबूब से मिलने के लिए तन्हाई चाहता है।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम को दूसरी बार देखना

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि नबी अकरम ने दो दफ़ा जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उनकी असली शक्ल में देखा। एक बार ग़ारे हिरा में नबुव्वत के आग़ाज़ के वक़्त और दूसरी बार मैराज के मौक़े पर देखा। इर्शाद बारी तआला है ﴿ولقد راٰه نزلة اخرى.﴾ अलबत्ता तहक़ीक़ आपने जिब्राईल को दूसरी दफ़ा नीचे उतरते हुए देखा। ﴿عند سدرة المنتهى﴾ सिदरतुल मुन्तहा के पास ﴿عندها سدرة الماوٰى﴾ उसके पास ही जन्नत मावा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने सिदरतुल मुन्तहा के मक़ाम पर जिब्राईल अलैहिस्सलाम को असली शक्ल में देखा और उसके छः सौ पर थे। मुझे उसको पहचानने में किसी क़िस्म का झिझक नहीं हुआ। फिर सिदरतुल मुन्तहा के बारे में फ़रमाया कि यह जन्नतुल मावा के पास है। इसी से सबित होता है कि

जन्नत सातों आसमानों के ऊपर है। इसके तमाम तब्क़ात दर्ज़ा-ब-दर्जा ऊपर की तरह जाते हैं और आख़िर में जन्नतुल फ़िरदौस है जिस पर अर्शे इलाही का साया पड़ता है।

सिदरतुल मुन्तहा की कैफ़ियत

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैराज तशरीफ़ ले गए तो उस वक़्त सिदरत पर एक ख़ास क़िस्म के अनवार व तजल्लियाँ वारिद हो रही थीं और पेड़ों के पत्तों पर सुनहरे परवाने जगमगा रहे थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मख़्लूक़ में से कोई भी उसके हुस्न व जमाल की तारीफ़ बयान नहीं कर सकता जो उस वक़्त सिदरत पर तारी हो रहे थे। इर्शादे बारी तआला है ﴿اذ يغشى السدرة ما يغشى﴾ जब ढांप लिया सिदरत को उस चीज़ ने जिसने ढांप लिया। यह मुशाहिदा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वाज़ेह था मगर आपने इधर-उधर ग़ैर-ज़रूरी तौर पर न देखा। इर्शाद बारी तआला है ﴿ما زاغ البصر وما طغى﴾ न तो निगाह इधर-उधर हुई और न ही हद से बढ़ी। आपने निहायत इत्मिनान के साथ इस कैफ़ियत का मुशाहिदा किया। इर्शादे बारी तआला है ﴿لقد راى من ايٰت ربه الكبرىٰ﴾ तहक़ीक़ आपने अपने परवरदिगार की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।

सिदरत बेरी के पेड़ को कहते हैं। बाज़ रिवायतों से पता चलता है कि उस बेरी की जड़ छठे आसमान पर है और उसकी शाख़ें सातवें आसमान से आगे निकली हुई हैं। इस पेड़ के हर पत्ते पर फ़रिश्ते तस्बीह करते हैं। उस पेड़ को सिदरतुल मुन्तहा इसलिए कहते हैं कि उसे नीचे और ऊपर के बीच एक संगम की

हैसियत हासिल है। ऊपर से नाज़िल होने वाला हुक्म यहाँ रह जाता है और नीचे किसी और कैफ़ियत के साथ वारिद होता है। इसी तरह नीचे से ऊपर जो कुछ जाता है वह यहाँ आकर रुक जाता है। गोया कह सकते हैं कि यह पेड़ आलमे ख़ल्क़ और आलमे अम्र के बीचे एक संगम है। इस पेड़ को बनी नौ इंसान के साथ ताल्लुक़ है। इसी हदीस पाक में आया है कि मैय्यत को गुस्ल देने के लिए बेरी के पत्ते डाल लिया करो।

चार नहरें

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैराज के मौक़े पर मैंने उसे पेड़ की जड़ में चार नहरें देखीं। मैंने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा कि ये कैसी नहरें हैं? उसने बताया कि दो नहरें कौसर और सलसबील हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद में है। क़यामत के दिन उसी कौसर का पानी परनालों के ज़रिए हौज़े कौसर में डाला जाएगा जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उम्मतियों को पिलाएंगे। बाक़ी दो नहरें दरियाए नील और फ़रात के साथ ताल्लुक़ रखती हैं जिस तरह समुंदर के ज्वार-भाटे का ताल्लुक़ चाँद से है।

अल्लाह तआला का दीदार

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि ﴿ولقد راٰه نزلة اخریٰ﴾ से बाज़ मुफ़स्सिरीन ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को देखना मुराद लिया है लेकिन बाज़ मुफ़स्सिरीन ने बारी तआला का दीदार मुराद लिया है। ﴿لقد رای محمد ربه مرتین﴾ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने अपने रब को दो बार देखा। तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत में एक दफ़ा आँख से देखा और एक दफ़ा दिल से। तिबरानी और मुस्लिम की रिवायतों में भी ऐसे ही अल्फ़ाज़ आते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हुम की रिवायतों से भी यही मालूम होता है। अलबत्ता हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा इसका सख़्ती से इंकार करती हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा दीदारे बारी तआला के ख़िलाफ़ हैं। हज़रत सरूक़ ने हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि आप दीदार का इंकार किस बिना पर करती हैं? उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह तआला का फ़रमान है–

﴿لا تدركه الابصار وهو يدرك الابصار.﴾

आँखें अल्लाह तआला को नहीं पा सकतीं अलबत्ता वह आँखों को पा लेता है।

ग़ौर किया जोए तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की इस दलील को दावे के साथ पूरी मुताबक़त नहीं है क्योंकि इस आयत में इदराक की नफ़ी है न कि देखने की और इदराक का मतलब है किसी चीज़ का मुकम्मल इहाता कर लेना और यह वाक़ई अल्लाह तआला की ज़ात का या सिफ़ात का मुमकिन नहीं। वह तो ग़ैर महदूद ज़ात है। लिहाज़ा उसका पूरा इहाता न दुनिया में हो सकता है न आख़िरत में। अलबत्ता दीदार का मस्अला दूसरा है जिसकी गवाहियाँ मौजूद हैं। जहाँ तक आख़िरत में दीदार का मामला है तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन

मसऊद भी यही ऐतिक़ाद रखते हैं कि जन्नत में तमाम ईमान वालों को अल्लाह का दीदार नसीब होगा मगर बे-जहत और बे-कैफ़ बे-शुब्हा और बे-मिसाल होगा। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि

﴿انكم لن تروا ربكم حتى تموتوا.﴾

तुम मरने से पहले अपने परवरदिगार को नहीं देख सकते।

यानी यह दीदार तब नसीब होगा जब मरकर अगले जहान में पहुँच जाएंगे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने भी कोहे तूर पर अल्लाह तआला से दीदार की दरख़्वास्त की थी तो जवाब आया था ﴿لن ترانى﴾ तुम मुझे देखने की ताक़त नहीं रखते। फिर जब अल्लाह तआला ने पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो वह रेज़ा-रेज़ा हो गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर गए। मतलब यह है कि इस आलमे दुनिया में अल्लाह का दीदार मुमकिन नहीं। फिर भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो दीदार नसीब हुआ वह दूसरे जहाँ में हज़ीराए अक़्दस में हुई थी। लिहाज़ा इस दीदार में कोई इश्काल वारिद नहीं होता।

हज़रत शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सर की आँखों से अपने परवरदिगार को देखा। इमाम अहमद बिन हंबल रह० भी इस दीदार के क़ायल हैं। किसी ने आपके सामने ज़िक्र किया कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा तो इस दीदार का इंकार करती हैं तो आपने फ़रमाया कि मैं उनकी बात का जवाब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात से देता हूँ। नबी

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह क़ौल सही सनद के साथ साबित है कि ﴿رایتُ ربی عزوجل.﴾ मैंने अपने परवरदिगार को देखा। यह क़ौल रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और क़ौले आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा क़वी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में आया है कि उन्होंने फ़रमाया कि तुमको इस बात पर ताज्जुब है कि अल्लाह तआला ने दोस्ती इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए, कलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए और दीदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए रखा है।

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया ﴿رایت نورا﴾ मैंने नूरे इलाही को देखा। दूसरी रिवायत में है ﴿فسجدت لله﴾ मैंने सज्दा किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि हैं कि दो बार दीदार का मतलब है कि आपने अल्लाह तआला को एक दफ़ा आँख से देखा और दूसरी बार दिल से देखा। हदीस पाक में आया है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दिल मुबारक चाक किया तो कहा—

﴿قلب وکیع فیه اذنان سمیعتان و عینان بصیرتان.﴾

यह बड़ा मज़बूत दिल है जिस में दो सुनने वाले कान और देखने वाली दो आँखें हैं।

गोया दिल की दो आँखें भी हैं जिनसे नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को दीदारे इलाही नसीब हुआ। बहरहाल दीदार एक दफ़ा आँख से हुए दूसरी बार दिल से हुए। ये दोनों बातें सही हैं और दोनों का मंशा एक है।

क़ुर्बे इलाही

अल्लाह के महबूब को इससे भी ऊपर बुलंदी अता की गई। कितनी अता की गई इसकी हक़ीक़त को कोई नहीं जानता। जब आप अपने परवरदिगार के सामने इस हाल में पहुँचे तो आपने अपने परवरदिगार की हम्द बयान की और अजीब अंदाज से अपने परवरदिगार की तारीफ़ की। आपने तीन अल्फ़ाज़ कहे। आपने परवरदिगार के सामने अर्ज़ किया ﴿التحيات لله﴾ मेरी सबकी सब ज़बानी तारीफ़ें, मेरी क़ौली इबादतें, मेरी ज़बान से निकली हुई हम्द परवरदिगार के लिए हैं। ﴿والصلوات﴾ और जो मैंने बदनी इबादतें कीं हैं वे सारी की सारी मेरे परवरदिगार के लिए हैं। ﴿والطيبات﴾ और जो मैंने माल ख़र्च किया है वे सबकी सब माली इबादतें भी ऐ परवरदिगार! तेरे लिए हैं। गोया आपने तीन बातें कहीं। ऐ अल्लाह! मेरी क़ौली इबादतें भी तेरे लिए, मेरी बदनी इबादतें भी तेरे लिए और मेरी माली इबादतें भी तेरे लिए हैं। अल्लाह की रहमत जोश में आई। तीन बातें आपने कहीं थीं। उनके बदले परवरदिगार ने भी तीन बातें कहीं। फ़रमाया मेरे महबूब! ﴿السلام عليك ايها النبىُ ورحمتُ اللهِ وبركاتهٗ.﴾ आपके ऊपर सलामती हो और अल्लाह की रहमतें हों और अल्लाह की बरकतें हों। ﴿السلام عليك ايها النبى﴾ आप पर सलामती हो ﴿ورحمتُ اللهِ﴾ और अल्लाह की रहमतें हों ﴿وبركاتهٗ﴾ और अल्लाह की बरकतें हों। जब नबी

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि अल्लाह तआला की रहमत मुतवज्जेह है, सलामती की बात हो रही है, बरकत व रहमत की बात हो रही है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उम्मत की याद आई। आपने फ़ौरन फ़रमाया ﴿السلام علينا﴾ हम पर भी सलामती हो ﴿وعلى عباد الله الصالحين.﴾ और मेरी उम्मत के जो नेक लोग होंगे, अल्लाह तआला की उन पर भी सलामती हो। क़ुर्बान जाएं उस नबी रहमत पर जिसको परवरदिगार का क़ुर्ब मिलता है तो इस हाल में भी गुनाहगार उम्मत को नहीं भूले। इस रहमत व बरकत में उम्मत को भी शामिल फ़रमा लिया। जब फ़रिश्तों ने देखा तो हैरान रह गए और उनकी ज़बान से फ़ौरन यह अल्फ़ाज़ निकले ﴿اشهد ان لا إله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله.﴾ चुनाँचे जितनी बातचीत इन क़ुर्ब के लम्हात में हुई थी रब्बे करीम ने उसको तोहफ़ा बनाकर अपने महबूब को अता फ़रमा दिया।

नमाज़ का तोहफ़ा

जब दोस्त, दोस्त से मुलाक़ात के लिए आता है तो बाद में तोहफ़ा वापस करता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मेरे महबूब आप इस तमाम बातचीत को तोहफ़ा समझिए और अपनी उम्मत को कहिए कि दिन में पचास नमाज़ें पढ़े और इसके ज़रिया गोया मुझसे हमकलाम हुआ करे। आप वापस तशरीफ़ लाए तो रास्ते में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। पूछा कि ऐ अल्लाह के महबूब! क्या मामला पेश आया? फ़रमाया मुझे नमाज़ों का हुक्म अता किया गया है। अर्ज़ किया कि मेरी उम्मत को भी इसी

तरह का हुक्म मिला था मगर वह उम्मत तो थोड़ा भी न कर सकी। आप एक दफ़ा तशरीफ़ ले जाइए। लिहाज़ा आप फिर तशरीफ़ ले गए और अल्लाह तआला के हुज़ूर में हाज़िरी दी। अल्लाह तआला ने पैंतालीस कर दीं। फिर दोबारा मामला हुआ, चालीस कर दीं। पाँच नमाज़ें कम होती गयीं। नौ बार आपको बार-बार उरूज व बुलंदी नसीब हुई। हिकमत क्या थी? ज़ाहिर में नज़र आता है कि नमाज़ें माफ़ हो रही हैं मगर हक़ीक़त यह थी कि परवरदिगार दिखाना चाहते थे कि मेरे बंदो! कल कोई ऐतिराज़ न करे कि उरूज एक ही दफ़ा नसीब हुआ, अब दोबारा उनको नसीब नहीं हो सकता। यह मेरे वह बंदे हैं जो एक ही दफ़ा ही मेरे पास नहीं आए, उनके लिए मेरे दर खुले हैं। महबूब तो जितनी दफ़ा चाहे मेरे पास आ सकता है। मैंने रहमत के दरवाज़े खोल दिए। लिहाज़ा आप नवीं दफ़ा के बाद फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह तआला से हया आती है कि फिर जाऊँ। अब सिर्फ़ पाँच नमाज़ें हैं। लिहाज़ा पाँच नमाज़ों का तोहफ़ा लेकर अल्लाह तआला के महबूब वापस तशरीफ़ लाए।

निज़ामे काएनात का थम जाना

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आपने फ़रमाया कि मैं अपने घर पहुँचा, क्या देखता हूँ कि जिस पानी से वुज़ू किया था वह उसी तरह बह रहा है। बिस्तर की गर्मी भी मुझे उसी तरह महसूस हुई। असल में वहाँ जितना वक़्त लगा था परवरदिगार आलम ने काएनात के निज़ाम को उसी जगह रोक दिया था। जब आप तशरीफ़ ले गए थे। आप काएनात की जान

थे, काएनात का अरमान थे। जब आप तशरीफ़ ले गए तो अल्लाह तआला ने पूरे निज़ामे काएनात को वहीं रोक दिया। जब मुलाक़ात करके वापस तशरीफ़ लाए तो फिर निज़ामे काएनात आगे चला।

जदीद साइंस इस्लाम की दहलीज़ पर

एक वक़्त था जब दुनिया तख़्ते सुलेमानी के उड़ने को नहीं समझ सकती थी। आज हवाई जहाज़ की उड़ान ने तख़्ते सुलेमानी के उड़ने को अच्छी तरह समझा दिया। एक वक़्त था कि जब अबाबीलों की कंकरियाँ जो हाथियों को भूसा बनाकर रख देने वाली थीं, वह इंसान को हैरान कर देती थीं कि कंकरियों में कहाँ से इतनी ताक़त कि हाथी को मार सकें। आज रायफ़ल की गौली ने बात साफ़ कर दी कि किस तरह रायफ़ल की गोली से इतना बड़ा हाथी मर जाता है। परवरदिगार आलम की तरफ़ से अबाबील जब कंकरियाँ फेंकते थे तो वे भी गोलियाँ बनकर पड़ती थीं। साइंस वक़्त के साथ-साथ इन बातों से पर्दा उठाता जा रहा है। एक वक़्त था कि ये बातें समझ में नहीं आती थीं। आज समझनी काफ़ी हद तक आसान हैं। आज लिफ़्ट में सफ़र करने वाले के लिए 'रफ़रफ़' का समझना ज़्यादा आसान है। आज 'बुर्राक़' के लफ़्ज़ को बिजली की वजह से समझना ज़्यादा आसान है जो एक सेकेंड में एक लाख छियासी हज़ार किलोमीटर का सफ़र कर जाती है। अल्लाह तआला ने इसी तरह अपने महबूब को थोड़ी सी देर में ये तमाम शर्फ़ अता फ़रमा दिया। देखने में कोई इसे समझे या न समझे।

मेरे दोस्तो! हम इस पर ईमान रखते हैं क्योंकि अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया। लिहाज़ा हमारा पक्का ईमान है कि अल्लाह के महबूब तशरीफ़ ले गए। आपने सब नज़ारे देखे और देखकर तशरीफ़ ले आए।

एक दिलचस्प कहानी

इस पर मुझे पंजाबी की एक दिलचस्प कहानी याद आ गई। हमारे यहाँ पंजाब के इलाक़े में जब सुबह-सुबह लोग उठते हैं तो अपने खेतों में हल चलाने के लिए निकल जाते हैं। हल चलाने वाले को पंजाबी में हाली कहते हैं। वे हाली जब हल चलाते हैं तो उनको काफ़ी देर गुज़र जाती है। यहाँ तक कि जब सूरज चार नेज़े ऊपर चला जाता है तो उस वक़्त उनकी बीवियाँ घरों में लस्सी बिलोकर मक्खन निकाल लेती हैं। कुछ रोटियाँ पका लेती हैं। फिर रोटी और मक्खन का नाश्ता लेकर खेतों पर उनको पहुँचाती हैं। वह ख़ाविन्द जो हल चला रहा होता है उसे भूख लगी होती है, कई-कई घंटे वह हल चलाकर थका हुआ भी होता है। तो वह बीवी के इंतिज़ार में होता है। मानो अपने महबूब का मुन्तज़िर होता है, उसकी राह तक रहा होता है। जैसे ही बीवी सामने नाश्ता लेकर जाती है, वह वहीं हल को रोक देता है और अपनी बीवी के पास बैठकर नाश्ता करता है। एक शायर ने शायराना अंदाज़ में और आशिक़ाना मिज़ाज में इस पूरे मंज़र को यूँ बयान किया है। जब बीवी सामने जाती है और उसने जो अपनी नाक में लोंग पहना होता है उसका लश्कारा पड़ता है तो ख़ाविन्द हल छोड़कर उसकी तरफ़ ध्यान करता है तो इस बात को

उसने यूँ कहा है—

पया लोंग दा जद्दो लश्कारा
ते हालियाँ ने हल रोक लिए

लोंग का जब लश्कारा पड़ता है तो हाली अपने हल रोक लेते हैं। यही मामला था महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का। जब वहाँ पहुँचे तो परवरदिगार आलम ने सारी काएनात के निज़ाम को वहीं रोककर रख दिया कि महबूब मेरे पास है, मैं बातचीत करना चाहता हूँ। कितनी बातचीत करूंगा? ﴿فاوحی الی عبدہ ما اوحی﴾ फिर परवरदिगार ने अपने बंदे पर 'वही' नाज़िल फ़रमाई। यह महबूब और मुहिब के बीच राज़ है। कोई महबूब अपने मुहिब की मुलाक़ात की बातें दूसरों को नहीं बताया करता। लिहाज़ा क़ुरआन पाक ने भी इसी तरह निचोड़ के तौर पर इसका ज़िक्र कर दिया है।

﴿فاوحی الی عبدہ ما اوحی لقد رای من ایت ربہ الکبری﴾

तहक़ीक़ उन्होंने अपने परवरदिगार की बड़ी-बड़ी निशानियों को देखा।

क़ुरैश मक्का की हैरानी

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैराज से वापस तशरीफ़ लाए तो अगले दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश मक्का को यह सारा वाक़िआ सुनाया। वे बड़े हैरान हुए। सोचने लगे इतनी थोड़ी सी देर में कोई मस्जिदे अक़्सा तक कैसे पहुँच सकता है और वापस आ सकता है। लिहाज़ा उन्होंने इस बात को

हक़ीक़त के ख़िलाफ़ समझा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए हैं। क़ुरैश मक्का पास हैं। आपने मैराज के बारे में इर्शाद फ़रमाया तो क़ुरैश मक्का कहने लगे अच्छा अगर आप मस्जिदे अक़्सा से होकर आए हैं तो बताएं कि उसकी छत की कड़ियाँ कैसी थीं? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मुझे छत की कड़ियों के बारे में तो नहीं पता था। मेरी तबियत में अजीब सी कैफ़ियत पैदा हुई कि इन काफ़िरों ने ऐसा सवाल किया है कि मुझे इस वक़्त उसका जवाब मालूम ही नहीं। मगर मेरे परवरदिगार ने मेरी रहनुमाई फ़रमाई और बीच के सारे के सारे पर्दे हटा दिए। मैं मस्जिदे अक़्सा की छत को देख रहा था। जो कुछ काफ़िर लोग पूछते जाते थे मैं उनको बताता जाता था। जब मैंने सारी बातें उनको बता दीं तो उनकी क़िस्मत में हिदायत तो फिर भी नहीं थी। कहने लगे यह बड़ा जादूगर है। यह अपने जादू के ज़रिए ये बातें बता देता है।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही

अबू जहल वहाँ से उठकर घर की तरफ़ चल पड़ा तो आगे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आ रहे थे। कहता है अबू बक्र! तुम बड़े अक़्लमंद आदमी हो, समझदार हो, दाना हो। मुझे एक बात तो बता दो अगर कोई आदमी यह कहे कि मैं मक्का से चला और रात ही रात में मस्जिदे अक़्सा तक पहुँचा फिर वापस आ गया तो क्या यह मुमकिन है? आपने फ़रमाया कि मुमकिन तो नहीं है। कहने लगा कि आप ही के तो दोस्त कहते हैं कि मैं रात में सफ़र करके आया हूँ। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु

तड़पकर बोलते हैं कि अगर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं तो मैं गवाही देता हूँ कि वह सच कहते हैं। यक़ीनन उनके साथ यह मामला पेश आया होगा। अल्लाह तआला को हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की यह गवाही इतनी पसंद आई कि अबू बक्र के नाम के साथ सिद्दीक़ का लक़ब लगा दिया। क़यामत तक के लिए अबू बक्र का नाम लिया जाएगा तो उनको सिद्दीक़ कहकर पुकारा जाएगा कि अल्लाह के महबूब ने एक दावा फ़रमाया था और अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बिन देखे उसकी गवाही दी थी। मैराज का वाक़िआ तफ़्सीरों की किताबों में तफ़्सील के साथ मौजूद है जिसमें अल्लाह तआला की तरफ़ से कई हिकमतें थीं।

मैराज के वाक़िए की कुछ हिकमतें

कुछ हिकमतें जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमें मैराज के वाक़िए में दिखानी थीं वे भी सुनते चलें।

1. महबूब से बग़ैर वास्ते बातचीत

इनमें से पहली हिकमत यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त पहले अपने महबूब से जिब्राईल अलैहिस्सलाम के वास्ते से बात किया करते थे। गोया वास्ता था, जिब्राईल अमीन का। मुहिब अपने महबूब की तरफ़ पैग़ाम भेजता था किसी पैग़ाम लाने वाले के हाथों। फिर एक वक़्त होता है कि दिल चाहता है कि वास्ते के

बग़ैर बातचीत हो, वास्ते के बग़ैर मुलाक़ात हो। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने महबूब को अर्श पर बुला लिया। गोया फ़रमाया कि ऐ मेरे महबूब! दुनिया में तो जिब्राईल पैग़ाम देने जाते थे, आप अर्श पर तशरीफ़ लाइए ताकि बग़ैर वास्ते के आपसे बातचीत कर लूँ। बस मैराज के वाक़िए में एक हिकमत तो यह थी कि परवरदिगार ने अपने महबूब से बग़ैर वास्ते के बातचीत फ़रमाई और उनको इतना क़ुर्ब अता फ़रमा दिया।

2. मलाइका को अपने महबूब का दीदार करवाना

दूसरी हिकमत इसमें यह थी कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब को सारे आलम के लिए रहमत बना दिया था। जो सारे आलमों के लिए रहमत हो वह सिर्फ़ आलमे दुनिया के लिए रहमत नहीं होता। अब इसमें आलमे मलकूत भी आते हैं। फ़रिश्तों के आलम भी आते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस तरह इंसानों के लिए रहमत थे उसी तरह आप फ़रिश्तों के लिए भी रहमत थे क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने महबूब को सारे आलमों के लिए रहमत बनाया था इसलिए पसंद फ़रमाया कि मेरे रहमतुलिल्ल आलमीन को दुनिया की मख़्लूक़ ने तो देख लिया। अब मैं इस रहमतुलिल्ल आलमीन को अर्श की सैर के लिए बुलाता हूँ ताकि अर्श पर रहने वाले फ़रिश्ते भी उसका दीदार कर लें। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने महबूब को इसलिए मैराज अता फ़रमा दी ताकि फ़रिश्ते भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीदार से मुस्तफ़ीद हो सकें।

3. फ़रिश्तों पर अपने महबूब की बरतरी का इज़्हार

फिर इसमें एक हिकमत थी कि फ़रिश्ते क्योंकि अर्श पर थे इसलिए मुमकिन था कि उनको अपनी बुलंदी का नाज़ हो। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी तरफ़ बुला लिया और उनको कहाँ तक पहुँचाया? उस बुलंदी तक कि फ़रिश्ते भी नीचे रह गए। गोया फ़रिश्तों पर यह बात साबित कर दी गई कि देखो, तुम्हें अपनी बुलंदी पर नाज़ न हो। मैं अपने महबूब को इतना ऊँचा बुलाता हूँ कि जिब्राईल अमीन भी नीचे रह जाते हैं। अल्लाह तआला ने अपने महबूब को बुलंदी अता फ़रमा कर फ़रिश्तों के फ़ख़्र या नाज़ को तोड़कर रख दिया कि देखो मेरे महबूब को क्या शान अता फ़रमाई गई।

4. अपने महबूब को इमामुल कुल साबित करना

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैतुल्लाह (मक्का मुकर्रमा) से चले। वहाँ गोया इंसानों के इमाम थे क्योंकि आपने वहाँ इंसानों की इमामत फ़रमाई। जब आप मस्जिदे अक़्सा गए वहाँ आपने अंबिया अलैहिमुस्सलाम की इमामत फ़रमाई तो नबियों के इमाम बन गए। जब आप अर्श पर तशरीफ़ ले गए वहाँ आपने फ़रिश्तों की इमामत करवाई तो आप मलाइका के इमाम बने। गोया अल्लाह तआला ने बता दिया कि यह मेरे महबूब सबके इमाम हैं। मेरी सब मख़्लूक़ के इमाम हैं।

5. कुफ़्फ़ारे मक्का की पसपाई

फिर इसमें एक हिकमत यह भी थी कि काफ़िरों ने जब आप से बातचत की थी तो उन्होंने कलिमाए तौहीद को छोड़ने के बदले आपके सामने दुनिया का माल पेश किया था, दुनिया के ख़ज़ाने पेश किए थे, दुनिया का हुस्न व जमाल पेश किया था तो अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई कि मेरे महबूब! ये काफ़िर आपके सामने दुनिया का माल पेश करते हैं, आप ज़रा मेरी तरफ़ आइए, मैं आपको अपने ख़ज़ानों की सैर करा दूंगा कि आप के परवरदिगार ने आपके लिए कैसे-कैसे ख़ज़ानों को जमा कर रखा है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने महबूब को अपने ख़ज़ानों की सैर करा दी ताकि कुफ़्फ़ार की यह बात ग़लत साबित हो कि दुनिया का पैसा बड़ी चीज़ है। जो दुनिया से मुँह मोड़ता है अल्लाह तआला उसे अपनी रहमतों के ख़ज़ाने अता फ़रमा देते हैं। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब को मैराज की यह सआदत अता फ़रमाई।

6. महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिलदारी

इसमें एक हिकमत यह भी थी कि एक बार जब कुफ़्फ़ार ने सख़्त दिल दुखाया तो आपने यह कहा था कि कोई दोस्त होता जो मेरा साथ देता, कोई रफ़ीक़े सफ़र होता जो मेरी ग़मख़्वारी करता, कोई मेरा यार होता जो दिलदारी करता। अल्लाह तआला ने उसी वक़्त अपने महबूब को अर्श पर बुलवा लिया। गोया

फ़रमाया मेरे महबूब! मैं ही तो आपका रफ़ीक़े आला हूँ। अगर दुनिया तकलीफ़ देती है तो आओ मैं तुम्हारी दिलदारी करूंगा। दुनिया ने तो तकलीफ़ दी, आइए मैं आपके दिल को खुशियाँ दे दूँ। दुनिया ने आपको परेशान किया तो आइए सआदत की पगड़ी मैं आपके सर पर रख दूँ। इसलिए कि मैं ही आपका रफ़ीक़े आला और आपका दोस्त हूँ। मैराज की हिकमतों में एक हिकमत यह भी थी कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब को अपने पास बुलावकर आपकी दिलदारी फ़रमाई।

7. ईसाईयों के बातिल ज़ोम का तोड़

इसमें एक हिकमत यह थी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अर्श पर बुलाया और चौथे आसमान पर उनका क़याम फ़रमा दिया। मुमकिन है कि ईसाइयों के दिल में यह बात पैदा होती कि हमारे पैग़म्बर बड़े अफ़ज़ल हैं, उनको आसमानों पर उठाया गया और चौथे आसमान पर उनका क़याम है। अल्लाह तआला ने उनका फ़ख़्र तोड़ने के लिए अपने महबूब को मैराज अता फ़रमा दी कि ओ ईसाइयो! तुम देखो अगर तुम्हारे पैग़म्बर को चौथे आसमान तक उठाया गया तो मैं अपने महबूब को चौथे आसमान से भी ऊपर ले जा रहा हूँ।

8. मुशाहिदाए हक़ के साथ हम्द व सना

और एक हिकमत यह भी थी कि दुनिया में जितनी भी मख़्लूक़ आई, सब अल्लाह तआला की हम्द करती थी मगर सब के सब बिन देखे तारीफ़ कर रहे थे। कोई तो ऐसा भी हो जो

देखकर तारीफ़ करने वाला हो। इस मक़सद के लिए परवरदिगार ने अपने महबूब को बुला लिया। मेरे महबूब! सारी दुनिया बिन देखे तारीफ़ कर रही, मैं आपको वह मक़ाम अता करता हूँ जहाँ मेरी निशानियों को देखकर और मुझे देखकर आप मेरी तारीफ़ कर सकें। लिहाज़ा जितने भी अंबियाए किराम आए उनकी गवाही बिन देखे थी, एक हमारे महबूब हैं जिन्होंने देखकर गवाही अता फ़रमाई।

9. अल्लाह तआला के ख़ज़ानों की सैर

दुनिया का दस्तूर है कि जब बादशाह किसी को अपना दोस्त बनाता है, उसको अपने महलों की सैर करवाता है। अपने ख़ज़ाने दिखाता है। अपने दरबार में बुलाता है। अल्लाह तआला ने अपने महबूब को अपना ख़ास क़ुर्ब अता फ़रमा दिया तो उनको अर्श व क़लम से ऊपर बुला लिया। अपने मक़ामात की सैर करवाई। अपने ख़ज़ानों की सैर करवा दी। मेरे दोस्त! दुनिया में अगर इसी तरह अपने ख़ज़ानों को अपने दोस्त को दिखाया जाता है तो मैं हक़ीक़ी शंहशाह हूँ, आइए मैं भी अपने ख़ज़ानों का आपको दीदार करा देता हूँ ताकि दुनिया वालों को यक़ीन आ जाए कि वाक़ई मैंने अपने को अपना महबूब बना लिया है।

10. शफ़ाअत में आसानी

फिर इसमें एक हिकमत यह भी थी कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामत के दिन शाफ़े बनेंगे यानी शफ़ाअत करने वाले। इसीलिए तो शाफ़े रोज़े जज़ा यानी

हिसाब के दिन सिफ़ारिश करने वाले कहा जाता है। इसलिए जब अज़ान के बाद दुआ मांगी जाती है तो उसमें कहा जाता है कि ऐ अल्लाह! हमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत अता फ़रमाना और आपको मक़ामे महमूद अता फ़रमाना। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि क़यामत का दिन होगा, इंसानियत परेशान होगी। हर इंसान अपने गुनाहों के बराबर अपने पसीने के अंदर डूबा हुआ होगा जिसको सहन करना मुश्किल होगा। सब के सब इंसान मुख़्तलिफ़ नबियों के पास जाएंगे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वग़ैरह के पाए जाएंगे। फ़रियाद करेंगे कि ऐ अल्लाह के नबी! आप हमारी शफ़ाअत कर दीजिए मगर सब थर्राते होंगे। अल्लाह तआला की जलालते शान से सब के सब कांपते होंगे। फिर ऐसे वक़्त में सब मेरी तरफ़ आएंगे और अल्लाह तआला की तरफ़ से मुझे वह मक़ाम मिलेगा कि मुझे उस पर बिठा दिया जाएगा। मैं वहाँ सज्दे में सर रखकर अल्लाह की हम्द बयान करूंगा, तारीफ़ें करूंगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह की ऐसी तारीफ़ करूंगा कि ऐसी तारीफ़ न पहले किसी ने की होगी और न ऐसी तारीफ़ कोई बाद में करेगा। वह तारीफ़ ऐसी होगी कि अल्लाह तआला का सारा जलाल, अल्लाह तआला के जमाल में बदल जाएगा। परवरदिगार की रहमत जोश में आएगी। फ़रमाएंगे आपने मेरी ऐसी हम्द बयान की, सज्दे से सर उठाइए। जिसकी आप शफ़ाअत करेंगे हम आपकी शफ़ाअत

क़ुबूल करेंगे। अल्लाह तआला ने अपने महबूब को अर्श बुलाकर जन्नत और दोज़ख़ के नज़ारे दिखा दिए ताकि लोगों की शफ़ाअत करने में क़यामत के दिन अपने महबूब को आसानी हो सके। बंदे ने मंज़र देखा हो तो उसकी बात कहना आसान होता है। अगर पहली दफ़ा बात देखी हो तो इंसान कभी-कभी परेशान होता है कि क्या कहूँ? तो अल्लाह तआला ने अपने महबूब को मैराज अता फ़रमा कर जन्नत व दोज़ख़ की यह सैर इसलिए करा दी, जहन्नम के नज़ारे दिखा दिए ताकि मेरे महबूब को पता रहे कि जन्नतियों और जहन्नमियों के साथ क्या मामला होगा और क़यामत के दिन आप उनकी शफ़ाअत का हक़ अदा कर सकें।

अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने दुनिया में हर नबी को एक ऐसी दुआ का इख़्तियार दिया कि तुम जैसे मांगोगे उस दुआ को उसी तरह क़ुबूल कर लिया जाएगा। जब आपने यह बात फ़रमाई तो सहाबा किराम तड़प उठे। पूछते हैं ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह ने आपको भी इख़्तियार दिया। फ़रमाया, हाँ। अर्ज़ किया तो ऐ अल्लाह के नबी! फिर आपने कौनसी दुआ मांगी? फ़रमाया मैंने कोई दुआ नहीं मांगी। मैंने इस दुआ को अपने लिए ज़ख़ीरा बना लिया। क़यामत का दिन होगा मेरी गुनाहगार उम्मत खड़ी होगी। मैं उस वक़्त दुआ करूंगा कि ऐ परवरदिगार! मेरी सारी उम्मत को अपनी रहमत से आज जन्नत में दाख़िल कर दे। फ़रमाया मैं जन्नत में नहीं जाऊँगा जब तक मेरा आख़िरी उम्मत भी जन्नत से बाहर होगा। जब सारी उम्मत अंदर चली जाएगी फिर मैं जन्नत में दाख़िल हूँगा। मैं क़यामत के दिन दुआ करूंगा और अल्लाह तआला मेरी दुआ के बदले में मेरी

गुनाहगार उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा देंगे। *(सुब्हानअल्लाह)*

11. रहमते ख़ुदावंदी का इज़्हार

अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैराज पर बुलाया तो इसमें एक हिकमत यह थी कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब पर क़यामत के दिन अपनी उम्मत के सारे हालात खोलने थे। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने महबूब को अर्श पर बुलाया और अपनी रहमत के ख़ज़ाने दिखा दिए ताकि मेरे महबूब को मेरी रहमत के ख़ज़ानों को आँखों से देखने की सआदत मिल जाए। ऐसा न हो कि अगर आप पर उम्मत के गुनाहों को पेश किया जाए, आपका दिल रंजीदा हो कि मेरी उम्मत के इतने गुनाह हैं, कैसे बख़्शे जाएंगे। परवरदिगार आलम ने अपने महबूब को रहमत के ख़ज़ाने दिखा दिए। ओ मेरे महबूब! तेरी उम्मत के गुनाह जितने भी ज़्यादा हों, ज़रा मेरी रहमतों को भी देख लो। वे उन रहमतों से ज़्यादा नहीं हो सकते। मेरी रहमतें उन सारे गुनाहों से ज़्यादा होंगी ताकि मेरे महबूब के दिल को उम्मत के गुनाहों को जानकर तकलीफ़ न हो।

12. ज़मीन और आसमान के दर्जों में बराबरी

बाज़ उलमा ने यह हिकमत लिखी है कि एक दफ़ा ज़मीन और आसमान के बीच हम कलामी हुई, आपस में बातचीत हुई। आसमान ने कहा, देखो मेरे ऊपर फ़लां चीज़ है। ज़मीन कहा, मेरे ऊपर फ़लां चीज़ है। आसामन ने कहा मेरे ऊपर चाँद और सितारे हैं। ज़मीन ने कहा कि मेरे ऊपर नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के सहाबा हैं। आसमान ने कहा मेरे ऊपर अल्लाह की रहमत के ख़ज़ाने हैं। ज़मीन ने कहा मेरे महबूब की रहमत का मदीना है। तो आपस में इस तरह बातें होती रहीं। आसमान ने कहा मेरे ऊपर मुक़द्दस जगहें हैं तो ज़मीन ने भी कहा मेरे ऊपर तूर, मक्का और मदीना जैसी जगहें हैं। आपस में बातचीत लम्बी हो गई। आख़िरकार ज़मीन ने कहा अच्छा तेरे ऊपर जो कुछ भी है, बताओ तो सही तेरे ऊपर अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो नहीं। यह सआदत तो अल्लाह तआला ने मुझे ही अता फ़रमा दी। जब ज़मीन ने कहा तो आसामान के पास इसका जवाब न था। परवरदिगार आलम की रहमत ने चाहा कि अच्छा अगर ज़मीन को यह सआदत मिली है कि मेरे महबूब के क़दम उस पर लगे हैं तो मैं महबूब के क़दमों को अर्श पर भी लगवा देता हूँ ताकि सआदत में दोनों बराबर हो जाएं। चुनाँचे अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैराज अता फ़रमाई।

❋ ❋ ❋

आजिज़ी और इन्किसारी

الحمد لله و كفى و سلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم○

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم○

يايها الناس انتم الفقراء الى الله والله هو الغنى الحميد ○ ان يشا يذهبكم

ويات بخلق جديد○ وما ذلك على الله بعزيز. سبحان ربك رب العزه

عما يصفون ○وسلام على المرسلين ○ والحمد لله رب العالمين○

ख़ुदा तआला के एहसानात

﴿ياايها الناس﴾ ऐ इंसानो! ﴿انتم الفقرآء الى الله﴾ तुम सब के सब अल्लाह के मोहताज हो, ﴿واللّٰهُ هو الغنى الحميد﴾ और वह ग़नी है जिसकी तारीफ़ की गई है यानी अज़मतों वाला, बड़ाई वाला और शान वाला है। वह परवरदिगार जिसने तुम्हें ज़िंदगी की सब नेमतें अता फ़रमायीं, जिसने तुम पर बारिश के क़तरों से भी ज़्यादा एहसानत फ़रमाए। तुम्हारे जिस्म का अंग-अंग उस मालिक व ख़ालिक़ के एहसानों में डूबा हुआ है।

लोगो! अपनी हक़ीक़त को पहचानो। अगर फिर भी अपने परवरदिगार के सामने नहीं झुकोगे ﴿ان يشا يذهبكم﴾ वह चाहे तो तुम्हें ले जाए, तुम्हें मिटा दे, ख़त्म कर दे और तज़्किरों में से

तुम्हारा तज़्किरा भी बाक़ी न रहे। कभी क़िस्से कहानियों में भी तुम्हें याद न किया जाए, ﴿ويات بخلق جديد﴾ और एक नई मख़्लूक़ को तुम्हारी जगह पैदा कर दे, ﴿وما ذلك على الله بعزيز.﴾ और अल्लाह पर यह काम मुश्किल नहीं है।

ख़ाक की अज़्मत

हम बंदे हैं और बंदगी ही अच्छी लगती है। मिट्टी की नस्ल है लिहाज़ा मिट्टी की नस्ल बनकर ज़िंदगी गुज़ार दें जबकि शैतान हमें आग की नस्ल बनकर ज़िंदगी गुज़ारने को कहता है। ख़ाक (मिट्टी) अगर पाँव के नीचे रहे तो हर बंदा पसंद करता है अगर पाँव के नीचे से उड़कर कपड़ों पर आ गिरे तो लोग फ़ौरन झाड़ देते हैं। चेहरे पर आ पड़े तो भी लोग फ़ौरन धो देते हैं। लिहाज़ा ख़ाक को आजिज़ी ही सजती है। जब तक यह पाँव के नीचे रहे उस वक़्त तक उसकी अज़्मत है, क़दर है और जब यह नीचे से ऊपर होने की कोशिश करती है तो हर बंदा उसे नापसंद करता है और उसे मिटाने की कोशिश करता है। बिल्कुल इसी तरह जो इंसान आग की नस्ल बनकर आग के शरारों की तरह ऊँचा उठना चाहता है परवरदिगार आलम उसका नाम व निशान मिटा देते हैं।

तसव्वुफ़ किसे कहते हैं

तसव्वुफ़ कश्फ़ हासिल होने का नाम नहीं, रंग देखने का नाम नहीं, दिल की हरकत हासिल होने का नाम नहीं, ख़िलाफ़े आदत वाक़िआत पेश आने का नाम नहीं, आइंदा पेश आने वाले

वाक़िआत का इल्म होने का नाम नहीं, मुक़दमों के जीतने का नाम नहीं, दुआओं के क़ुबूल होने का नाम नहीं है क्योंकि दुआ तो शैतान की भी क़ुबूल हो गई थी, नमाज़ और तिलावत के अंदर कुछ ख़ास महसूस होने का नाम नहीं बल्कि तसव्वुफ़ अपने आपको मिटा देने का दूसरा नाम है। हज़रत सैय्यद सुलेमान नदवी रह० ने एक बार हज़रत अक़्दस थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा कि हज़रत! तसव्वुफ़ क्या है? तो उन्होंने जवाब दिया कि तसव्वुफ़ अपने को मिटा देने का दूसरा नाम है। इस हक़ीक़त को समझने की कोशिश करें।

अपनी 'मैं' को मिटा लो

मेरे दोस्तो! अपनी 'मैं' को मिटा लो। याद रखना कि जो अपनी मैं को नहीं मिटाता फिर अल्लाह तआला ख़ुद उसको मिटाते हैं और जिसकी मैं को अल्लाह तआला मिटाता है फिर उसका तमाशा दुनिया देखती है। इससे पहले कि अल्लाह हमारी 'मैं' को तोड़ दे हम अपनी 'मैं' को खुद तोड़ लें। इसे कहते हैं नफ़्स को मिटाना।

तसव्वुफ़ की बुनियाद

अपने नफ़्स को मिटा देने वाली यह नेमत ऊपर से चली आ रही है। आज लोग कहते हैं तसव्वुफ़ की बुनियाद कहाँ है? भाई! यह अपने आपको मिटा देना, नफ़्स में उज्ब और तकब्बुर जैसी बीमारियों को ख़त्म करना ही तो तसव्वुफ़ है और ये तालीमात तो हमें सहाबा किराम और पिछले नेक लोगों से मिलती हैं।

सैय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ी

अपने आपको मिटाने की बेहतरीन मिसाल तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर की ज़िंदगी से मिलती है। महबूबे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको सिद्दीक़ियत की बशारत देते हैं। अशरा मुबश्शरा (दस सहाबाए किराम जिनको जन्नत की बशारत दी गई) में उनका ज़िक्र फ़रमाते हैं। ओहद पहाड़ से कहते हैं कि ओहद क्यों हिलता है, तेरे ऊपर सिद्दीक़े अकबर है? अपनी हयाते मुबारका में उनको अपने मुसल्ले पर खड़ा फ़रमाते हैं। हिजरत के वक़्त रफ़ीक़े सफ़र बनाते हैं। मगर इन सब के बावजूद सिद्दीक़े अकबर की यह हालत थी कि जब अपने आप पर नज़र डालते हैं तो कांप उठते, रो पड़ते और रोकर कहते, काश! मेरी माँ ने मुझे जना ही न होता, काश! मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता, काश! मैं कोई परिन्दा होता, काश! मैं घास को कोई तिनका होता जिसे कोई जानवर ही खा लेता।

उनकी बेनफ़्सी का यह आलम था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में इर्शाद फ़रमाया :

﴿من اراد ان ينظر الى ميت يمشى على وجه الارض فلينظر الى ابن ابى قحافة.﴾

तर्जुमा : जो शख़्स चाहे कि ज़मीन पर चलती हुई किसी लाश को देखे तो उसको चाहिए कि वह अबू कहाफ़ा के बेटे अबू बक्र सिद्दीक़ को देख ले।

सुब्हानअल्लाह फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको ग़ार में ﴿ان الله معنا﴾ की बशारतें दीं क्योंकि ख़्वाहिशात ख़त्म हो गयी थीं,

हवाए नफ़्सानी का नाम व निशान न रहा था, इंसानियत की हक़ीक़त नसीब हो चुकी थी। वह ज़िंदा तो थे मगर दुनिया में नहीं थे बल्कि उनके दिल व दिमाग़ अर्श के ऊपर पहुँचे होते थे।

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ी

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने आपको कैसे मिटाया? एक बार किसी जिहाद से ग़नीमत का माल आया। क़ैदी भी आए। आपने देखा तो खुश हुए। उसके बाद लोगों से कहा ज़रा मिंबर के क़रीब हो जाओ। लोग मिंबर के क़रीब हो गए। फिर आपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह होकर अपने को कहा, उमर! तू वही तो है जिसकी माँ सूखा गोश्त चबाया करती थी। अरब में यह ग़रीबी की अलामत होती थी कि जिनको खाने का अच्छा सामान नहीं मिलता था वे भूख की वजह से सूखा गोश्त चबाया करते थे।

यह बात कहकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर से नीचे उतर गए। सहाबा किराम हैरान हुए कि हमें अमीरुल मोमिनीन ने इकठ्ठा किया था तो यही कुछ कहना था। बाद में उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लहु अन्हु से पूछा, हज़रत! आपने इतने लोगों को जमा भी किया कि बात सुनो और कोई ख़ास बात भी नहीं कही बस यही कहा कि उमर! तू उस माँ का बेटा है जो खुश्क गोश्त चबाया करती थी, आख़िर क्या वजह है? हज़रत उमर ने जवाब दिया, जब क़ैदी आए और ग़नीमत का माल भी आया तो मेरे

दिल में यह ख़्याल आया कि उमर! अल्लाह ने तुझे क्या ही शान दी है कि तेरे ज़माने में इस्लाम में जीतें हो रही हैं। मैंने महसूस किया कि मेरे नफ़्स के अंदर कहीं बड़ाई पैदा न हो जाए। मैंने इसका यह ईलाज तय किया कि सारे लोगों को बुलाकर एक ऐसी बात कह दी जिसने मेरे अंदर से खुदपसंदी को ख़त्म करके रख दिया।

सुब्हानअल्लाह! वे अपने नफ़्स को यूँ पामाल करते थे। इधर नफ़्स के साँप ने फन उठाने की कोशिश की उधर उन्होंने उसके सर पर चोट लगाई। बस ज़रा सी बात पर नफ़्स को दवा पिला देते थे। तो मालूम हुआ कि वे लोग अपने नफ़्स पर हर वक़्त निगाह रखा करते थे।

उज्ब (बड़ाई) हलाक करने वाला मर्ज़ है

हदीस पाक में कुछ मुहलिकात (हलाक कर देने वाली) और कुछ मुन्जियात (निजात देने वाली बातें) बताई गयी हैं। मुहलिकात में एक बड़ी चीज़ जो इंसान को हलाकत में डालती है वह उज्ब है। इसीलिए फ़रमाया ﴿واعجاب المرء بنفسه﴾ और इंसान का अपने नफ़्स के अंदर उज्ब पैदा कर लेना उसकी हलाकत का सबब होता है। आज हम सब कुछ को छोड़कर सब इसके मरीज़ हैं। उज्ब और तकब्बुर को तो हम कोई बुराई ही नहीं समझते। हमें तो हर वक़्त 'मैं' दिखाने की फ़िक्र रहती है।

तीन ज़माने

एक वह ज़माना था जब हज़रात कुछ अमल करते थे और

उसे छिपा लेते थे। फिर वह ज़माना आया कि अमल करते थे और बता देते थे और आज वह ज़माना है अमल भी करते हैं और बताते भी फिरते हैं कि जी मेरा इरादा हज करने का है, जी मेरा इरादा किताब लिखने का है, जी मेरा इरादा मदरसा बनाने का है। अभी ज़हनों में सोच होती है और शोहरत पहले ही कर रहे होते हैं ताकि लोग उसका तज़्किरा आगे करें और हमारा नफ़्स मोटा हो। हम नफ़्स के पालने में मशग़ूल हैं और नफ़्स हमें जहन्नम में धक्का देने में लगा हुआ है। हमारा बनेगा क्या?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाईल

सैय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से बशारतें पायीं। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला ने आपको क्या ही शान अता फ़रमाई थी कि कई बार उनकी सोच 'वही इलाही' के बिल्कुल मुताबिक़ निकली। उनके बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿لو كان بعدى نبيا لكان عمر﴾ अगर मेरे बाद कोई नबी आना होता तो वह उमर होता। ﴿الحق ينطلق على لسان عمر﴾ उमर की ज़बान पर हक़ बोलता है। फ़रमाया, उमर जिस रास्ते पर गुज़र जाता है शैतान उस रास्ते को भी छोड़ देता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ाना दुआ

जिनके बारे में ज़बाने नबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इतने फ़ज़ाईल बयान करवाए गए वह तहज्जुद के वक़्त में

परवरदिगार आलम के सामने अपनी राज़ व नियाज़ की बातें करते हुए अपने दिल की कैफ़ियतें कैसे खोलते थे। उस वक़्त परवरदिगार आलम के सामने हाथ फैलाकर ऐसी दुआ मांगते थे जो मेरे और आपके लिए रोशनी का मीनार है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बारगाह में वह अर्ज़ करते थे :

﴿اللهم اجعلنى فى عينى صغيرا وفى اعين الناس كبيرا.﴾

ऐ अल्लाह! मुझे अपनी निगाह में छोटा बना दे और मख़्लूक़ की निगाह में बड़ा बना दे।

इसलिए कि जब कोई मख़्लूक़ की निगाह में बड़ा होगा तो उसके लिए दावत व इर्शाद का दरवाज़ा खुल जाएगा और अगर लोग ही उसे हक़ीर समझेंगे तो वह दीनी फ़ायदा भी नहीं उठा पाएंगे। आपने इसलिए भी दुआ मांगी कि नफ़्स कहीं फूलने न पाए। यही तसव्वुफ़ है।

हमारी बदहाली

हमारी हालत यह है कि हम अपनी नज़र में बादशाह बने होते हैं कि करना तो वह है जो अपनी मर्ज़ी में आएगा। भाई! अ.I शरिअत कहाँ गई? कहने वाले कौन? सूफ़ी साहब। घर में बीवी से झगड़ा हो तो कहता है मैं वह करूंगा जो मेरी मर्ज़ी में आएगा। दोस्तों और रिश्तेदारों से झगड़ा हो जाए तो कहता है जी मैं वह करूंगा जो मेरी मर्ज़ी में आएगा। भाई! जब तक यह हमारी और मेरी वाले अल्फ़ाज़ नहीं छूटेंगे जब तक हमें अपनी असलियत नसीब नहीं होगी, तब तक हमें तसव्वुफ़ की हक़ीक़त हासिल नहीं होगी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ी का एक और वाक़िआ

अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इतने बुलंद मक़ामात नसीब फ़रमाए थे। उसके बावजूद अपने बारे में इतनी अहतियात करते थे कि बार हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, हुज़ैफ़ा! मुझे यह तो पता है कि तुम्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुनाफ़िक़ों का नाम बता दिए थे। आपसे मुनाफ़िक़ों के नाम तो नहीं पूछता बस इतनी बात पूछाता हूँ कि कहीं उमर का नाम तो उन मुनाफ़िक़ों में शामिल नहीं है। अगर हम होते तो हम कहते कि हम तो मुरादे मुस्तफ़ा हैं, हमारे लिए महबूबे ख़ुदा दुआएं मांगते थे। देखिए तो सही कि जिन्हें मांग कर लिया गया वे परवरदिगार के हुज़ूर इस तरह झुकते थे और अपने बारे में इतने चौकन्ने रहते थे कि फिर भी पूछते थे कि कहीं उमर का नाम तो उनमें शामिल नहीं। क्या हमने भी कभी ऐसी नज़र अपनी ज़ात पर डाली? नहीं बल्कि हमारी तो गर्दनें तनी रहती हैं, आँखें खुली रहती हैं, हमारी निगाहें दूसरों के चेहरों पर पड़ती है, हमें दूसरों के ऐब तो नज़र आते हैं मगर अपनी हालत नज़र नहीं आती। काश! यह आँखें बंद होतीं, ये गर्दनें झुक जातीं और ये निगाहें अपने सीने पर पड़तीं कि मेरे अपने अंदर क्या ऐब छिपे हुए हैं। आज इस बात की बहुत कमी है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ी

एक बार एक आदमी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मिला।

वह ताबईन में से था। उसने हज़रत अली को न पहचाना क्योंकि मदीने में नया था। लिहाज़ा उसने पूछा ﴿من انت﴾ आप कौन हैं? आपने जवाब में इर्शाद फ़रमायां ﴿انا رجل من المسلمين﴾ मैं नहीं हूँ मगर मुसलमानों में से एक आदमी। मेरे दोस्तो! उन्होंने यह न बताया कि मैं दामादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हूँ, मैं ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ख़ाविन्द हूँ, मैं जन्नत के नौजवानों के सरदार हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बाप हूँ, मैं इल्म का दरवाज़ा हूँ, मुझे असदुल्लाहिल ग़ालिब कहा गया, मेरे हाथ पर अल्लाह तआला ने ख़ैबर फ़तेह करवाया। उन्होंने अपने बारे में कोई ऐसी बात न कही बल्कि अपनी ज़ात की नफ़ी कर दी, अपनी शान की नफ़ी कर दी, अपने मक़ामात की नफ़ी कर दी। जब इन बड़ों का यह हाल था तो मैं और आप किस खेत की गाजर-मूली हैं। हम दावे करते फिरें कि हमें तो ये कैफ़ियत और मक़ाम हासिल है।

अज़ाज़ील शैतान कैसे बना

शैतान को भी इसीलिए फटकार पड़ी। आप बताइए जब शैतान ने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की तो क्या उसने कोई शराब पी हुई थी कि वह इतना मदहोश था। उसको किस चीज़ का नशा था। उसने तकब्बुर की शराब पी हुई थी। उसे तकब्बुर का नशा था। वह कहता था ﴿انا خير منه﴾ कि इस आदम से तो मैं अच्छा हूँ। उसने 'मैं' की शराब पी हुई थी। इसलिए फटकार दिया गया। कहाँ ताउस मलाइका था और कहाँ फ़रमा दिया कि अब तुम मेरे दुश्मन हो। ﴿فاخرج منها فانك رجيم﴾ निकल जा, दफ़ा

दूर हो जा, तू मरदूद है। आज तो हम ख़ुद गुनाह करते हैं और फिर भी शैतान का नाम लगा देते हैं। चलें गुंजाइश है मगर जब शैतान ने गुनाह किया उस वक़्त तो कोई शैतान नहीं था। उसका अपना नाम अज़ाज़ील था। अब बताइए कि अज़ाज़ील को शैतान किसने बनाया? इसका क्या जवाब है? इसका जवाब यह है कि उसके पीछे अपने नफ़्स ने उसको शैतान बना दिया। नफ़्स ऐसा है कि अगर बिगड़ा हुआ हो तो यह ताउस मलाइका को भी शैतान बना देता है।

हमारा असल दुश्मन

इसलिए हमें शैतान से ज़्यादा अपने नफ़्स से डरने की ज़रूरत है क्योंकि रब्बे करीम ने शैतान के बारे में फ़रमाया ﴿ان كيد الشيطان كان ضعيفا.﴾ कि शैतान का मकर और उसकी चाल कमज़ोर है। लेकिन जहाँ पर इंसान के नफ़्स के बहकाने का ज़िक्र आया वहाँ फ़रमाया ﴿ان كيدكن عظيم.﴾ ऐ औरतो! तुम्हारे तो मकर और फ़रेब बड़े होते हैं। जहाँ इंसानी नफ़्स का ज़िक्र आया वहाँ क़ुरआन ने अज़ीम का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया और जहाँ शैतान के मकर का ज़िक्र आया है वहाँ ज़ईफ़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया। मालूम हुआ कि शैतान उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकता जब तक कि हमारा अपना नफ़्स उसके साथ शामिल नहीं होता। तो हमें तो यही अंदर का भेदी नुक़सान देता है। घर का भेदी लंका ढाए वाला मामला होता है। हमारा असल दुश्मन हमारा नफ़्स है। इसीलिए मशाइख़ किराम नफ़्स पर मेहनत करवाते हैं। किसी आरिफ़ ने कहा–

नहनंग व अज़्दहा व शेर नर मारा तो क्या मारा
बड़े मूज़ी को मारा नफ़्स अम्मारा को गर मारा

नफ़्स को मारने का मतलब

नफ़्स को मारने का मतलब यह है कि इंसान के दिल से शरिअत के ख़िलाफ़ तमन्नाएं ख़त्म हो जाएं, 'मैं' मर जाए। इसी को कहते हैं नफ़्स को शरिअत व सुन्नत की नकेल डाल देना। यह नफ़्स को क़ाबू कर लेना है, यह नफ़्स को जीत लेना है।

अजीब बात है कि हम नफ़्स को तो फ़तेह नहीं कर पाते और दुनिया को जीतने की बातें करते हैं। बाज़ लोगों ने अहद किया हुआ है कि जी हम दुनिया को जीतेंगे दुनिया में यह लागू करेंगे और वह लागू करेंगे। अरे मियाँ ज़रा अपने नफ़्स पर तो लागू करके दिखा दो। देखते हैं कि आपकी अपने ऊपर भी हकूमत है कि नहीं है ओर जिसकी अपने छः फ़िट की ज़ात पर हकूमत नहीं भला अल्लाह तआला उसको पूरी ज़मीन की हकूमत कैसे अता फ़रमा देंगे।

मक़ामे तस्ख़ीर

कहते हैं जी कि मक़ामे तस्ख़ीर नसीब होना चाहिए। यह मक़ामे तस्ख़ीर उनको नसीब था जिन्होंने अपने आपको मुसख़्ख़र किया हुआ था। फिर अल्लाह तआला ने उनके लिए रास्ते हमवार कर दिए थे।

आजिज़ और फ़क़ीर का लफ़्ज़

हमारे मशाइख़ ने 'मैं' के लफ़्ज़ को इतना नापसंद किया है

कि आप बातचीत पर भी 'मैं' का लफ़्ज़ नहीं इस्तेमाल फ़रमाते थे। फ़क़ीर का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाते थे या आजिज़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमा लेते थे। भाई हम वाक़ई आजिज़ हैं। आजिज़ का लफ़्ज़ मुझे अच्छा लगता है, फ़क़ीर का लफ़्ज़ भी अच्छा लगता। फ़क़ीर का तो इसलिए कि परवरदिगार हमें कह रहे हैं :

﴿انتم الفقراء الى الله والله هو الغنى.﴾

अल्लाह ग़नी है और तुम फ़क़ीर हो।

इसलिए हमें तो अपने आपको फ़क़ीर ही कहलवाना है।

लफ़्ज़ 'आजिज़' की तहक़ीक़

और आजिज़ का लफ़्ज़ इसलिए इस्तेमाल करना चाहिए कि फ़रमाया :

﴿الكيس من دان نفسهٗ وعمل لما بعد الموت.﴾

अक़्लमंद वह है जो जांच ले अपने नफ़्स को और उसके लिए अमल करे जो मौत के बाद है।

और फिर आगे फ़रमाया कि आजिज़ वह है जिसने अपनी ख़्वाहिशात की इत्तिबा की। अगर हदीस के इन अल्फ़ाज़ को सामने रखें तो तो आजिज़ का लफ़्ज़ हमारे ऊपर बिल्कुल फ़िट आता है। मशाइख़ अपने लिए आजिज़ का लफ़्ज़ इसलिए इस्तेमाल नहीं फ़रमाते कि उनके अंदर आजिज़ी होती है और वे अपनी आजिज़ी का इज़्हार कर रहे होते हैं बल्कि फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी नज़र में होता है। वे अपने आपको ख़्वाहिशात का बंदा समझते हैं। ख़्वाहिशात का ग़ुलाम समझते हैं

इसलिए आजिज़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल कर होते हैं।

बकरी का अंजाम

ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० बहुत सादा बातें फ़रमाते थे। सुब्हानअल्लाह! बड़ों की बातें भी बड़ी होती हैं। एक बात इर्शाद फ़रमाई, फ़क़ीरो! बकरी 'मैं', 'मैं' करती है। कभी देखा है कि अल्लाह तआला फिर बकरी का हश्र क्या करते हैं? गले पर छुरी चलती है, हड्डियाँ तोड़ी जाती हैं, बोटियाँ बना दी जाती हैं, आग पर चढ़ा दी जाती है, बत्तीस दाँतों में चबाई जाती है। यह तो उसके जिस्म का मामला होगा और बाक़ी क्या बचा? उसकी आँतें बच गयीं। फ़रमाया उसकी आँतों को लोगों ने सुखाया और कपास धुनने के लिए इस्तेमाल किया। जिसमें से 'मैं', 'मैं' की आवाज़ निकलती थी अब उसको हिलाते हैं तो उसमें से 'तू', 'तू' की आवाज़ निकलती है। यह पहले वक़्तों में होता था। मगर आज तो रुई धुनने के लिए मशीनें आ चुकी हैं। पहले वक़्तों में एक तार होती थी उसको जब हिलाते थे तो उसमें से 'तू', 'तू' की आवाज़ निकलती थी तो फ़रमाया फ़क़ीरो! देखो यह बकरी 'मैं', 'मैं' करती थी। परवरदिगार ने उसके साथ ऐसा मामला किया कि आख़िर में उसमें से 'तू', 'तू' की आवाज़ निकली। ख़ुद ही 'तू', 'तू' का लफ़्ज़ निकाल लो ऐसा न हो कि तुम्हारे साथ भी बकरी जैसा मामला कर दिया जाए।

अल्लाह तआला की नेमतें

मेरे दोस्तो! हम अपनी अवक़ात को देखें कि हम अल्लाह

तआला के किस क़दर मोहताज हैं। उस परवरदिगार ने हमें इतनी नेमतों से नवाज़ा कि इर्शाद फ़रमाया ﴿وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها﴾ अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनना चाहो तो तुम गिन ही नहीं कर सकते। वह हमें सेहत न देता तो बीमार होते, वह अक़्ल न देता तो हम पागल होते, वह माल न देता तो हम ग़रीब होते, वह हमारे हाथ-पाँव ठीक न करता तो हम लूले-लंगड़े होते, वह हमें इज़्ज़त न देता तो हम ज़लील होते, वह औलाद न देता तो हम बेऔलाद होते। ये जो कुछ है सब मौला का करम ही तो है। ये सब उसी की मेहरबानियाँ है जो हम अपने आपको कुछ समझने लग जाते हैं।

इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी का राज़

परवरदिगार की बर्दाश्त पर क़ुर्बान जाएं कि उसने हमें बर्दाश्त किया हुआ है। सच्ची बात तो यह है कि हम अल्लाह तआला की सत्तारी की सिफ़्त के सदक़े जी रहे हैं। अगर वह हम पर सत्तारी का मांमला न फ़रमाता तो हम मुँह दिखाने के क़ाबिल भी न होते। अगर गुनाहों में बू होती तो आज हमारे पास तो कोई बैठना पसंद ही न करता। यह सत्तारी की सिफ़्त का सदक़ा है कि आज हम इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

नफ़्स के मुहासबे का तरीक़ा

तसव्वुफ़ अपने को मिटा देने का दूसरा नाम है। जब पूछना हो तो अपने आपसे पूछिए कि मैंने तसव्वुफ़ में क्या कुछ हासिल किया? इस पैमाने पर अपने आपको परख लीजिएगा कि मैंने

अपने आपको को कितना मिटाया।

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० का फ़रमान

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० अपने ख़तों में फ़रमाते हैं कि सालिक उस वक़्त तक वासिल नहीं होता जब तक अपने आपको ख़सीस कुत्ते से भी बदतर न समझे और हक़ीक़त भी यही है कि कुत्ता अपने मालिक का ज़्यादा वफ़ादार होता है जबकि हम इतने वफ़ादर नहीं हैं।

हज़रत भल्ले शाह रह० का कलाम

हज़रत भल्ले शाह रह० फ़रमाते हैं—

रातें जागें ते शेख़ सुडावें रातें जागन कुत्ते तो इत्ते
रुखा सुखा टुकड़ा खा के दिनीं जा रखां विच सुत्ते तो इत्ते
तूं ना शुक्रा उत्ते पलंगा ते ओह शाकिर रोड़ियाँ इत्ते तीं तो उत्ते
दर मालिक दा मोल न छोड़न भानवें मारे सौ सौ जुत्ते तीं तू उत्ते
उठ भल्लियाँ तू यार मना ले नइ ते बाज़ी ले गए कुत्ते तीं तू उत्ते

कुत्ता अगर रोड़ी पर सोए तो भी शुक्र करता है और अपने मालिक की शिकायत नहीं करता लेकिन हम पलंगों और नरम बिस्तरों पर सोते हैं और उसके बावजूद अगर हमें कोई ज़रा सी तकलीफ़ पहुँचे तो हम शिकवा शुरू कर देते हैं।

हज़रत शेख़ सादी रह० का फ़रमान

मेरे दोस्तो! जिसे अपने अंदर ख़ूबियाँ नज़र आएं तो समझ लो

कि वह बर्बाद हो गया। अपने आप पर नज़र पड़े तो कमियाँ नज़र आएं और जब रब पर नज़र पड़े तो उसकी ख़ूबियाँ और सिफ़्तें नज़र आएं। इसी तरह दूसरों पर नज़र पड़े तो उनकी ख़ूबियों पर और अपने ऊपर नज़र पड़े तो अपनी कमियाँ पर।

शेख़ सादी रह० फ़रमाते हैं—

मेरे शेख़ व मुर्शिद शिहाब रह० ने दो लफ़्ज़ों में पूरी बात का खुलासा समझा दिया। पहला यह कि तुम अपने पर ख़ुदबीं (अपने को देखना वाले) न होना और दूसरा यह कि किसी दूसरे पर बदबीं (दूसरे को बुरा समझने वाले) न होना।

आप देखें तो हमारे अंदर ये दोनों बातें मौजूद हैं। हम अपने पर ख़ुदबीं भी हैं और दूसरे पर बदबीं भी हैं।

एक अजीब तावील

हमारे पहले के बुज़ुर्गों की यह हालत थी कि अगर दूसरों की कोताही भी सामने आती तो तावील फ़रमा लेते ताकि अच्छा गुमान बाक़ी रहे मगर अपनी ख़ूबियों को भी अपनी कमियाँ समझा करते थे। हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० का एक मुरीद ग़फ़लत में पड़ गया। किसी औरत के साथ उसका ताल्लुक़ बन गया। एक आदमी को पता चल गया। वह उससे पहले ही कुछ दुश्मनी रखता था। उसने सोचा कि अच्छा मौक़ा मिला है। मैं हज़रत को जाकर हक़ीक़त बताता हूँ। इस तरह उसका पत्ता ही कट जाएगा। तो वह आया और उसने आकर कहा कि हज़रत! आपका फ़लां मुरीद ज़ानी है। वह तो बुरी हरकतें करता फिरता है

और उसकी फ़लां-फ़लां आँखों देखी बातें हैं। जब उसने गवाहियाँ पेश कीं। बात भी सच्ची थी, पूरी भी हो गई थी तो हज़रत ने सुनकर आख़िर फ़रमाया अच्छा ज़िना किया? मुझे लगता है कि अल्लाह तआला की 'मुज़िल्ल' सिफ़्त की तजल्ली उस पर पड़ गई होगी क्योंकि हिदायत भी देता है और गुमराह भी वही करता है। यह सुनकर वह आदमी हैरान हुआ कि मैं तो बदज़न करने आया था और हज़रत ने तो मामला ही साफ़ कर दिया।

अब्दाल का मक़ाम कैसे मिला

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह० अब्दाल के मक़ाम पर कैसे पहुँचे? फ़रमाया कि एक बार शहर वालों ने कहा काफ़ी दिन हुए हैं बारिश नहीं हुई, लगता है कि शहर में कोई ऐसा गुनाहगार है कि जिसके गुनाहों की वजह से अल्लाह तआला ने रहमत की बारिश को रोका हुआ है। फ़रमाया कि अभी वह बातें कर ही रहे थे मैंने दिल में सोचा कि बायज़ीद! अब तुम्हें इस शहर में रहने का कोई हक़ नहीं, तुम्हीं वह गुनाहगार हो जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने अपनी रहमतों को रोका हुआ है। मैं अपने को पूरे शहर वालों में सबसे कमतर समझकर बाहर निकल गया। मेरे मालिक ने मेरी आजिज़ी को क़ुबूल करके मुझे अब्दाल का मक़ाम अता फ़रमा दिया। *(सुब्हानअल्लाह)*

देखा हम होते तो कहते कि मेरे सिवा सब गुनाहगार हैं। सच्ची बात यही है कि जो अपने को कमतर समझते हैं अल्लाह तआला उन्हीं को बरतर बना लिया करते हैं।

जहन्नम की आग हराम हो गई

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह० के दौर में एक आदमी मर गया। किसी को ख़्वाब में नज़र आया। उसने पूछा सुनाइए क्या मामला बना? कहा कि अल्लाह तआला ने मेरी बख़्शिश कर दी। उसने पूछा नेकियाँ क़ुबूल हो गयीं? कहने लगा, नहीं एक छोटा सा अमल क़ुबूल हो गया। उसने कहा बताओ तो सही वह कौन सा अमल है। कहने लगा, एक बार हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह० जा रहे थे। मैं उनको जानता पहचानता नहीं था। किसी ने कहा देखो अल्लाह तआला का एक वली जा रहा है। मैंने उनको अल्लाह का वली समझकर देखा था। रब्बे करीम ने फ़रमाया तुमने मेरे एक प्यारे को मेरा प्यारा समझकर देखा था, इस निगाह के बदले हमने तुम पर जहन्नम की आग हराम कर दी।

सुब्हानअल्लाह! जब अपने आपको को इतना कमतर समझा तो अल्लाह ने वह मक़ाम अता फ़रमाया कि उनके चेहरे पर कोई मुहब्बत की निगाह डालता तो अल्लाह तआला उनके गुनाहों की भी मग़फ़िरत फ़रमा दिया करते थे।

इमाम बरहक़ की पहचान

पिछले क़रीब ही के ज़माने के कुछ बड़ों के वाक़िआत भी आपको पेश कर दिए जाएं क्योंकि यह उनवान बहुत अहम है। लच्छेदार तक़रीरों की ज़रूरत नहीं। वे आप अपनी-अपनी जगह पर बहुत सुनते हैं। वह सुन-सुनकर तो आप सुन्न हो चुके हैं। अब ऐसी बातों की ज़रूरत है जो अंदर को जगाएं।

है वही तेरे ज़माने का इमाम बरहक़
जो तुझे हाज़िर व मौजूद से बेज़ार करे
आइने में दिखाकर तुझे रुख़े दोस्त
ज़िंदगी तेरे लिए और भी दुश्वार करे

शेख़ का काम क्या होता है? आइने में चेहरा दिखा देना। इसीलिए हदीसे पाक में आया है ﴿المؤمن مراءة المؤمن﴾ मोमिन, मोमिन का आइना है। गोया शेख़ शक्ल दिखाता है कि हक़ीक़त में है क्या। कोई आइने पर ग़ुस्सा करता है कि उसने मेरे चेहरे पर मैल क्यों दिखाई? यह आइने की ग़लती नहीं यह तो उस चेहरे का क़ुसूर है जो मैला बना फिरता है।

ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० का मक़ाम

यह बात दिल के कानों से सुनिएगा। हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी एक बार महफ़िल में तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे फ़क़ीरो! लोग मुतवज्जेह हो गए कि हज़रत कुछ कहना चाहते हैं। फिर फ़रमाया, फ़क़ीरो! और फिर चुप हो गए। सोचते रहे, बात शुरू नहीं की। और सोचकर कहने लगे एक दफ़ा मेरे पेट के अंदर रीह (हवा) पैदा हो गई और वह निकलती नहीं थी। पेट में शिद्दत का दर्द हुआ यहाँ तक कि मैं तो ज़मीन पर लोट-पोट होने लग गया, मुझे दिन में तारे नज़र आने लग गए, मेरी हालत ग़ैर हो गई थी। लोग हैरान हुए कि पीर साहब को लोगों को मुतवज्जेह करके क्या क़िस्सा सुना रहे हैं। भला कोई सुनाता है कि किसी को कि मेरे पेट में रीह पैदा हो गई और निकलती नहीं थी और दर्द की वजह से मैं लोट-पोट होने लग गया। हज़रत

मज़े-मज़े से वाक़िआ सुना रहे थे। फ़रमाने लगे मेरी तो यह हालत थी कि लगता था कि शायद मेरी जान ही निकल जाए। इतने में मेरे जिस्म से रीह ख़ारिज हुई और अल्लाह तआला ने मुझे सकून अता फ़रमा दिया। लोग हैरान थे। फिर फ़रमाने लगे, फ़क़ीरो! जो आदमी जिस्म से गंदगी हवा निकलने का मोहताज हो क्या वह भी बड़ा बोल बोल सकता है। लोगों ने कहा हज़रत! वह तो नहीं बोल सकता। फ़रमाया, अच्छा मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। अब वह बात बताई जो इब्तिदा में बताना चाहते थे। फ़रमाया, मुझे आज रात ख़्वाब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई और आपने इर्शाद फ़रमाया, फ़ज़ल अली क़ुरैशी! तूने सुन्नत की इत्तिबा करने वाले लोगों की ऐसी जमात तैयार की है कि जमात की हैसियत से इस वक़्त पूरी दुनिया में कहीं भी ऐसी जमात मौजूद नहीं है।

सुब्हानअल्लाह! नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बशारत क्या मिली मगर बताने से पहले मामला साफ़ कर दिया कि कहीं बड़ाई और तकब्बुर की बात ही न आए। देखा हमारे मशाइख़ का यह तरीक़ा रहा है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ क़ुबूलियत कि अल्लाह तआला के महबूब बता रहे हैं कि फ़ज़ल अली क़ुरैशी! जैसे सुन्नत की पैरवी करने वाले लोगों की जमात तूने तैयार की है ऐसी जमात इस वक़्त दुनिया में मौजूद नहीं मगर आजिज़ी ऐसी कि उसको बताने से पहले अपने बारे में ऐसी बात करते हैं ताकि नफ़्स के अंदर कोई बड़ाई और तकब्बुर पैदा न हो जाए।

दो रास्ते

हमें चाहिए कि हम अपनी कोताही को तसलीम करने में शर्माया न करें क्योंकि अपनी कोताही को तसलीम न करना शैतान का काम है और अपनी ग़लत को मान लेना हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है। अब हमारे लिए दो रास्ते हैं। कभी घर में कोई ग़लती हो जाए तो नाक ऊँची रखने की ज़रूरत नहीं है। कभी मियाँ-बीवी की कोई बात होती है तो मियाँ चाहता है कि मैं जीती (Win) हुई हालत में आऊँ और बीवी चाहती है कि मैं जीती हुई हालत में आऊँ। दोस्तों या रिश्तेदारों में बात चले तो कहते हैं कि हम जीती पोज़ीशन में रहें यानी हम अपने आपको हमेशा जीती पोज़ीशन में देखना चाहते हैं। नहीं हम हक़ को सामने रखें। अगर कभी कोई ग़लती कोताही हो जाए तो एकदम मान लिया करें क्योंकि अपनी ग़लती को तसलीम कर लेने में अज़्मत हुआ करती है। यह हर आदमी का काम नहीं होता। ख़ूबियों को अपने से न जोड़ा करें। हम ख़ूबियों वाले कहाँ? हम तो ख़ूबियों वाले बनने की तमन्ना करने वाले हैं।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

हज़रत मौलाना मुहम्मद जालंधरी रह० एक बार हदीस का दर्स दे रहे थे। दर्स के दौरान एक जगह ऐसा मुश्किल आई कि उसका हल समझ में नहीं आता था। कोई हमारे जैसा होता तो वह तो वैसे ही गोल कर जाता। पता ही न चलने देता कि यह भी कोई हल तलब नुक्ता है या नहीं। पढ़ने वालों को क्या पता, वे तो पढ़ रहे होते हैं। यह तो उस्ताद का काम होता है कि वह बताए या न

बताए मगर वे लोग अमानतदार थे। यह इल्मी ख़्यानत होती है कि उस्ताद के ज़हन में ख़ुद इश्काल आए, जवाब भी समझ में न आए और तलबा को बताया भी न जाए। उन हज़रात से तो वह ख़्यानत होती नहीं थी। लिहाज़ा अपने तलबा को साफ़ कहा कि इस जगह पर यह मुश्किल आ रहा है मगर इसका हल समझ में नहीं आ रहा। काफ़ी देर तक तलबा भी ख़ामोश रहे और हज़रत भी ख़ामोश रहे। आप बार-बार उसको पढ़ रहे थे, कभी पन्ने उलट रहे थे, कभी उसका हाशिया देख रहे हैं मगर उसका कोई हल समझ में नहीं आ रहा यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि मुझे तो बात समझ नहीं आ रही, चले फ़लां मौलाना से पूछ लेता हूँ। यह वह मौलाना थे जो हज़रत से ही दौराए हदीस कर चुके थे। वह हज़रत के शार्गिद थे। अपने शार्गिदों के सामने उनका नाम लिया कि मैं ज़रा उनसे पूछ लेता हूँ। लिहाज़ा आप उठने लगे इतने में एक तालिब इल्म भागकर गया और उसने जाकर मौलाना को बता दिया कि हज़रत आपके पास इस मक़सद के लिए आ रहे हैं। मौलाना अपनी किताब बंद करके फ़ौरन हज़रत के पास पहुँचे। हाज़िर होकर अर्ज़ किया, हज़रत! आपने याद फ़रमाया है। फ़रमाया, हाँ मौलाना! यह बात मुझे समझ नहीं आ रही है। देखो कि इसका हल क्या है? उन्होंने पढ़ा तो समझ गए मगर बात यूँ की कि हज़रत जब मैं आपके पास पढ़ता था तो आपने हमें सबक़ पढ़ाते हुए इस मक़ाम को यूँ हल फ़रमाया था और आगे उसका जवाब दे दिया। अब देखें की अपनी तरफ़ मंसूब नहीं किया कि जी मेरा तो इल्म इतना है कि अब उस्ताद भी मुझसे पूछने आते हैं। ना! ना! वह सोहबत पाए हुए थे, तर्बियत पाए हुए थे।

इसको कहते हैं तसव्वुफ़ और यह मिटना।

मुफ़्ती मुहम्मद हसन रह० की बैअत का वाक़िआ

जामिया अशरफ़िया लाहौर के बानी हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब अमृतसरी रह० हज़रत थानवी रह० के बड़े ख़लीफ़ाओं में थे। उन्होंने जब दारुल उलूम से पढ़ा तो वहीं पढ़ाने भी लग गए। हत्ताकि हदीस के सबक़ भी मिल गए। अब जो उस्ताद दारुल उलूम में हदीस का उस्ताद हो उनका इल्मी मक़ाम क्या होगा। उनके दिल में बड़ी चाहत थी कि मैं हज़रत थानवी रह० से बैअत हो जाऊँ। इस बारे में कई बार ख़त लिखे। हज़रत हमेशा यही जवाब में फ़रमाते कि मुफ़्ती साहब! बैअत में असल मक़सद तो मुहब्बत व अक़ीदत है, वह आपको पहले से ही हासिल है तो बैअत करना कोई ज़रूरी नहीं है तो टाल देते। फिर ख़त लिखते फिर टाल देते, इधर से इसरार उधर से इंकार। मुफ़्ती साहब के दिल में फिर वलवला उठता कि मैं बैअत की निस्बत हासिल करूं। अगर कभी इज़्हार करते तो हज़रत यही जवाब इर्शाद फ़रमाते। मुफ़्ती साहब फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा थानाभवन हाज़िर हुआ कि मैंने हज़रत रह० से बैअत हुए बग़ैर वापस नहीं आना। मैं तो उनका ग़ुलाम बनना चाहता था। मैं चाहता था कि रोज़े क़यामत हज़रत के ख़ादिमों और ग़ुलामों की फ़हरिस्त में मेरा नाम शामिल कर लिया जाए। यह सोचकर मैं वहाँ पहुँचा और हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ किया, हज़रत! आप मुझे बैअत फ़रमा लें। हज़रत ने वही पुराना जवाब दिया कि मुफ़्ती साहब! बैअत तो कोई ज़रूरी तो नहीं है। फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया हज़रत

आज तो ज़रूरी है। मैं भी दिल में तय करके आया हूँ कि बैअत होकर जाना है। जब हज़रत अक्दस थानवी रह० ने भी देखा कि मुफ़्ती साहब तो डट गए हैं तो हज़रत फ़रमाने लगे मुफ़्ती साहब! तीन शर्त हैं बैअत होने के लिए, आपको वे तीन शर्तें पूरी करना पड़ेंगी।

आज के दौर में अगर किसी से कहा जाए कि बैअत होने के लिए यह शर्तें हैं तो वह मुरीद कहेगा कि जी यह तो बड़े घमंडी पीर हैं, बैअत ही नहीं करते, देखा जी हम घर से बैअत होने के लिए चलकर आए हैं और पीर साहब ने आगे बैअत ही न किया। यह कभी नहीं सोचेंगे कि हमारी तंबीह होगी, हमारा ईलाज होगा, हमारे नफ़्स को दवा पिलाई जाएगी, नहीं बल्कि आज अव्वल तो पीरों के पास आते ही नहीं और जब कभी आते हैं तो पहले आकर हालात बताते हैं और फिर उनके जवाबों का मशवरा भी देते हैं कि गोया यूँ कह रहे हैं कि हज़रत मैं आपको यह मश्वरा देता हूँ कि आप मुझे यह मश्वरा दें। आजकल के मुरीदों का यह हाल है। ख़ैर यह तो बीच में एक बात आ गई। हज़रत रह० ने फ़रमाया, मुफ़्ती साहब! आपको तीन शर्तें पूरी करना पड़ेंगी। उन्होंने कहा हज़रत! मैं पूरी करने के लिए तैयार हूँ। फ़रमाया पहली शर्त तो यह है कि आप पंजाबी ज़बान बोलते हैं। आमतौर से इस ज़बान के बोलने से हर्फ़ के मख़ारिज बिगड़ जाते हैं जब तक सीखे न जाएं। लिहाज़ा आप किसी अच्छे क़ारी से तजवीद व क़िरात का फ़न सीखें हत्ताकि मसनून क़िरात के साथ आप पाँचों नमाज़ें पढ़ा सकें। अर्ज़ किया हज़रत मैं हाज़िर हूँ।

दूसरी शर्त की तफ़सील बताते हुए फ़रमाया कि मुफ़्ती साहब! आपने फ़लाँ फ़लाँ किताबें एक ग़ैर-मुक़ल्लिद आलिम से पढ़ी हैं और ग़ैर-मुक़ल्लिदयत के जरासीम आसानी से ज़हन से नहीं निकलते, आप ये किताबें दारुल उलूम में तलबा के साथ बैठकर उस्तादों से पढ़ें। शर्त देखा क्या लगाई। यह भी तो कह सकते थे कि आप तन्हाई में किसी से पढ़ लें मगर नहीं बल्कि फ़रमाया जिस दारुल उलूम में आप उस्ताद हदीस हैं उसी दारुल उलूम के तलबा के हमराह जमात में बैठकर उस्ताद से उसी तरह पढ़ें जिस तरह तलबा पढ़ते हैं ताकि सही अक़ीदा रखने वाले उस्तादों से पढ़ने की वजह से ग़ैर-मुक़ल्लिदयत के असरात निकल जाएं। मैंने कहा हज़रत मुझे यह मंज़ूर है। तीसरी शर्त यह है कि मुझे इजाज़त दें कि पर्दे में आपकी बीवी को क़सम देकर आपकी निजी ज़िन्दगी के बारे में कुछ बातें पूछ सकूँ। मैंने अर्ज़ किया हज़रत मुझे यह भी मंज़ूर है।

जब यह बात नक़ल की तो हज़रत फ़रमाने लगे कि हज़रत रह० ने तो तीन शर्तें लगायी थीं अगर चौथी शर्त यह भी लगा देते कि रोज़ाना दोपहर तक तुमने बैतुलख़ला की बदबूदार और गंदगी की जगह पर बैठना है तो मैं इस शर्त को भी क़ुबूल कर लेता क्योंकि मैं अपने अंदर की बदबू से छुटकारा पाना चाहता था। जब सारी शर्तें पूरी करके दिखा दीं तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन के लिए निस्बत के रास्ते हमवार फ़रमा दिए। *(अल्लाहु अकबर)*

मुफ़्ती मुहम्मद हसन रह० की बेनफ़्सी

हज़रत मुफ़्ती साहब के बेटे मौलाना उबैदुल्लाह साहब दामत

बरकातुहुम आजकल जामिया अशरफ़िया के मोहतमिम हैं। उन्होंने एक बार इस आजिज़ को बताया कि अब्बा जी कि बेनफ़्सी का यह आलम था कि एक बार घर में सोए हुए थे। गर्मी का मौसम था, बूंदा-बांदी शुरू हो गई। अम्मा जी उठीं और उन्होंने अपनी चारपाई को बरामदे में रख लिया और अब्बा जी क्योंकि पाँव से माज़ूर थे, चल नहीं सकते थे, लिहाज़ा मुझे वालिदा साहिबा ने जगाया। मैं बड़ा बेटा था और मैं जवान था। मुझे जगाकर कहा कि बेटा! उठो और अब्बा जी को बजाए सहन के बरामदे में लिटा दो। तुम उन्हें उठाना और मैं चारपाई बरामदे में लाकर ऊपर बिस्तर कर दूंगी। मैंने उठकर अब्बा जी को उठा लिया तो अब्बा जी की आँखों में आँसू आ गए। मुझे फ़रमाने लगे, बेटा! मुझे माफ़ कर दो, मुझे माफ़ कर दो, मेरी ख़िदमत की वजह से आपके आराम में ख़लल आया है। मेरे आराम की ख़ातिर तुम्हें बेआराम होना पड़ा। सुब्हानअल्लाह यह होती है बेनफ़्सी।

मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रह० की आजिज़ी

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० की बात सुनाए बग़ैर महफ़िल का मज़ा ही नहीं आता। अल्लाह तआला ने उनको इल्म व अमल में बहुत ही बुलंद मर्तबा अता किया था।

उस दौर में शहजहांपुर इंडिया में साल में एक बार सारे मज़हबों के लोग जमा होते थे और अपने-अपने मज़हब की तबलीग़ किया करते थे। मुसलमान उलमा ने सोचा हम किनको बुलाएं। हज़रत मौलाना क़ासिम साहब का नाम सामने आया तो सब मुतमइन हुए

कि अच्छा है कि हज़रत तशरीफ़ लाएं और दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत पर बयान फ़रमाएं। लिहाज़ा उन्होंने हज़रत से राब्ता किया। हज़रत ने कहा कि मैं बहस से एक दिन पहले वहाँ ट्रेन से पहुँच जाऊँगा। जब उन उलमा ने यह जवाब सुना तो वे मुतमइन हो गए कि चलो हज़रत तशरीफ़ ले आएंगे।

जिस दिन हज़रत ने आना था उस दिन लोगों ने उनके इस्तिक़बाल की तैयारियाँ कीं। स्टेशन पर पहुँच गए। हज़रत की बातिनी बसीरत के वाक़िआत मशहूर थे। हदीस शरीफ़ में है कि ﴿اتقوا فراسة المومن فانہ ینظر بنور اللہ.﴾ मोमिन बंदे की फ़िरासत से डरो वह अल्लाह के नूर से देखता है। लिहाज़ा हज़रत ने अपनी बातिनी बसीरत से भांप लिया क्योंकि लोगों को मेरे आने की ख़बर है ऐसा न हो कि वे इस्तिक़बाल के लिए इकठ्ठे हो जाएं। मैं तो पहले ही बहुत बिगड़ा हुआ हूँ मेरा नफ़्स कहीं और न बिगड़ जाएं। लिहाज़ा यह सोचकर आप मंज़िल से एक स्टेशन पहले ही उतर गए कि मैं अगले शहर का सफ़र पैदल ही तय कर लूंगा। तक़रीबन पाँच मील का सफ़र बनता था। आपने पैदल चलना शुरू कर दिया। इधर जब ट्रेन पहुँची तो हज़रत तशरीफ़ नहीं लाए। बहुत हैरान हुए कि क्या बना। उनमें से एक बड़े आलिम ने कहा कि शहर के मुसाफ़िरख़ाने या होटल से मालूमात हासिल करो कि कहीं वहाँ आकर ठहर न गए हों। लिहाज़ा उन्होंने होटलों में पता किया तो वहाँ भी क़ासिम नाम का कोई आदमी नहीं था। एक होटल में ख़ुरशीद हसन नाम का आदमी नज़र आया। इधर जब स्टेशन पर हज़रत उतरे वहाँ से अगले शहर जब रवाना हुए तो रास्ते में एक नहर पार करना पड़ी। जब हज़रत वह

नहर पार करने लगे तो पाजामा पानी में भीग गया। जब उस नहर से बाहर निकले तो उस वक़्त कोई ख़ादिम, कोई शार्गिद, कोई रफ़ीक़े सफ़र साथ नहीं था। अकेले जा रहे थे। सुब्हानअल्लाह! ये दीवाना अल्लाह की मुहब्बत में फ़ना होकर दीने इस्लाम का नुमाइंदा बनकर जा रहा था।

जब आप नहर से बाहर निकले तो आपने अपनी चादर बांध ली, पाजामे को उतार लिया। हाथ में छड़ी थी। सफ़र करना भी ज़रूरी था, सुखाने का इंतिज़ार भी नहीं कर सकते थे। लिहाज़ा उस छड़ी को कंधे पर रख लिया और उसके पीछे अपना पाजामा लटका लिया। दीन इस्लाम का नुमाइंदा इस फ़क़ीराना चाल से जा रहा है। लोग इस्तिक़बाल के लिए जमा हैं और यह फ़क़ीर अल्लाह की याद में मस्त अपनी मंज़िल की चल रहा है। शहर पहुँचकर आपने खुरशीद हसन के नाम से आपने एक कमरा बुक करवा लिया और सोचा कि आज आराम कर लूँ, कल मुबाहिसे से पहले मैं तयशुदा जगह पर पहुँच जाऊँगा।

दूसरी तरफ़ जब लोग ढूंढते-ढूंढते होटल पहुँचे तो खुरशीद हसन का नाम देखा। पहचान लिया कि यह हज़रत ही होंगे। उन्होंने होटल वाले से पूछा कि यहाँ इस कमरे में कौन है? उसने कहा कि एक मौलाना हैं। दुबले-पतले और हल्के-फुलके से हैं। उन्होंने कहा, बस वही जो देखने में दुबला-पतला है ﴿بسطة فى الجسم﴾ तो नहीं मगर ﴿بسطة فى العلم﴾ ज़रूर है। अल्लाह तआला ने इल्म के एतिबार से उसे बड़ा वज़न अता फ़रमाया है। लिहाज़ा वे हज़रत के पास गए और मिलकर अर्ज़ किया, हज़रत आप यहाँ पर हैं और हम तो आपके इस्तिक़बाल के लिए स्टेशन पर गए

हुए थे। हज़रत ने फ़रमाया हाँ मैं भी इसीलिए यहाँ आ गया कि आप मेरे इस्तिक़बाल के लिए स्टेशन पर गए हुए थे। वे बड़े हैरान हुए कि हज़रत यह क्या फ़रमा रहे हैं। फिर हज़रत ने उन्हें आजिज़ी, इन्किसारी का दर्स दिया और बड़ी हसरत के साथ अपने बारे में फ़रमाया कि दो लफ़्ज़ पढ़ लिए जिसकी वजह से दुनिया जान गई वरना क़ासिम अपने आपको ऐसा मिटाता कि किसी को नाम भी पता न चलता।

मेरे दोस्तो! जब अपने दिल में अपने आपको मिटाने की यह कैफ़ियत हो तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को ऊपर उठाया करते हैं। आज जहाँ तक इल्म का नाम रहेगा क़ासिम नानौतवी रह० का नाम भी वहाँ तक रहेगा। *(सुब्हानअल्लाह! सुब्हानअल्लाह)*

ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० की आजिज़ी

अभी हज़रत मास्टर नजम साहब मुझे मजमे में बैठे नज़र आएं। उनको देखकर मुझे एक बात याद आ गई। जो एक बार उन्होंने सुनाई। वह खुद इसके चश्मदीद गवाह हैं मगर हमने सुनी है। वह बात क्योंकि मौज़ू से मुताल्लिक़ है इसलिए आपको भी सुना देते हैं।

एक बार मास्टर साहब हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० की महफ़िल में ख़ानवाल में तशरीफ़ फ़रमा थे उस वक़्त हज़रत के एक मुरीद आए। उस मुरीद का ताल्लुक़ ऐसे इलाक़े से था जहाँ हज़रत सिद्दीक़ी रह० के एक और पीर भाई रहते थे। उनको भी इजाज़त ख़िलाफ़त थी और वह बड़े शेख़ थे। हज़रत भी अपने इलाक़े के शेख़ और आलिम थे और वह भी अपने

इलाक़े के बड़े शेख़ और आलिम थे। मैं इस वक़्त उनका नाम बताना मुनासिब नहीं समझता। जब महफ़िल में वह मुरीद हाज़िर हुए तो हज़रत सिद्दिक़ी रह० ने उनसे पूछा कि भाई आते हुए फ़लां शेख़ से मिलकर आए हैं? उसने बताया कि हाँ, हज़रत! मैं मिलकर आया हूँ।

यह वह दौर था जब हज़रत सिद्दिक़ी रह० पर अल्लाह तआला ने फ़ुतूहात का दरवाज़ा खोल दिया था, दुनिया की रेल-पेल थी। दुनिया क़दमों में बिछी जाती थी। हज़रत ने पूछा कि अच्छा जब आप मिलकर आए तो उन्होंने क्या फ़रमाया? उसने झिझकते झिझकते कहा कि सलाम भी भेजा है मगर हज़रत ने पहचान लिया कि यह कोई बात छिपा रहा है।

पीर आख़िर पीर होते हैं। हमारे हज़रत, हज़रत मुर्शिदे आलम रह० एक बार कराची में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक साहब आए तो किसी ने कहा कि हज़रत! यह फ़लां आदमी इस काम के लिए आया है। हज़रत रह० ने ग़ुस्से में फ़रमाया, कि मैं लानत करता हूँ उस पीर पर जिसके पास मुरीद आए और उसे पता न चले कि यह किस मक़सद के लिए आया है। अल्लाह तआला अपने प्यारे बंदों को नूरे फ़िरासत अता फ़रमा देते हैं।

जब हज़रत सिद्दीक़ी रह० पहचान गए कि कोई बात छिपा रहे हैं तो फ़रमाया कि बताओ। अब वह ख़ामोश रहा। हज़रत ने सख़्ती फ़रमाई कि बताओ और जैसे उन्होंने कहा उसी तरह बताओ कि जिस तरह बात पेश आई है। जब हुक्म दिया तो वह साहब सीधे हो गए और कहने लगे, हज़रत! जब मैं उनसे मिला

तो बताया की मैं हज़रत सिद्दीक़ी की ख़िदमत में जा रहा हूँ तो उन्होंने मुझे कहा कि उनको मेरा सलाम पहुँचा देना और कहना कि दुनिया और आख़िरत दो बहनें हैं जो एक निकाह के अंदर जमा नहीं हो सकतीं ﴿ان تجمعوا بين الاختين﴾। यह बताकर कहने लगा हज़रत! मुझे तो यह बात कुछ समझ नहीं आई। इसलिए मैंने कहना मुनासिब नहीं समझा। हज़रत ने जब यह बात सुनी तो रोना शुरू कर दिया। कोई हम जैसा होता तो हम कहते कि बड़े ज़ाहिद बने फिरते हैं, क्या हमारे अंदर दुनिया की मुहब्बत है। हम भी तो अल्लाह की मुहब्बत में दीन का काम कर रहे हैं। हम इसके सौ जवाब दे देते मगर वहाँ तो आजिज़ी थी।

हज़रत सिद्दीक़ी रह० काफ़ी देर तक सर झुकाकर रोते रहे। आख़िरकार सर उठाया और एक ठंडी साँस लेकर फ़रमाया अल्लाह का शुक्र अभी दुनिया में ऐसे लोग मौजूद हैं जो हमारी इस्लाह फ़रमाते रहते हैं। सुब्हानअल्लाह! हमारी यह हालत है कि अगर कोई हमें इस्लाह की बात कर दे तो तोबा, वह तो गोली की तरह लगती है और हम हर मुमकिन मुख़ालिफ़त पर उतर आते हैं।

हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० की आजिज़ी का वाक़िआ

हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी की ख़ानक़ाह मिस्कीनपूर शरीफ़ में दूर दराज़ से सालिक लोग आकर क़याम करते हैं और तज़्किया‌ए नफ़्स और दिल की सफ़ाई पर मेहनत करते हैं। आमतौर पर ये हज़रात जब फ़ज्र के वक़्त हाजत से फ़ारिग़ होने के लिए

बस्ती से बाहर वीराने में जाते हैं तो वापसी पर कुछ सूखी लकड़ियाँ भी उठाकर लाते हैं। हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० की आदते शरीफ़ा थी कि लकड़ियों का बहुत बड़ा गठ्ठर सर पर उठाकर लाते। मक़ामी लोग इतना बड़ा गठ्ठर देखकर हैरान होते और आपस में तन्ज़ व मज़ाक करते। ये बातें किसी तरह हज़रत क़ुरैशी रह० को पहुँची तो हज़रत रह० ने हज़रत अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० को बुलाकर फ़रमाया, मौलाना! आप इतना बड़ा गठ्ठर उठाकर न लाया करें, बस थोड़ी सी लकड़ियाँ भी ले आएंगे तो कारे ख़ैर में शिरकत हो जाएगी। हज़रत अब्दुल मौलाना ग़फ़ूर मदनी रह० ने अर्ज़ किया, हज़रत! मुझे इसमें कोई मुशक़्क़त नहीं उठानी पड़ती, मैं इसे शौक़ से ले आता हूँ। हज़रत क़ुरैशी रह० ने फ़रमाया, मौलाना! यहाँ मक़ामी लोग जाहिल हैं। ये लोग आपकी क़दर नहीं जानते लिहाज़ा आपके बारे में उल्टी-सीधी बातें करते हैं। हज़रत मौलाना मदनी रह० ने पूछा आख़िर बातें क्या करते हैं? फ़रमाया कि मौलाना! जब आप इतना बड़ा गठ्ठर सर पर ला रहे होते हैं तो ये लोग आपकी तरफ़ इशारा करके कहते हैं देखो पीर क़ुरैशी ने ख़ुरासान से गधा मंगवाया है। हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर मदनी रह० ने फ़ौरन कहा, हज़रत! ये लोग मुझे पहचानते नहीं इसीलिए गधा कहते हैं। सुब्हानअल्लाह तवाज़ो का क्या आलम था।

हज़रत मौलाना सईद अहमद गुहानी रह० की आजिज़ी

हज़रत मौलाना सईद अहमद गुहानी रह०, हज़रत अहमद सईद क़ुरैशी अहमदपुर शरक़िया वालों के ख़लीफ़ाओं में से थे। यहाँ भी

तशरीफ़ लाते थे। हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद यासीन साहब दामत बरकातुहुम के शेख़ थे। इस आजिज़ को भी चंद एक बार यहाँ उनके जूतों में बैठना नसीब हुआ। उस वक़्त छोटी उम्र थी फिर भी ज़ियारत नसीब हुई। वह एक बार छंग तशरीफ़ लाए हुए थे। उनकी महफ़िल में जाकर बैठे तो वह एक मज़मून बयान कर रहे थे। कहने लगे, फ़क़ीरो! तुम तो बहुत अच्छे हो। ये सब ख़लीफ़ा हज़रात दिल के कानों से सुनें। उलमा हज़रात भी दिल के कानों से सुनें, उस्ताद साहिबान भी दिल के कानों से सुनें। फ़रमाया फ़क़ीरो! तुम तो बहुत अच्छे लोग हो कि दीन की मुहब्बत में यहाँ पहुँचे हो। मैं तो कहता हूँ, तुम जन्नती हो। बार-बार जन्नत के तज़्किरे किए। सोचने वाला सोचता है कि जी ये तो जन्नत की टिकटें यहीं तक़सीम होने लगीं। हमारे जैसा कोई बदगुमान होता तो हम तो उठकर ही आ जाते कि जी यह शेख़ भी क्या जो दुनिया में बैठे हुए जन्नत की टिकटें बांट रहा है। नहीं, बाज़ अवक़ात मशाइख़ बात इस अंदाज़ से करते हैं कि हक़ीक़त को समझने की ज़रूरत होती है। जब बार-बार कहा कि तुम जन्नती हो तो आख़िर में ये भी कह दिया कि मैं लिखकर देने को तैयार हूँ कि तुम जन्नती हो।

यह कहने के बाद फ़रमाया, हाँ, रहा तुम्हारे पीर का तो वह खटाई में है। क़यामत के दिन मुझे ज़ंजीरों में बांधकर पेश किया जाएगा। मैं जब तक साबित न कर दूंगा कि मैंने इस अमानत का हक़ अदा कर दिया है। उस वक़्त तक मेरी ज़ंजीरों को नहीं खोला जाएगा। *(अल्लाहुअकबर)*

मेरे दोस्तो! इसे बेनफ़्सी कहते हैं।

﴿فلنسئلن الذين ارسل اليهم ولنسئلن المرسلين﴾

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें बेनफ़्स होकर यह काम करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। अल्लाह तआला हमारी 'मैं' को मिटा दे और हमें अपनी ज़ात में फ़नाइयत अता फ़रमा दे।

(आमीन सुम्मा आमीन)

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

दुनिया की मज़म्मत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

ومن اراد الآخرة وسعٰى لها سعيها وهو مؤمن فاولئك كان سعيهم مشكورا. وقال الله تعالىٰ فى مقام آخر ومن كان يرجو لقاء ربهٖ فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربهٖ احدا. سبحان ربك رب العزه عما يصفون .وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

दुनिया की नापाएदारी

दुनिया ख़त्म होने वाला घर है, आख़िरत बाक़ी रहने वाला घर है। दुनिया दारुल ग़रूर है, आख़िरत दारुस्सुरूर है, दुनिया अमल की जगह है, आख़िरत दारुल जज़ा है। यह चंद रोज़ा दुनिया दारुल इम्तिहान है। हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाया करते थे यह दुनिया सैरगाह नहीं, तमाशागाह नहीं, आरामगाह नहीं, यह इम्तिहानगाह है, अफ़सोस हम में से कुछ लोगों ने इसको चरागाह बना लिया है। यह दुनिया आरज़ी है और आख़िरत हमेशा रहने वाली है। दुनिया ईंट गारे से बनी है, फ़ना होने वाली है फिर भी इंसान इससे मुहब्बत करता है। और आख़िरत सोने-चाँदी से बनी

है, बाक़ी रहने वाली लेकिन फिर भी इंसान उसकी तरफ़ रग़बत नहीं करता।

सच्चे सूफ़ी की पहचान

आख़िरत की तरफ़ इंसान का रुख़ हो जाए ﴿التجافي عن دار الغرور.﴾ इस धोके के घर से बेरग़बती हो जाए और आख़िरत की तरफ़ इंसान की दिलचस्पी हो जाए, उठते बैठते, लेटते, जागते हर वक़्त उसे आख़िरत की तैयारी का ग़म लगा रहे यही तसव्वुफ़ का बुनियादी मक़सद है। इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाया करते थे कि तसव्वुफ़ इज़्तिराब (बेचैनी) का दूसरा नाम है, जब इज़्तिराब न रहा तो तसव्वुफ़ रुख़्सत हो गया। सूफ़ी उस आदमी को कहते हैं जो अल्लाह तआला की मुहब्बत में तड़पता हो। अल्लाह की मुलाक़ात के लिए बेक़रार हो। इसीलिए ﴿ومن اراد الآخرة وسعى لها سعيها وهو مؤمن.﴾ और जो आख़िरत का इरादा करे और कोशिश करे जैसे कोशिश करना चाहिए और ईमान वाला हो ﴿فاولئك كان سعيهم مشكورا.﴾ तो ये लोग हैं जिनकी कोशिश को अल्लाह तआला क़ुबूल करेगा। गोया इस दुनिया से इंसान का बेरग़बत होना और दिल में आख़िरत का शौक़ होना एक सच्चे सूफ़ी की पहचान है।

अवराद व वज़ाईफ़ का बुनियादी मक़सद

दुनिया की मुहब्बत दिल से कैसे निकले और आख़िरत की रग़बत कैसे पैदा हो? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत दिल में कैसे पैदा हो? इसके लिए ज़िक्र की कसरत सिखाई गई है।

मुराक़बे करवाने का मक़सद और अवराद व वज़ाईफ़ का मक़सद दिल में मुहब्बते इलाही का पैदा करना है और दिल से दुनिया की मुहब्बत निकाल देना है।

गुनाहों से बचने की दो सूरतें

दो चीज़ें ऐसी हैं जो इंसान को गुनाहों से बचा सकती हैं। इंसान के दिल में या तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुलाक़ात का शौक़ हो या अल्लाह रब्बुइज़्ज़त के सामने पेशी का ख़ौफ़ हो। इन दोनों के बग़ैर गुनाहों से बचना मुश्किल है।

सबसे बड़ी बातिनी बीमारी

दिल एक बर्तन की तरह है। इसमें दो में से एक चीज़ समा सकती है। मुहब्बते इलाही या दुनिया की मुहब्बत। हदीस पाक में फ़रमाया गया है ﴿حب الدنيا رأس كل خطيئة.﴾ दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की जड़ है। ﴿يليت لنا مثل ما اوتي قارون.﴾ ऐ काश! हमारे पास वह कुछ होता जो क़ारून के पास था। क़ारून के दौर के लोग भी यही कहते थे। इसलिए कि ﴿انه لذو حظ عظيم.﴾ बेशक वह बड़े नसीब वाला है।

अजीब बात यह है कि आज हम बाक़ी सब गुनाहों से तोबा कर लेते हैं मगर दुनिया की मुहब्बत के गुनाह से तोबा नहीं करते। आपने कभी देखा कि आदमी इस बात पर बैठा रो रहा हो कि ऐ अल्लाह! मेरे दिल से दुनिया की मुहब्बत निकाल दे और मेरे इस गुनाह को माफ़ फ़रमा दे। आलिम भी, जाहिल भी, आम भी, ख़ास भी, बाक़ी सब गुनाहों से तोबा करेंगे मगर शायद दुनिया

की मुहब्बत को गुनाह ही नहीं समझते इसलिए इससे तोबा नहीं करते हालाँकि यह गुनाहों में से बड़ा गुनाह है। अल्लाह की एक नेक बंदी राबिया बसरिया रह० तहज्जुद के वक़्त उठकर दो दुआएं ख़ास तौर पर मांगती थीं। एक तो यह कि ऐ अल्लाह! रात आ गई, सितारे चमक रहे हैं, दुनिया के बादशाहों ने अपने दरवाज़े बंद कर लिए, तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है। मैं तेरे सामने दामन फैलाती हूँ और दूसरी दुआ यह मांगती थीं कि ऐ वह ज़ात जिसने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोका हुआ है, दुनिया की मुहब्बत को मेरे दिल में दाख़िल होने से रोक दे।

दुनिया से मुँह मोड़ने का मतलब

जब यूँ कहा जाता है कि दुनिया की मुहब्बत दिल में न हो तो इसका मतलब यह नहीं होता कि इंसान ग़ारो में जाकर ज़िंदगी गुज़ारे, माहौल और समाज से हट-कट कर ज़िंदगी गुज़ारे नहीं बल्कि इसी माहौल में रहते हुए ज़िंदगी गुज़ारे मगर दिल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में मस्त हो। हज़रत मुर्शिदे आलम रह० एक अजीब बात इर्शाद फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआला की तरफ़ जो रास्ता जाता है वह जंगलों और ग़ारों से होकर नहीं जाता बल्कि इन्हीं गली कूचों बाज़ारों से होकर जाता है। इसी माहौल व समाज में रहेंगे और ज़िंदगी को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मो के मुताबिक़ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों के मुताबिक़ बनाएंगे तो हमें अल्लाह तआला की मारिफ़त नसीब होगी। गोया रहना भी पानी में है और अपने परों को गीला भी नहीं होने देना। किसी शायर ने कहा, ऐ मुख़ातिब!

तू मुर्ग़ाबी से सबक़ सीख कि वह पानी में तो बैठती है मगर उसके पर पानी से गीले नहीं होते, सूखे ही रहते हैं। लिहाज़ा जब उसे परवाज़ करना होती हे तो वह एक ही लम्हे में परवाज़ कर जाती है और जिस मुर्ग़ाबी के पर गीले हो जाएं उस में उड़ान के वक़्त उड़ने की ताक़त नहीं होती। शिकार करने वाले लोग मुर्ग़ाबी के बारे में इस बात को जानते हैं। मोमिन भी इसी तरह दुनिया में रहे मगर अपने आपको दुनिया की गंदगियों से पाक रखे।

दुनिया किसे कहते हैं?

याद रखिए कि माल व दौलत का नाम दुनिया नहीं है बल्कि हर वह चीज़ जो अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल कर दे उसका नाम दुनिया है।

तर्जुमा : माल, पैसे, बीवी, बच्चों का नाम दुनिया नहीं, दुनिया तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से ग़ाफ़िल होने का नाम है। इंसान दुनिया में इस तरह ज़िंदगी गुज़ारे कि ग़फ़लत दिल से निकल जाए और इंसान अल्लाह का तलबगार रहे।

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ ख़रीदार नहीं हूँ

दुनिया भी अजीब है। ﴿حلالها حساب وحرامها وبال.﴾ इसका हलाल हो तो हिसाब देना होगा और अगर हराम हो तो वह इंसान के लिए वबाल है।

दुनिया की तलब कौन करता है

एक हदीस में आया है :

﴿الدنيا دار من لا دار له ومال من لا مال له ولها يجمع من لا عقل له﴾

तर्जुमा : दुनिया उसका घर है जिसका कोई घर नहीं, दुनिया का उसका माल है जिसका कोई माल नहीं और दुनिया के लिए वह जमा करता है जिसके पास अक़्ल नहीं होती।

असल चीज़ तो आख़िरत है। इसीलिए फ़रमाया ﴿الدنيا جيفة وطالبها كلاب﴾ कि दुनिया एक मुर्दार है और उसको चाहने वाले कुत्ते हैं।

है लगा दुनिया का मेला चार दिन
देख लो इसका तमाशा चार दिन
क्या करोगे क़िसूर आलीशान को
जब कि है उसमें ठिकाना चार दिन

सालिकों के इज्तिमा का बुनियादी मक़सद

सालिकों के इज्तिमा का बुनियादी मक़सद ऐसी ही चीज़ों की याद दिहानी है। हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ रह० के एक मुरीद फ़रमाते थे कि जब मेरे दिल में सख़्ती आती थी तो मैं मुहम्मद बिन वासेअ रह० का चेहरा देख लिया करता था और मेरे दिल की गिरह खुल जाया करती थी। गोया दिल पर जो ज़ंग लग जाता था उसका इलाज ऐसी महफ़िल में वक़्त गुज़ारने से होता है।

ईमान की किश्ती कैसे डूबती है

माल चाहे इंसान के ईमान के लिए ढाल है जैसा कि फ़रमाया ﴿كاد الفقر ان يكون كفرا﴾ क़रीब है कि तंगदस्ती कुफ़्र तक पहुँचा दे।

माल की मुहब्बत मगर दिल में नहीं होनी चाहिए जैसे एक किश्ती अगर पानी में हो तो चल सकती है अगर पानी न हो तो किश्ती रेत पर तो नहीं चलेगी। मगर जिस तरह पानी किश्ती के अंदर भर जाए तो वह किश्ती के डूबने का सबब बन जाता है इसी तरह ज़िंदगी गुज़ारने के लिए माल हो तो सही, हाथ में हो या जेब में अगर हाथ और जेब से बढ़कर दिल में पहुँच जाए तो इंसान के ईमान वाली किश्ती के डूबने का सबब बन जाता है।

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० की दुनिया से बेरग़बती

बाज़ ऐसे बुज़ुर्ग गुज़रे हैं कि जिनके पास माल आता था तो उन्हें ख़ुशी नहीं होती थी और जाता था तो उन्हें ग़म नहीं होता था। शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० के बारे में किताबों में एक वाक़िआ लिखा कि एक बार उनका सामान तिजारत एक जहाज़ में आया। किसी ने आकर बताया कि हज़रत! इत्तिला मिली है कि वह जहाज़ डूब गया है। हज़रत ने फ़रमाया, अल्हम्दुलिल्लाह। थोड़ी देर के बाद इत्तिला मिली कि हज़रत! वह जहाज़ बचकर किनारे लग गया है। हज़रत ने फ़रमाया अल्हम्दुलिल्लाह। एक आदमी पूछने लगा, हज़रत! डूबने की ख़बर मिली तो तो अल्हम्दुलिल्लाह और बचने की ख़बर मिली तो भी अल्हम्दुलिल्लाह? हज़रत रह० ने फ़रमाया कि जब डूबने की ख़बर मिली तो मैंने अपने दिल में झांका तो उसमें उसका ग़म नहीं था। इसलिए मैंने कहा अल्हम्दुलिल्लाह और जब बचने की ख़बर मिली तो मैंने दिल में झांका तो उसमें ख़ुशी नहीं थी। लिहाज़ा मैंने कहा अल्हम्दुलिल्लाह।

आम लोगों के लिए एक ख़ास रिआयत

यह कैफ़ियतें तो बड़े लोगों की होती हैं। आम लोगों की कैफ़ियत चाहे वह कितने ही नेक हों यह नहीं हो सकती। उनके लिए तो यह मक़सूद हो तो अगरचे पैसे के आने से वह ख़ुश हो और जाने का उसे ग़म हो मगर इस पर अल्लाह की मुहब्बत ग़ालिब हो यानी जब अल्लाह का मामला आए तो इंसान माल को लात मार दे।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने माल की मुहब्बत से मना नहीं किया बल्कि माल की उहुब्बियत से मना फ़रमाया है। इसीलिए फ़रमाया :

قل ان كان اباؤكم وابناؤكم واخوانكم وازواجكم وعشيرتكم واموال ۨ

اقترفتموها وتجارة تخشون كسادها و مسٰكن ترضونها.

इन तमाम चीज़ों के बारे में फ़रमाया ﴿احب اليكم من الله ورسوله﴾ अगर यह अल्लाह और उसके रसूल से ज़्यादा महबूब हैं तो फिर यह नुक़सानदेह है।

दुनिया को ज़लील करके दिल से निकालने का तरीक़ा

जब इंसान ज़िक्र करता है तो दिल में मुहब्बते इलाही पैदा होती है और दुनिया की मुहब्बत निकल जाती है। जब हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का पैग़ाम बिलक़ीस के पास पहुँचा तो उसने अपने अमीरों से मश्वरा किया कि हम क्या करें? बाज़ ने कहा कि आप उनसे जंग करें हम आपका साथ देंगे मगर उसने

कहा, ﴿ان الملوك اذا دخلوا قرية.﴾ जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होत हैं ﴿افسدوها﴾ तो वह उसमें फ़साद मचा देते हैं। ﴿وجعلوآ اعزة اهلها اذلة.﴾ और वहाँ के इज़्ज़तदार लोगों को ज़लील करके निकाल देते हैं।

इस पर मुफ़स्सिरीन ने एक मिसाल लिखी है कि अगर क़रिया से मुराद दिल की बस्ती ले ली जाए और मलूक से मुराद मालिकुल मुल्क का नाम और इसकी मुहब्बत ले ली जाए तो मिसाल यूँ बनेगी ﴿ان الملوك اذا دخلوا قرية.﴾ कि जब अल्लाह का नाम दिल की बस्ती में दाख़िल होता है तो ﴿افسدوها﴾ तो उसमें इंक़लाब पैदा कर देता है ﴿وجعلوآ اعزة اهلها اذلة.﴾ और दुनिया जो इस दिल में इज़्ज़तदार होती है यह उसको ज़लील करके बाहर निकाल देता है। अल्लाह के ज़िक्र की कसरत के लिए बार-बार इसरार किया जाता है कि यह इंसान के दिल में दुनिया की बेरग़बती पैदा कर देती हे। इसीलिए फ़रमाया ﴿واذكر اسم ربك وتبتل اليه تبتيلا.﴾ अल्लाह के नाम का ज़िक्र कर और उसकी तरफ़ 'तबत्तुल' अख़्तियार कर। तबत्तुल कहते हैं दुनिया से कटने और अल्लाह से जुड़ने को, सो इसके लिए ज़िक्र की कसरत बुनियादी चीज़ है।

दुनिया की मुहब्बत का अमली ज़िंदगी पर असर

दुनिया से बेरग़बती जब तक न हो आमाल के असरात नहीं होते। जिस आदमी के दिल में दुनिया की मुहब्बत नहीं उसके थोड़े से आमाल पर भी ज़्यादा असरात ज़ाहिर होंगे और जिस आदमी के दिल में दुनिया की मुहब्बत है उसके ज़्यादा आमाल पर भी थोड़े असरात ज़ाहिर होंगे।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की सबसे बड़ी करामत

जिनकी ज़िंदगी मे नेकी और तक़्वा हो और मशाइख़ की सोहबत में ज़िंदगी गुज़ारी हो तो उन पर भी अल्लाह का रंग ऐसा चढ़ जाता है कि फिर दुनिया उन पर असर नहीं करती। देखें कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम कैसे दुनिया से बेरग़बती की ज़िंदगी गुज़ारने वाले थे। बाज़ लोगों को सांप का मंतर आता है। वे सांप को पकड़ भी लें तो सांप उन्हें नुक़सान नहीं देता। सहाबा किराम को भी दुनिया का मंतर आता था। यही वजह थी कि जब क़ैसर व किसरा के तख़्त व ताज उनके क़दमों में आए तो सोने-चाँदी के ढेर लग गए थे मगर उन पर इसका कोई असर नहीं होता था। सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेहराब में खड़े होकर फ़रमाया ﴿يا صفراء يا بيضاء غر غيرى﴾ ऐ सोना! ऐ चाँदी! मेरे ग़ैर को धोका दे, मैं तेरे धोके में आने वाला नहीं। इसीलिए हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक ही दिन में बारह हज़ार दिरहम ख़ैरात कर दिए।

लोग समझते हैं कि सहाबा किराम की करामत में से बड़ी करामत, हज़रत साद बिन अबि वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर समेत दरिया में से पार हो जाना है। मगर उलमा ने लिखा है कि सहाबा किराम की इससे भी बड़ी करामत यह है कि जब उनके क़दमों में सोने-चाँदी के ढेर लगे हुए थे और दुनिया का दरिया बह रहा था। उस वक़्त वे अपने ईमान की किश्ती को इस दरिया में से सलामत बचा कर ले गए।

दुनिया और आख़िरत दो बहनें

बाज़ मशाइख़ कहते हैं कि दुनिया और आख़िरत एक दूसरे की सौकनें हैं यानी एक को राज़ी करे तो दूसरी नाराज़ मगर हक़ीक़त यह है कि दुनिया और आख़िरत दो बहनें हैं जो एक आदमी के निकाह में जमा हो ही नहीं सकतीं एक से निकाह करेंगे तो दूसरी हराम हो जाएगी।

सोने की बदूब

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० फ़रमाते थे कि अगर सोने को हाथ में थोड़ी देर के लिए रखें तो हाथ से बदबू आने लगती है। मेरे दोस्तो! अगर हाथ में सोने की वजह से बदबू आ सकती है तो अगर सोना दिल में हो तो क्या दिल में बदबू नहीं आएगी?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का लोगों को ख़िताब

बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक दफ़ा लोगों से ख़िताब करके यूँ फ़रमाने लगे—

तर्जुमा : दुनिया रोज़-ब-रोज़ मुँह फेरती जा रही है और आख़िरत रोज़-ब-रोज़ क़रीब होती जा रही है और दुनिया व आख़िरत में से हर एक की मुस्तक़िल औलाद है। तुम दुनिया की औलाद न बनो बल्कि आख़िरत की औलाद बनो। आज के दिन अमल कर लो मगर हिसाब न होगा और कल के दिन हिसाब होगा मगर अमल की मोहलत न मिलेगी।

हारूत-मारूत से बड़ी जादूगरनी

हदीस पाक में फ़र्माया गया है ﴿الدنيا اسحر من هاروت و ماروت﴾ दुनिया हारूत-मारूत से भी बड़ी जादूगरनी है। इसकी वजह यह है कि ﴿كان سحر هاروت و ماروت يفرق بين المرء و زوجه﴾ कि हारूत-मारूत जो जादू लाए थे वह जादू मियाँ-बीवी में जुदाई करा देता था और दुनिया ऐसी जादूगरनी है जो बंदे और परवरदिगार के बीच जुदाई कर देती है।

दुनियादारों की ताज़ीम के नुक़सानात

दुनियादार लोगों की ताज़ीम एक अज़ीम मुसीबत है। फ़रमाया गया कि ﴿نعم الا مير علٰى باب الفقير وبئس الفقير علٰى باب الامير.﴾ अगर कोई दुनियादार आदमी अल्लाह वालों के दरवाज़े पर आता है तो यह बहुत तारीफ़ के क़ाबिल बात है। वह दुनियादार भी अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़त वाला बन जाया करता है और जो फ़क़ीरों का लिबास पहनकर दुनियादारों के सामाने अपनी हाजतें लेकर जाता है वह बहुत नापसंदीदा शख़्स होता है। इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया है कि जिसने किसी अमीर आदमी के सामने उसकी दौलत की वजह से तवाज़े की उसका दो हिस्से दीन बर्बाद हो गया।

इकराम और तवाज़े में फ़र्क़

यहाँ एक बात समझ लीजिए कि इकराम और तवाज़े में फ़र्क़ है। इकराम का ताल्लुक़ ज़ाहिर के साथ है और तवाज़े का ताल्लुक़ दिल से है। अगर दुनियादार का इकराम दिल से करे, ज़ाहिर से नहीं तो दो हिस्से दीन रुख़्सत हो जाएगा। इसीलिए इमाम रब्बानी

हज़रत मुजद्दिद अलफ़सानी रह० मक्तूबात शरीफ़ में फ़रमाते हैं कि दुनियादार लोगों की सोहबत से ऐसे भागो जैसे शेर से भागते हो। उनका खाना खाने से भी बचो क्योंकि उनका रोग़नदार लुक़्मा भी दिल की बीमारियों में इज़ाफ़ा कर देता है। उनसे मुहब्बत भी न करो, यहाँ तक कि उनको देखने से भी बचो।

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० और उनके साथियों का ज़ोहद

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० अपने दो साथियों के साथ किसी जगह हदीस सीखने के लिए गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने सोचा उस्ताद के पास रिहाइश का इंतिज़ाम नहीं है। इसलिए एक मस्जिद में क़याम फ़रमाया। अपने उस्ताद के पास रोज़ाना जाते और सबक़ पढ़कर वापस आ जाते। उनके पास सफ़र के लिए जो सामान था वह कुछ दिनों के बाद ख़त्म हो गया और फ़ाक़ा शुरू हो गया। तीनों दोस्तों ने मशूवरा किया कि हम में से दो आदमी तो पढ़ने चले जाया करें और एक आदमी मज़दूरी के लिए जाया करे। वह मज़दूरी से जो कमाकर लाएगा वह सब मिलकर खा लिया करेंगे।

दो आदमी पढ़ने चले गए, तीसरा आदमी मज़दूरी करने के लिए चल पड़ा। उसने सोचा कि जब मज़दूरी ही करनी है तो बड़े की मज़दूरी क्यों न करूं। लिहाज़ा मस्जिद में आए, दो रक्अत की नियत बांधी, निहायत ख़ुशू-ख़ुज़ू से नमाज़ पढ़ी। फिर अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ मांगने लग गए। फिर तिलावत की, फिर

दुआ मांगते रहे, रुकू सज्दों में ख़ूब गिड़गिड़ाते रहे। यहाँ तक कि वक़्त ख़त्म हो गया। शाम को वापस आ गए। दोस्तो ने कहा, सुनाओ भाई! कुछ लाए हो? कहने लगे, मैंने बड़े की मज़दूरी की है। वह मज़दूरी पूरी-पूरी देता है, वह मुझे ज़रूरी मज़दूरी देगा। उस दिन तो फ़ाक़ा हो गया।

अगले दिन दूसरे की बारी आई। दो तो सबक़ पढ़ने चले गए और तीसरे के दिल में भी यही बात आई कि जब मज़दूरी करनी ही है तो मैं अल्लाह तआला की मज़दूरी क्यों न करूं। उसने भी वही काम किए जो पहले ने किए थे। शाम को वापस आए तो साथियों ने पूछा क्या बना? कहने लगे मैंने ऐसे मालिक की मज़दूरी की है जो अपने ग़ुलामों का बड़ा ही ख़्याल रखने वाला है और मुझे उम्मीद है कि मुझे पूरा-पूरा बदला देगा। इस तरह दूसरा दिन भी फ़ाक़े से गुज़र गया।

अगले दिन तीसरे आदमी ने भी यही मामला किया। उसने भी सोचा कि जब अल्लाह तआला ने देना है तो फिर उसी से मांगते हैं। उसके वायदे तो सच्चे हैं तो वह भी तीसरे दिन इबादत करता रहा और शाम को ख़ाली हाथ वापस आ गया और फ़ाक़ा ही रहा।

वक़्त का बादशाह रात को सोया हुआ था। अचानक उसने एक आवाज़ सुनी और उठ बैठा। उसने देखा कि महल की छत पर से कोई नीचे उतर रहा है। हैरान हुआ कि मेरे महल की छत पर रात के वक़्त कौन है। जब ग़ौर से देखा तो वह अजीब शक्ल की बला थी। उसने अपना पंजा सीधा किया हुआ था। बादशाह के क़रीब पहुँचकर उस बला ने कहा कि सुफ़ियान सूरी रह० और

उसके साथियों का ख़्याल करो वरना तुम्हें थप्पड़ लगेगा। फिर उस बला ने अपने पंजे को समेट लिया और वापस चली गई।

बादशाह के तो पसीने की वजह से कपड़े भीग गए। उसने उठकर शोर मचा दिया कि पता करो कि सुफ़ियान सूरी कौन है। सुब्हानअल्लाह अगर किसी आम बंदे की नौकरी करते तो कुछ थोड़ा सा मिल जाता मगर पूरी हुकूमत इस तरह हरकत में न आती। उन्होंने क्योंकि बड़े की नौकरी की थी। इसलिए उसकी मख़्लूक़ उसी वक़्त उसके हुक्म की तामील में लग गई। बादशाह ने ऐलान कर दिया कि तुम कुछ हीरे चाँदी और दीनार भी ले जाओ, वह जहाँ भी मिलें वहाँ उनको दे देना और इसके बाद बड़े इकराम से मेरे पास लेकर आ जाना। सब लोग ढूंढते फिरते थे कि सुफ़ियान सूरी कहाँ है? सुफ़ियान सूरी कहाँ हैं? यहाँ तक कि एक आदमी मदरसे में पहुँचा। कहने लगा बादशाह सलामत के साथ इस तरह का वाक़िआ पेश आया है। उन तीनों दोस्तों ने कहा कि जिस मालिक से हमने मांगा था उसने देने के लिए अपने बंदों को हमारे पीछे भेज दिया है। अब उन बंदों के पास चलकर जाना हमारी ईमानी ग़ैरत के ख़िलाफ़ है। हमारा परवरदिगार इस बात पर क़ादिर है कि हम अगर सुब्हानअल्लाह पढ़ लें तो वह हमारी भूख और प्यास को दूर कर देगा। लिहाज़ा जितने दिन रहना था ये अल्लाह तआला का ज़िक्र कर लेते थे, अल्लाह तआला उनकी भूख और प्यास को दूर कर देता था।

दुनिया का माल पैसा मिला मगर उन्होंने उसे ठुकरा दिया क्योंकि अल्लाह वालों को ये ठीकरियाँ नज़र आती हैं। हमारे लिए

क्योंकि ये हीरे और मोती होते हैं इसलिए हमारी आँखें उनको देखकर चुंधिया जाती हैं।

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ रह० का ज़ोहद

हमारे सिलसिलाए आलिया नक्शबंदिया के एक शेख़ मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ रह० को वक़्त के गर्वनर ने पैग़ाम भेजा कि हज़रत! आप तशरीफ़ लाइए। आपकी ख़ानक़ाह में दो दूर-दराज़ से लोग फ़ायदा उठाने के लिए आते हैं। हमने फ़ैसला किया है कि आपके लिए ज़मीन का एक टुकड़ा ख़ास कर दिया जाए। हज़रत रह० ने जवाब भिजवाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस दुनिया को क़लील कहा है ﴿متاع الدنيا قليل﴾ आप कह दीजिए कि दुनिया की पूंजी थोड़ी है। जिस पूरी दुनिया को अल्लाह तआला ने क़लील कहा, उस क़लील में से थोड़ा सा हिस्सा आपके इख़्तियार में है। इस थोड़े से हिस्से में से थोड़ा सा हिस्सा आप मुझे देना चाहते हैं तो इतना थोड़ा लेते हुए मुझे शर्म आती है।

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० का ज़ोहद

एक बार वक़्त के हाकिम ने हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० के नाम पर्चा लिखा कि आप लोगों को अल्लाह! अल्लाह! सिखाते हैं और दूर दराज़ से लोग आकर आपसे फ़ायदा उठाते हैं। इसलिए मैं ख़ुश होकर आपको इलाक़ा नीम-रोज़ का गर्वनर बना दिया। हज़रत रह० ने उसी पर्चे के पीछे उसका ऐसा जवाब लिखकर वापस कर दिया जो सोने की रोशनाई से लिखने

के क़ाबिल है। फ़रमाया, जब से मुझे नीम-शब (आधी रात) की हुक्मुरानी मिली है तब से मेरी नज़रों में नीम-रोज़ की हुक्मुरानी मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है।(सुब्हानअल्लाह)

इमाम शाफ़ई रह० का फ़तवा

इमाम शाफ़ई रह० फ़तवा दिया कि अगर कोई आदमी वसीयत कर जाए कि मेरे मरने के बाद मेरी जाएदाद उस बंदे को दी जाए तो इंसानों में सबसे ज़्यादा अक़्लमंद हो तो मैं फ़तवा देता हूँ ज़ाहिद इंसान दुनिया में सबसे ज़्यादा अक़्लमंद होता है लिहाज़ा उसकी जाएदाद का वारिस बना दिया जाए क्योंकि उसने इस दुनिया की हक़ीक़त को देख लिया होता है और उसके दिल से दुनिया की हक़ीक़त निकल चुकी होती है।

एक फ़क़ीर की दुनिया से बेरग़बती

एक बादशाह कहीं जा रहा था। उसने देखा कि रास्ते में एक फ़क़ीर लेटा हुआ है और उसने बादशाह की तरफ़ पाँव फैलाए हुए हैं। बादशाह हैरान हुआ कि सारी दुनिया मेरी जी हुज़ूरी करने वाली है और यह अजीब आदमी है कि फटे पुराने कपड़े पहने हुए है और मेरी तरफ़ पाँव पसारे सोया हुआ है। लिहाज़ा बादशाह ने एक आदमी से कहा कि इसको कुछ पैसे दे दो। जब उसके नौकर ने पैसे आगे बढ़ाए तो फ़क़ीर कहने लगा, बादशाह सलामत! जब से मैंने आपकी तरफ़ से हाथ हटाए है तब से मैंने आपकी तरफ़ पाँव फैलाए हुए हैं। सुब्हानअल्लाह! ये हैं ज़ाहिद लोग जिनके दिलों में दुनिया की मुहब्बत नहीं होती।

दुनिया एक दिन की है

एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे ﴿الدنيا يوم ولنا فيها صوم﴾ कि दुनिया एक दिन की है और हमने उस एक दिन में रोज़ा रखा हुआ है। मोमिन इस दुनिया में रोज़ेदार की तरह है जो कि हद और पाबंदियों में ज़िंदगी गुज़ारता है। ऐश व आराम की जगह आख़िरत है। दुनिया में मरते दम तक इंसान को सुन्नत व शरिअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारनी है। हक़ीक़त यह है कि आख़िरत में भी इंसान को यह ज़िंदगी एक ख़्वाब की तरह नज़र आएगी। ﴿إلا عشية او ضحٰها﴾ कि गोया हम एक पहर या उसका कुछ हिस्सा ज़िंदगी गुज़ार आए हैं।

ख़्वाजा अहमद सईद रह० की दुनिया से बेरग़बती

ख़्वाजा अहमद सईद रह० हमारे सिलसिलाए आलिया नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग हैं। आप हज़रत अबू सईद रह० के बेटे और शाह अब्दुल ग़नी रह० के भाई हैं। शाह अब्दुल ग़नी रह० वह मुहद्दिस है जो हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० के उस्ताद कहे जाते हैं जिनका फ़ैज़ आज दारुल उलूम देवबंद की वजह से पूरी दुनिया में फैल चुका है।

अंग्रेज़ के दौर हुकूमत में ख़्वाजा अहमद सईद रह० और शाह अब्दुल ग़नी रह० यहाँ से हिजरत करके हिजाज़ चले गए। लगभग सौ आदमियों का क़ाफ़िला था। वहाँ गए तो बहुत तंगी थी। तंगी की हालत बनी हुई थी, फ़ाक़े आ रहे थे। औरतें भी थीं, बच्चे भी थे। इस दौरान शाह अब्दुल ग़नी रह० जो इल्म के आफ़ताब व माहताब थे उनके दिल में ख़्याल आया कि क्यों न हम यहाँ

मक़ामी लोगों से राब्ता करें और उनको अपनी हालत बताएं ताकि बच्चों के लिए कुछ इंतिज़ाम हो सके। उन्होंने आकर भाई शाह अहमद सईद रह० से कहा कि मेरे दिल में इस तरह का ख़्याल आया है। ख़्वाजा अहमद सईद रह० ने अजीब जवाब दिया। फ़रमाया, मेरी हालत ऐसी है जैसे एक रोज़ादार ने रोज़ा रखा हुआ हो और उसके इफ़्तार करने में कुछ मिनट बाक़ी हैं। क्या आप ऐसे आदमी को किसी वजह से रोज़ा तोड़ने का हुक्म देंगे या रोज़ा पूरा करने का हुक्म देंगे? क्योंकि आलिम थे इसलिए इल्मी अंदाज़ में बात कही। वह कहने लगे कि अगर इतना थोड़ा सा वक़्त बाक़ी है तो रोज़ा पूरा करने का मश्वरा दिया जाएगा। फ़रमाया मेरा यही हाल है कि मैं इस दुनिया में रोज़ादार हूँ, अब इफ़्तार का वक़्त क़रीब है और मैं अब अपनी दुनिया का रोज़ा तोड़ना नहीं चाहता।

रिज़्क़ की फ़िक्र

आप सोचेंगे कि इस तरह ज़ोहद अपनाने वाले कहाँ से खाते होंगे? जी हाँ, जिसके दिल में दुनिया की हक़ीक़त बैठ जाती है उसे फिर ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा भी आ जाता है। एक दफ़ा हज़रत बयज़ीद बुस्तामी रह० ने एक इमाम साहब के पीछे नमाज़ पढ़ी। बाद में इमाम साहब ने हज़रत से पूछा सुनाइए जी! रोटी खाने के लिए क्या काम करते हो? उन्होंने फ़रमाया, पहले मैं अपनी नमाज़ लौटा लूँ फिर तुझे जवाब दूंगा। उसने फिर कहा, क्या मतलब? फ़रमाया, तुम इमाम बन गए हो और तुम्हें इतना भी पता नहीं कि अल्लाह तआला मेरा रज़्ज़ाक़ है। कहने लगा,

हज़रत! कुछ तफ़्सील तो बताएं? हज़रत रह० ने फ़रमाया, जिस दिन से यह आयत क़ुरआन में पढ़ी ﴿وفی السماء رزقکم﴾ कि रिज़्क़ तो तुम्हारा आसमानों में है उसके बाद सर से रिज़्क़ का ग़म उतर गया।

मेरे दोस्तो! अल्लाह को मनाकर रखें। फिर देखना कि अल्लाह तआला रिज़्क़ की कुशादगी कर देगा। इस रिज़्क़ में बीवी, बच्चे, घर, बार, ये बहारें, सुकून और तमाम ज़िंदगी की ज़रूरतें शामिल हैं और हमारी यह हालत कि रिज़्क़ के पीछे मारे-मारे फिर रहे होते हैं।

फ़िक्र की घड़ी

आज ऐसा वक़्त आ चुका है कि अंदाज़ा सौ में से कम व बेश नव्वे आदमी अगर मशाइख़ के पास आते हैं, कहीं न कहीं उनके दिलों में दुनिया छिपी होती है। कोई दम करवाने आ गया, कोई तावीज़ लेने आ गया, कोई दुआ करवाने आ गया। अगर इन दुआओं के पीछे देखें तो किसी का कारोबार होगा, किसी का घर-बार होगा, किसी का कोई और मामला फंसा हुआ होगा बल्कि हर आने वाला आजकल का सालिक चार बातें करता है। पहली बार तो यह बात करता है कि हज़रत! मैंने बड़े मशाइख़ ढूंढे मगर आप मेरे पीर व मुर्शिद हैं, मेरे ऊपर तवज्जोह फ़रमाइए, वैसे मुझे जल्दी घर जाना है। दूसरी यह बात करता है कि हज़रत! कारोबार आजकल ठीक नहीं है। उसके लिए पढ़ने के लिए कुछ फ़रमा दें, वैसे मुझे जल्दी घर जाना है। तीसरी बात यह है कि हज़रत! घर में कुछ झगड़ा रहता है उसके लिए भी कोई नक़्श दे दीजिए वैसे

मुझे जल्दी घर जाना है। और आख़िरी बात यह करता है कि हज़रत! क्या करूं मुराक़बा नहीं हो सकता आप ही कुछ तवज्जोह फ़रमा दीजिए वैसे मुझे जल्दी घर जाना है।

जब कम हिम्मती का यह हाल हो जाए तो ज़रा सोचिए कि इंसान बातिनी मंज़िलों को कैसे तय करेगा। यह रास्ता तो बुलंद हिम्मती, मेहनत और मुजाहिदा चाहता है। सूफ़ी तो मन का सच्चा, धुन का पक्का होता है। हज़रत थानवी रह० लिखते हैं जिस आदमी को धुन और ध्यान नसीब हो जाए वह ख़ुशक़िस्मत इंसान होता है यानी मक़सद के हासिल करने की उसमें धुन हो और वह पूरे ध्यान से उस काम में लगा हुआ हो।

❋ ❋ ❋

दीनी मदरसों की अहमियत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

قل هل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون انما يتذكر اولو الالباب ٥ سبحان ربك رب العزه عما يصفون .وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

दो अज़ीम नेमतें

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में दो नेमतें लेकर आए, एक रोशन किताब और दूसरी रोशन दिल, एक चमकता हुआ इल्म और दूसरा दमकते हुए अख़्लाक़, एक इल्मे कामिल और दूसरा अमले कामिल। क़ुरआन पाक की वह आयत जिसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ईनाम पाने वाले बंदों का ज़िक्र किया है उसमें फ़रमाया गया :

﴿من النبين والصديقين والشهداء والصالحين.﴾

अंबिया और सिद्दीक़ीन और शोहदा और सालिहीन में से।

इस आयत मुबारका की हिसाब से अंबिया और सिद्दीक़ीन के साथ मज़बूत तर होती है। जबकि शोहदा और सालिहीन की निस्बत अमल के साथ मज़बूत तर होती है। मालूम यह हुआ कि काएनात की तमाम सआदतें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इल्म व अमल में रख दी हैं।

मौजूदा दौर में इल्म व अमल की गिरावट

आजकल इल्म व अमल की गिरावट का दौर है। जो मुसलमान नमाज़ पढ़ ले वह अपने आपको दीनदार समझता है, जो तहज्जुद पढ़ ले वह जुनैद बग़दादी, जो हज कर ले वह अपने आपको इस्लाम का ठेकेदार और जो ज़कात अदा करे वह गोया इस्लाम की रजिस्ट्री करवा लेता है। हम ख़्वाहिशात के पुजारी बन चुके हैं। आज के दौर की आम बीमारी है कि ﴿يا ليت لنا مثل ما اوتي قارون﴾ (ऐ काश! हमें इतना मिलता जितना क़ारून को मिला।) मालदारी की लाइन ने हमें इतना परेशान कर रखा है कि जो जिस दर्जे में है आप उसकी ज़बान से शुक्र के बोल बहुत कम सुनेंगे, नाशुक्री के कलिमे अक्सर आपके कानों में पड़ते रहेंगे।

दुनिया में एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए दौड़ लग चुकी है। आज हमने अपनी औलादों को ऐसी तालीम हासिल करने के लिए स्कूलों की भट्टी में झोंक दिया है जिससे वे बड़े होकर चार पैसे कमाएंगे। आप देखते हैं कि सुबह के वक़्त हज़ारों की तादाद में बच्चे और बच्चियाँ घरों से स्कूलों और कालेजों और युनिर्वसिटियों की तरफ़ जा रहे होते हैं। यह सब इसलिए है कि हम मौजूदा ज़माने के इल्मों को हासिल करना ज़रूरी समझते हैं और यह बात

जानते हैं कि इसके बग़ैर इनको रोज़ी हासिल करने में दिक़्क़त होगी। यह हक़ीक़त अपनी जगह ठीक है मगर हमारी औलादों को इससे पहले एक और चीज़ की भी ज़रूरत है जिसे अल्लाह का दीन कहते हैं। अगर औलाद दीनदार न बनी और दुनिया में मज़े भी करती रही तो फिर किस काम की? अगर उसने अल्लाह के हुक्मों को न जाना, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों को न माना और दीन से बेगाना रहकर ज़िंदगी गुज़ारी तो माँ-बाप के लिए दुनिया और आख़िरत का बोझ बनेगी।

एक ग़लतफ़हमी की बुनियाद

अजीब बात तो यह है कि पढ़े लिखे माँ-बाप जो दीन व दुनिया बराबर का नारा लगाते हैं वे अपनी तमाम की तमाम औलाद दुनियावी तालीम पढ़ांते हैं जबकि दीनी उलूम पढ़ाने से घबराते हैं। यह फ़िक़रा फिर ज़हन में बिठा लीजिए, "पढ़े-लिखे माँ-बाप अपनी औलादों को रिवाजी तालीम तो पढ़ाते हैं मगर उन्हें दीनी उलूम पढ़ाने से घबराते हैं।" वे समझते हैं कि शायद कोई अनोखे इंसान बन जाएंगे और वे ऐसे आमाल अपनाएंगे जो आज के दौर में अमल के क़ाबिल नहीं। इन अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे बच्चे और बच्चियों का दीन के बारे में यह ज़हन बनता चला जा रहा है कि ये चौदह सौ साल पहले की एक पुरानी चीज़ है जबकि आज नया दौर है, नया ज़माना है और साइंस की खोजें हो चुकी हैं। इसलिए समाज भी नया होना चाहिए। यही ग़लत फ़हमी की बुनियाद है।

दीनी उलूम हमेशा के लिए हैं

चौदह सौ साल पहले अमन व सकून की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए जो उसूल व क़ायदे बनाए गए थे वे क़यामत तक बाक़ी रहेंगे। वे दुनिया की सच्चाईयाँ हैं, काएनात की हक़ीक़तें हैं, वे सच्चाईयों से भरी हुई बातें हैं। हर दौर और हर ज़माने में वे सच्ची साबित होंगी। इंसानियत जब भी इनको ठुकराएगी वह ठोकरे खाएगी, ज़िल्लतें उठाऐगी और आख़िर हांपती-कांपती इस दरवाज़े पर आएगी—

न कहीं जहाँ में अमां मिली जो अमां मिली तो कहाँ मिली
मेरे जुर्म ख़ाना ख़राब को तेरे अफ़ुवे बंदा नवाज़ में

मौजूदा इल्म उधूरे हैं

आम स्कूलों और कालेजों में इस मौजूदा तालीम की बड़ी अहमियत है जबकि स्लेबस में दीनी उलूम की बड़ी कमी होती है। वे इस कमी के बावजूद अपने आपको नाक़िस नहीं समझते बल्कि इन मदरसों के तलबा और उलमा को नाक़िस समझते हैं जो अपनी ज़िंदगियों को दीनी इल्म हासिल करने के लिए वक़्फ़ कर चुके हैं। जिनकी ज़िंदगी सुबह व शाम अल्लाह का क़ुरआन और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान पढ़ते गुज़र जाती है, वह उनको कम नज़री से देखते हैं।

दुनिया से मुहब्बत का नतीजा

क्या हुआ जो इन उलूमे दीन की वजह से चार टके नहीं कमाए जा सकते। क्या रब की रज़ा की कोई क़ीमत नहीं है?

क्या नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में क़ुबूलियत की कोई क़ीमत नहीं है? हम इतने पैसे के पुजारी हो चुके हैं, दुनिया हमारे दिमाग़ों पर इस क़दर मुसल्लत हो चुकी है कि जिन उलूम से हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ा नसीब होती है, दुनिया और आख़िरत की सआदतें नसीब होती हैं उन उलूम को हिक़ारत की नज़र से देखते हैं और जिन उलूम से सिर्फ़ दो वक़्त की रोटी मिलेगी उन उलूम को हम बड़ी इज़्ज़त और इकराम की नज़र से देखते हैं और अपनी पूरी ज़िंदगी उनके हासिल करने में गुज़ार देते हैं। कालिजों के कितने बच्चे मास्टर की डिग्री हासिल कर लेते हैं। आप उनसे नमाज़ के मस्अले मालूम कर लीजिए वे आपको दीन से बिल्कुल कोरे और अनजान नज़र आएंगे। यह दुनिया से मुहब्बत का नतीजा है।

पी०एच०डी० डाक्टर की ख़स्ताहाली

एक पी०एच०डी० डाक्टर साहब के वालिद का इंतिक़ाल हुआ तो उन्होंने एक आलिमे दीन से कहा कि आपने जनाज़ा पढ़ाना है। जनाज़े के बाद उस एक पी०एच०डी० डाक्टर ने ज़ारो व क़तार रोना शुरू कर दिया। लोगों ने उसे तसल्ली दी कि इस तरह का सदमा हर आदमी को पेश आता है इसलिए आपको भी सब्र करना चाहिए मगर वह लगातार रोता रहा। आख़िर आलिमे दीन ने आगे बढ़कर उससे पूछा आख़िर क्या वजह है कि आप इतना रो रहे हैं? उसने कहा कि मैं इस बात पर नहीं रो रहा हूँ कि वालिद फ़ौत हो गए। हर एक को दुनिया से जाना है। मैं तो इस

बात पर रो रहा हूँ कि मेरे इस वालिद ने मुझे इतनी दुनियावी तालीम दिलवाई कि मैं एक पी०एच०डी० डाक्टर बन गया मगर मुझे दीन से इतना बेगाना रखा कि मेरे वालिद की मैंय्यत मेरे सामने पड़ी थी और मुझ नमाज़े जनाज़ा भी नहीं आती थी।

दुनियावी सोच के तास्सुरात

दीन से इस क़दर दूरी की बुनियादी वजह क्या है? दीनी और साइंसी उलूम हासिल करने वालों के बीच यह खाई क्यों पैदा हो रही है। इसकी वजह यह है कि कालेजों और युनिर्वसटियों के तलबा में एक आम तास्सुर यह बनता जा रहा है कि मदरसे वाले कुछ नहीं करते, दक़ियानूस होते हैं, पुराने दिमाग़ के लोग होते हैं, पुरानी-पुरानी किताबें पढ़ते हैं।

और दूसरा तसव्वुर यह बनता चला जा रहा है कि उलमा को साइंसी उलूम पढ़ने चाहिएं हालाँकि यह बात तो अहले इल्म हज़रात के कहने की है कि आज दुनियावी उलूम पढ़ने वालों को दीन पढ़ने की ज़रूरत है क्योंकि उलमा की तादाद को देखें तो आपको पूरी आबादी में 5% भी नज़र नहीं आएंगे। जबकि दुनियावी उलूम हासिल करने 95% वाले होंगे। जो 95% हैं वह तो पहले ही सौ फ़ीसद ज़िंदगी इन उलूम पर वक़्फ़ कर चुके हैं। हम यह सोचते हैं अगर बाक़ी 5% लोग भी साइंसी उलूम हासिल कर लेते तो हमारी क़ौम फ़लाह पा लेती और हम तरक़्क़ी वाले बन जाते। हमारी यह सोचा 100% ग़लत है। दिल व नज़र जब ग़लत हो जाते हैं तो फिर इंसान इस क़िस्म की सोचता है।

सही नज़रिया

हमें इस बात को दिल में बिठाने की ज़रूरत है कि जो 5% तलबा क़ुरआन व हदीस का इल्म हासिल करने के लिए अपने आपको वक़्फ़ कर चुके हैं वे इस उम्मत के मोहसिन हैं जो उनकी इल्मी प्यास बुझाते हैं। जब लोगों को मसाइल का जवाब पूछने की ज़रूरत होती है तो उस वक़्त यही 5% ही तो होते हैं जो उनका इल्मी बोझ अपने सर पर लेते हैं। उनको क़दम-क़दम पर बताते हैं कि तुम्हें अल्लाह की रज़ा मिलेगी। हक़ीक़त में हमें बात इस तरह करना चाहिए कि आज इन स्कूलों और कालिजों में तालीम पाने वाले जितने तलबा हैं वे जहाँ ये साइंसी के मज़मून पढ़ते हैं वहाँ क्या दीन का मज़मून नहीं पढ़ सकते। अगर ये शुरू से आख़िर तक दीन की तालीम साथ-साथ पाते रहें तो जहाँ अच्छे साइंसदान बनकर निकलेंगे वहाँ अच्छा मुसलमान भी बनकर निकल सकते हैं। हमारा यह ज़हन क़ौम का सरमाया है जिसको आज (Intelegentia of Nation) कहते हैं। आज सारे का सारा ज़ोर माद्दे की तहक़ीक़ पर लगा रहा है और रूहानियत पर उसका कोई काम नहीं हो रहा है, आख़िरत के लिए इस पर कोई मेहनत नहीं हो रही है।

आज का उनवान

आज की महफ़िल में हमारे सामने वे बच्चे बैठे हैं जिन्होंने हदीस व तफ़्सीर का अल्म हासिल किया या क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ किया। इसी निस्बत से उन बच्चों के ज़हनों में दीनी तालीम की

अहमियत उजागर करने की ज़रूरत है ताकि हक़ वाज़ेह हो, दूध का दूध और पानी का पानी हो। हमें पता चल जाए कि जो लोग दीन पढ़ रहे हैं, हक़ीक़त में वही इंसानियत के मोहसिन हैं। वह एक बुलंद व बाला मक़सद पूरा कर रहे हैं।

दुनिया के माल की नापाएदारी

मौजूदा इल्म हासिल करने वाले दुनिया कमाकर अपनी दुनियावी ज़रूरतें पूरी कर रहे हैं। आख़िरत की ज़रूरतें तो दुनिया के पैसे से पूरी नहीं हो सकतीं। अगर उन्होंने ने माल कमा भी लिया तो इस माल से वे ज़िंदगी की हर ज़रूरत पूरी नहीं कर सकते। माल से आप ऐनक तो ख़रीद सकते हैं बीनाई नहीं ख़रीद सकते। माल से आप किताबें तो ख़रीद सकते हैं इल्म तो नहीं ख़रीद सकते, माल से आप अपने लिए नरम बिस्तर तो ख़रीद सकते हैं मीठी नींद तो नहीं ख़रीद सकते, माल से आप अपने लिए दवाएं तो ख़रीद सकते मगर अच्छी सेहत नहीं ख़रीद सकते, माल से आप अच्छा लिबास तो ख़रीद सकते हैं मगर हुस्न व जमाल तो नहीं ख़रीद सकते। माल से आप किसी की ख़ुशामद तो ख़रीद सकते हैं मगर दिल की मुहब्बत तो नहीं ख़रीद सकते और माल से आप ख़िज़ाब तो ख़रीद सकते हैं मगर शबाब नहीं ख़रीद सकते। बस मालूम हुआ कि माल से हर काम नहीं हो सकता।

माल और इल्म का मुक़ाबला

भला माल और इल्म का क्या मुक़ाबला। माल की क़ीमत वक़्त के साथ-साथ घटती चली जाती है और इल्म की क़ीमत

वक़्त के साथ-साथ बढ़ती चली जाती है। माल की हिफ़ाज़त तुझे करना पड़ती है और इल्म तेरी हिफ़ाज़त किया करता है। माल फ़िरऔन और क़ारून की मीरास है और इल्म अंबियाए किराम की मीरास है। माल के बढ़ने से हसद करने वाले बढ़ते हैं और इल्म के बढ़ने से अक़ीदृत करने वाले बढ़ते हैं। माल से इल्म हासिल नहीं किया जा सकता है जबकि इल्म से माल हासिल किया जा सकता है। रोज़े महशर माल खाने का हिसाब होगा, इल्म हासिल करने का हिसाब न होगा। इल्म तो आसमान की तरह है दुनिया का माल ज़मीन की तरह है। कसरत माल की वजह से फ़िरऔन ने ﴿انا ربكم الاعلى﴾ कहा और कसरत इल्म की वजह से परवरदिगार आलम के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿ما عبدناك حق عبادتك وما عرفناك حق معرفتك.﴾ कहा।

मक़सदे ज़िंदगी

हमारे अंग्रेज़ी पढ़े लिखे नौजवानों को अपने ज़हनों में यह बात अच्छी तरह बिठा लेनी चाहिए कि दुनिया का इल्म हासिल करना हमारी ज़िंदगी की ज़रूरत है, ज़िंदगी का मक़सद नहीं है। ज़िंदगी का मक़सद तो अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करना है और उसके हुक्मों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना है। यह चीज़ दीनी उलूम के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती। आप दुनिया में पी०एच०डी० कर लें, नोबल पराईज़ जीत लें मगर अल्लाह की रज़ा वाले आमाल करने के लिए भी इन्हीं उलमा की झोपड़ियों में आना पड़ेगा। उन्हीं की चटाईयों पर आपको दो ज़ानो होकर बैठना पड़ेगा। तब आपको उलूम हासिल होंगे और अगर आप यह समझें कि इन

उलूम के बग़ैर भी हम अच्छी ज़िंदगी गुज़ार लेंगे क्योंकि हमें अच्छा खाना मिलता है या कार, कोठी भी मौजूद है तो फिर हम यही कहेंगे ﴿ذلك مبلغهم من العلم﴾ मियाँ तुम्हारे इल्म की हद यहीं तक थी कि तुमने अपने आपको दुनिया के लिए वक़्फ़ कर लिया ﴿خسر الدنيا والاخرة ذلك هو الخسران المبين.﴾ इसी को बड़ा ख़सारा कहते हैं। अक़्लमंद इंसान की पहचान यही है कि वह ज़रूरत को ज़रूरत के क़ाबिल पूरा किया करता है मगर मक़सद को हाथ से नहीं जाने देता। अगर हम यह कहें कि समाज के 95% लोग जो सिर्फ़ अंग्रेज़ी स्कूलों में तालीम हासिल कर रहे हैं वह बहुत अच्छा कर रहे हैं और 5% लोग जो सुबह व शाम दीन का इल्म हासिल कर रहे हैं उनको भी साइंस पढ़ने की ज़रूरत है तो यह अक़्लमंदी की बात नहीं होगी क्योंकि अगर तलबा की सारी ज़िंदगी स्कूलों और कालेजों में गुज़र गई तो वह इल्म व अदब कैसे हासिल करेंगे। वह उन आमाल से बिल्कुल महरूम रहेंगे जिसे अल्लह तआला की रज़ा मिलती है। इसी को अकबर ने कहा–

उन्होंने दीं कहाँ सीखा भला जा जा के मक्तब में
पले कालेज के चक्कर में मरे साहब के दफ़्तर में

कितनी ज़िंदगियाँ हैं जो स्कूलों और कालिजों के तवाफ़ करते हुए गुज़र जाती है। और जब फ़ारिग़ होते हैं तो साहब (अफ़सर) के दफ़्तर में ज़िंदगी निभ जाती है।

क़ौम के मोहसिन

मेरे दोस्तो! ज़रा दूसरे अंदाज़ से भी देख लीजिए कि अल्लाह

के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो इल्म लेकर आए क्या उसकी इतनी भी क़ीमत नहीं है कि आप उसको अहम समझें? हमें चाहिए कि हम आज से यह कहना शुरू कर दें कि वह 5% जिन्होंने अपनी सौ फ़ीसद ज़िंदगी इल्म हसिल करने के लिए वक़्फ़ कर दी है वही क़ौम के मोहसिन हैं। क़ौम के सिरों पर यह इल्मी साया हैं। क़ौम जब ठोकरें खाएगी तो मंज़िल की निशानी यही बताएंगे, जब क़ौम रास्ता भूलेगी तो उंगली पकड़कर मंज़िल पर यही पहुँचाएंगे, जब क़ौम ना उम्मीद होने लग जाएगी तो उनको रब की रहमत की उम्मीद भी यही लोग लाएंगे।

उलमाए किराम की ज़िम्मेदारी

इस महफ़िल में जिन उलमाए किराम ने आपके सामने अपने सिरा पर दस्तारे फ़ज़ीलत बंधवाई और अपने हाथों में ईनाम के तौर पर क़ुरआन के नुस्ख़े और हदीस की किताबें वसूल कीं। आइए ज़रा जाएज़ा लें कि इन उलमा की ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं?

इन चटाईयों पर बैठने वाले, मामूली कपड़े पहनने वाले, मामूली खानों पर बस करने वाले, थोड़ी दुनिया पर बस करने वाले, रहबर व रहनुमा हस्तियों की मुहब्बत की दास्तान बयान करते क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿والربانيون والاحبار.﴾ रब वाले और अहबार। अहबार जमा हब्र की और हब्र कहते हैं बड़े आलिम को। उलमा और नेक लोगों का अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ुरआन पाक में ज़िक्र फ़रमाते हैं और उनकी ज़िम्मेदारियाँ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ﴿بما استحفظوا من كتاب الله.﴾ वह अल्लाह तआला की किताब की हिफ़ाज़त करते हैं। गोया उनका मक़सद और मंसब

दुनिया के अंदर क़ुरआन की एक-एक आयत के ऊपर डेरे डालना है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक-एक हदीस के ऊपर झुग्गियाँ डाल देना और उनकी हिफ़ाज़त करना है ताकि उनमें कोई तब्दीली न आ सके और आने वाली नस्ल तक दीन उसी तरह पहुँचे जिस तरह उन्होंने ऊपर से पाया। इसीलिए तो उनको नबियों का वारिस कहा गया है।

अल्लाह तआला की फ़ौज

आप सोचते होंगे कि क़ुरआन की हिफ़ाज़त तो अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ली है। फिर उलमा पर उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी क्यों लगाई? जी हाँ, क़ुरआन पाक की हिफ़ाज़त तो परवरदिगार आलम ने अपने ज़िम्मे ली है लेकिन उसने अपनी फ़ौज तैयार की हुई है। जैसे कोई बादशाह कहे कि मैं इस मुल्क की सरहदों की हिफ़ाज़त करूंगा तो इसका मतलब यह नहीं होता कि वह सरहद पर जाकर रातों को खुद पहरा देगा। इस मक़सद के लिए वह एक फ़ौज बनाता है और उस फ़ौज का हर आदमी उसकी निगाह में बड़ा इज़्ज़त वाला होता है, उनकी तन्ख़्वाहें अच्छी, उनका लिबास अच्छा, उनकी सेहतें अच्छी, उनका वक़ार आला, उनको बादशाह अज़ीज़ रखता है क्योंकि वह बड़े मक़सद को पूरा कर रहे होते हैं। बिल्कुल इसी तरह जब परवरदिगार ने इस क़ुरआन की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा खुद लिया तो उस के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भी अपने बंदों की फ़ौज तैयार की, उनको उलमा कहते हैं, उनको हाफ़िज़ कहते हैं। उलमा ने इल्मे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा खुद लिया है

और हाफ़िज़ों ने क़ुरआन पाक की हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। लिहाज़ा दीन पूरी तरह आज हमारे पास मौजूद है। इसको महफ़ूज़ इल्म कहा जा सकता है। क़ुरआन पाक ने अल्लाह तआला की फ़ौज को हिज़्बुल्लाह कहा है। इन उलमा और नेक लोगों को अल्लाह तआला ने ख़ुशख़बरियाँ दीं ﴿الا ان حزب الله هم المفلحون.﴾ जान लो कि अल्लाह की जमात और अल्लाह की फ़ौज हमेशा फ़लाह पाती है।

सहाबा किराम की जमात नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म व अमल की मुहाफ़िज़

सहाबा किराम की जमात नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इल्म व अमल की वारिस थी। उनकी ज़िंदगियों को अगर देखें तो मालूम होता है कि वह एक-एक सुन्नत के आशिक़ थे। इस इश्क़ के रंग में उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अदाओं की हिफ़ाज़त की। उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अदाओं की इत्तिबा की। यह इत्तिबा इतनी कामिल थी कि अक़्ल दंग रह जाती है। इसका अंदाज़ा आपको कुछ वाक़िआत से हो जाएगा।

मिसाल न० 1.

हदीस पाक में आया है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक महफ़िल में तशरीफ़ फ़रमा थे। सहाबा किराम का मजमा था। बाहर से एक आदमी आया। उसने देखा कि इस सारी महफ़िल के सब लोग एक जैसे नज़र आते हैं। लिबास एक जैसे,

तौर-तरीक़े एक जैसे, उनके चेहरों पर असरात इतने अजीब और एक जैसे थे कि वह पहचान न सका। आख़िर उसे पूछना पड़ा कि तुम में से अल्लाह के नबी कौन हैं।

सोचने की बात यह है कि नक़ल असल कितना क़रीब होगी। जिन्होंने इत्तिबा की वे ताबे अपने मतबू (जिसकी इत्त्बिा की जाए) के कितना क़रीब हो चुके होंगे कि बाहर से आने वालों को आक़ा और ग़ुलाम के फ़र्क़ का पता न चला। ताबे और मतबू के फ़र्क़ का अंदाज़ा न हुआ। हक़ीक़त में ग़ुलाम ऐसे थे जो अपनी बातचीत में, चलने में, किरदार में यहाँ तक कि एक-एक अमल में आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्शे क़दम पर चलने वाले थे।

मिसाल न० 2.

सहाबा किराम ने सुन्नत नबवी की इस क़दर इत्तिबा की कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज के सफ़र पर जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक जगह अपनी सवारी को रोक लिया, नीचे उतरे और एक जगह पर जाकर थोड़ी देर बैठ गए। फिर वापस आए और अपनी सवारी को लेकर चल पड़े। रफ़ीक़ सफ़र ने पूछा, जनाब यह सवारी के ठहराने और वहाँ जाकर बैठने का मक़सद क्या था? कहने लगे एक दफ़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र कर रहा था। मेरे आक़ा यहाँ क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हुए और आगे चल पड़े थे। अब जब मैं इस जगह से गुज़र रहा था तो इस जगह मेरे क़दम आगे न बढ़ सके। मेरे दिल ने चाहा कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहाँ एक अमल किया था अगरचे

इस वक़्त मुझे इस अमल की हाजत नहीं मगर अपने आक़ा के अमल की इस वक़्त जितनी इत्तिबा कर सकूं उतनी तो करके दिखाऊँ। मैं वहाँ इसी तरह जाकर बैठा जिस तरह मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठ थे। मैं थोड़ी देर तो रुका मगर मुझे अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक सुन्नत पर अमल की तौफ़ीक़ तो नसीब हो गई।

मिसाल न० 3.

एक सहाबी हब्शा के रहने वाले थे। रंग के काले और शक्ल के अनोखे थे। उनके सर के बाल छोटे भी थे और घुंघरियाले भी। उन बालों में मांग नहीं निकल सकती थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सर के बीच में मांग निकाली होती थी। यह आपका सर मुबारक देखते तो सोचते कि वह सर ही किस काम का जो अपने आक़ा के मुबारक सर से मेल न पा सके। हर वक़्त यही तमन्ना रहती और इसके लिए दुआएं भी मांगते रहते थे कि एक अल्लाह! कभी ऐसा भी होगा कि मैं कंघी करूं तो मेरे सर के बीच मांग निकल आए और मेरे सर को मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक सर के साथ मुशाबिहत नसीब हो जाए। इसी ग़म में तड़पते रहते थे।

आख़िर आक़ा की ऐसी मुहब्बत ग़ालिब आई कि एक दिन ग़ुस्ल करके निकले और आइने में चेहरा देखा मगर सर के ऊपर सीधी मांग न निकल सकी। दिल में ख़्याल आया कि सर भला किस काम का। लिहाज़ा लोहे की एक सलाख़ पड़ी थी उसे उठा लिया। घर में आग जल रही थी। उस आग में इसको गर्म किया।

उसके बाद उसको अपने सर के बालों के बिल्कुल बीच में फेर दिया। जिससे खाल भी जली, बाल भी जले और जलने की वजह से एक लकीर बन गई। लोगों ने कहा कि आपको इतनी तकलीफ़ उठाने की क्या ज़रूरत थी। फ़रमाया कि तकलीफ़ तो मुझे भूल जाएगी मगर मेरा सर तो आइंदा मेरे महबूब के सर मुबारक के मुशाबेह हो जाएगा।

मिसाल न० 4

मशहूर रिवायत है कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ारस तश्रीफ ले गए। दावत खाने के लिए बैठे। उनसे एक लुक़्मा नीचे गिर गया। उन्होंने उस लुक़्मे को उठाया और साफ़ करके खा लिया। कुछ लोगों ने कहा कि यहाँ की अमीर इस आदत को पसंद नहीं करते हैं। आप यह लुक़्मा उठाकर न खाते। फ़रमाने लगे ﴿اترك سنة حبيبى لهؤلاء الحمقاء.﴾ क्या मैं इन बेवक़ूफ़ों की ख़ातिर अपने आक़ा और महबूब की सुन्नत को छोड़ दूँ। सोचिए तो सही कि सहाबा किराम ने एक-एक सुन्नत पर कितनी मुहब्बत से अमल किया। वे इल्म के भी वारिस बने, अमल के वारिस बने, अहवाल के भी वारिस बने, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाहिरी अदाओं के भी वारिस बने। इस तरह यह इल्म सहाबा किराम से उम्मत तक आगे पहुँचा जिस तरह मेरे आक़ा दुनिया में इसको दे गए थे।

ताबईन और दीन की हिफ़ाज़त

उनके बाद ताबईन और तबे ताबईन ने भी इस इल्म व अमल को इसी तरह आगे पहुँचाया जिस तरह उन्होंने ऊपर से पाया था।

यहाँ तक कि अगर हाकिमों ने अपनी मर्ज़ी के फ़तवे मांगने चाहे तो उन उलमा ने जानें तो दे दीं मगर दीन के अंदर किसी ग़ैर-इस्लामी चीज़ को शामिल न होने दिया। यही वजह तो है कि इमामे आज़म रह० जो दुनिया के इमाम कहलाते हैं उनका जनाज़ा भी जेल से निकला। इमाम अहमद बिन हंबल रह० को सौ कोड़े मारे गए। इब्ने तैमिया रह० को जेल की मुसीबतें सहनी पड़ीं। इमाम सरख़सी रह० को कुँए में क़ैद होना पड़ा। इमाम बुख़ारी रह० को शहर से निकलना पड़ा। यह इश्क़ व वफ़ा की दास्तानें थोड़े से वक़्त में कैसे बयान करें। आइए हम अपने क़रीब के दौर की बात करते हैं।

उलमाए हिंद का शानदार गुज़रा ज़माना

उलमाए हिंद का दौर उम्मते मुस्लिमा का शानदार गुज़रा ज़माना है।

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० की जहांगीर से टक्कर

यह दौर इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० से शुरू होता है। वह हिंदुस्ताम के शहर सरहिंद में पैदा हुए। उनके दौर मे अकबर ने दीन की शक्ल को ख़राब कर दिया था। दीने इलाही के नाम से एक नया दीन दुनिया के सामने पेश कर दिया था जो रस्मों और बिदअतों का पिटारा था। यह वह वक़्त था कि

जब अकबर के बेटे ने अपनी ताक़त के नशे में आकर उलमा को को लिखा कि मुझे फ़तवा दो कि बादशाह को सज्दाए ताज़ीमी करना जाएज़ है। जब लोगों के समाने जेलों के दरवाज़े खुल चुके थे, जब उनको दुर्रे नज़र आ रहे थे, खालें पीठ से उतरती नज़र आ रही थीं। उस वक़्त कुछ अल्लाह वाले ऐसे थे, कुछ अहबार ऐसे थे जिन्होंने जान की परवाह तक न की। इसलिए कि उनका फ़र्ज़े मंसबी दीन की हिफ़ाज़त था। उन्होंने कहा—

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

लिहाज़ा इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० ने फ़रमाया कि ताज़ीमी सज्दा हराम है, बिल्कुल जाएज़ नहीं। इस कलिमाए हक़ की वजह से उनको ग्वालियर के क़िले में बंद कर दिया गया। आपके पाँव में ज़ंजीरें डाल दी गयीं। आपने ज़ंजीरों में क़ैद होना तो क़ुबूल कर लिया मगर उसकी ग़लत बात के आगे झुके नहीं क्योंकि उनको रब के सिवा किसी के आगे झुकना नहीं आता था। वह सारी ज़िंदगी रब के सामने माथा झुका देने वाले भला मख़्लूक़ के सामने कैसे झुक सकते थे। आख़िर उनके जमाव की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने एक वक़्त वह दिखलाया कि जब जहांगीर बादशाह को झुकना पड़ा। सब अमीर उस फ़क़ीर के सामने अदब के साथ खड़े हुए और कहने लगे जो आप कहेंगे आज हम वहीं करेंगे। लिहाज़ा बिदअतों को ख़त्म कर दिया गया, रस्मों को छोड़ दिया गया और उसकी जगह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को रिवाज दिया गया। इसी वजह से उनको इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० कहते हैं।

ख़ानदान शाह अब्दुर्रहीम रह० और दीन की हिफ़ाज़त

फिर उनके बाद एक और फ़र्दे फ़रीद शाह अब्दुर्रहीम रह० अरब से आकर हिंदुस्तान मे आबाद हुए। आप अपने बुज़ुर्गों की यह मीरास और नेमत भी साथ लेकर आए। फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको एक बेटा दिया जो वलीउल्लाह के नाम से मशहूर हुआ। यह ख़ानदाने वलीउल्लाह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का चुना हुआ ख़ानदान साबित हुआ। शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० के बेटे शाह अब्दुल अज़ीज़, शाह अब्दुल क़ादिर और शाह रफ़िउद्दीन ने देहली में बैठकर क़ुरआन व हदीस की ख़िदमत की, दीनी उलूम को आम किया।

एक वक़्त वह भी आया जब हाकिमे वक़्त ने उनके साथ भी टक्कर ली। इन हज़रात ने मुसीबतें और तकलीफ़ें बर्दाश्त कर लीं मगर दीन के अंदर कोई चीज़ शामिल न होने दी। आख़िर शाह वलिउल्लाह रह० के आख़िरी उम्र में हाथों के पहुँचे उतरवा दिए गए, उंगलियों को तोड़ दिया गया और दोनों हाथों से माज़ूर कर दिया गया। जिस आदमी के ज़रिए क़ुरआन व हदीस की इतनी ख़िमदत हुई थी, ताक़त के नशे में आकर दुनिया के हुक्मुरानों ने ज़ुल्म के पहाड़ तोड़ दिए। इन उलमाए हक़ ने क़ुर्बानियाँ पेश कर दीं मगर दीन के अंदर किसी चीज़ की मिलावट न होने दी अगर उस वक़्त हुक्मुरानों का बस चल जाता तो मालूम नहीं कि आज दीन हमें किस हाल में मिलता। अगर हुक्मुरानों के अपने क़लम

की बात होती तो मालूम नहीं कि उनका क़लम क़ुरआन व हदीस के हर्फ़ को किस तरह बदल चुका होता। यह रब्बे करीम की रहमत है कि उसने दीन की हिफ़ाज़त वक़्त के हुक्मुरानों के ज़िम्मे नहीं डाली वरना यह तो पीतल को सोना बनाकर दिखाते हैं। तारीख़ को देखो कुर्ता और पगड़ी (वालों) ने जिन इलाक़ों को फ़तेह किया था कोट पतलून (वालों) ने उन्हीं इलाक़ों को वापस दे दिया।

इंडिया में अंग्रेज़ का क़ब्ज़ा

एक वक़्त वह भी आया जब पाक व हिंद में अंग्रेज़ ने अपना क़ब्ज़ा जमाया। फिर जब अंग्रेज़ ने देखा कि मैंने दुनिया का माल व दौलत तो समेट लिया। अब इनको इल्मी विरासत से भी महरूम करने की ज़रूरत है। लिहाज़ा उसने वक़्फ़ की तमाम इमारतों को अपने क़ब्ज़े में ले लिया। सिर्फ़ देहली के अंदर छः सौ मदरसे बंद हुए। उसने कहा मैं इनकी गर्दन दबा दूंगा। उसने कोई बड़ा मदरसा चलने न दिया।

दारुल उलूम देवबंद की बुनियाद

इन बुरे हालात में हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० ने वक़्त की नज़ाकत को समझते हुए देवबंद के एक ग़ैर-मशहूर मक़ाम पर एक मदरसा की बुनियाद रखी। इस दारुल उलूम ने दिन दोगनी रात चौगनी तरक़्क़ी की और थोड़े ही अरसे में इल्म व फ़नों का मर्कज़ बन गया। वह दारुल उलूम अब दुनिया की एक अज़ीम युनिवर्सिटी बन चुका है।

दारुल उलूम देवबंद के सपूत

इस युनिर्विसिटी से ऐसे बड़े-बड़े उलमा और मुजाहिदीन निकले जिन्होंने कहा कि आज़ादी हमारा हक़ है। लिहाज़ा हमारा हक़ हमें वापस मिलना चाहिए। यही दारुल उलूम ही तो था जिसने उम्मत को अंग्रेज़ों की ग़ुलामी से बचाया। अगर यह उलमा सीना तान कर मुक़ाबला न करते तो अंग्रेज़ी तहज़ीब में इस क़दर चमक और कशिश थी कि हमारे सारे नौजवान इस बहाव में बहकर अंग्रेज़ी रहन-सहन के दिलदादा बन जाते। उनका बैठना-उठना कुछ और होता, उनके सुबह व शाम के लम्हात किसी और अंदाज़ से बसर होते मगर क़ुर्बान जाएं उलमाए देवबंद के सपूतों ने उन हालात में भी दीन को सीने से लगाए रखा और दुनिया को बता दिया कि हम ने दीन के लिए ज़िंदगियाँ क़ुर्बान कर देनी हैं। लिहाज़ा एक ऐसा वक़्त भी आया जब उन्होंने अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद किया। कहीं शामली के मैदान में हाफिज़ ज़ामिन शहीद रह० अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द करते हैं, कहीं महमूद हसन रह० माल्टा के अंदर जेलों में तकलीफ़ उठाते हैं। इन हज़रात के पाँव में ज़ंजीर होती थी मगर उनकी ज़बान पर अल्लाह का क़ुरआन होता था। ये जेलों से निकलते थे कोई तफ़्सीर लिखकर निकलता था और कोई क़ुरआन का हाफ़िज़ बनकर निकलता था। उलमाए हिंद का यह शानदार गुज़रा ज़माना इतनी वुसअतें समेटे हुए है कि एक महफ़िल में इसकी तफ़्सील नहीं बताई जा सकती।

तराना दारुल उलूम देवबंद

यही तो एक अज़ीज़ तालिब इल्म पढ़ रहे थे—

यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शहपारा है
हर फूल यहाँ इक शोला है हर सरो यहाँ मिनारा है
कहसार यहाँ दब जाते हैं तूफ़ान यहाँ रुक जाते हैं
इस काख़ फ़क़ीरी के आगे शाहों के महल झुक जाते हैं
आबिद के अमल से रोशन है सादात का सच्चा साफ़ अमल
आँखों ने कहाँ देखा हेगा इख़्लास का ऐसा अमल
यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह फ़न पारा है
हर फूल यहाँ इक शोला है हर सरो यहाँ मीनारा है

मस्जिदें फ़रियाद कर रही हैं

आज उंदलुस की दास्तानें आपके सामने हैं। आज ज़रा क़ुरतबा की जामा मस्जिद में जाकर देख लीजिए। इन उलमा की क़दर तब आपको आएगी जब बाहर मुल्क के उलमा की बुरी हालत आप जाकर देखेंगे। उनके ज़ाहिर को देखें तो आपको उनके चहरे पर सुन्नत नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नज़र नहीं आएगी। मालूम हुआ कि वहाँ के उलमा भी वहीं के माहौल में ढल गए हैं। लिहाज़ा अल्लाह तआला जज़ाए ख़ैर दे हमारे बुज़ुर्गों जिन्होंने हर दौर के अंदर हर फ़ित्ने के सामने बंद बांधा और सीना सपर होकर मुक़ाबला किया। मिस्र और तुर्की जो आज बड़े-बड़े इस्लामी मुल्क समझे जाते हैं। ज़रा उनकी मस्जिदों का हाल देखिए जिस मस्जिद में एक हज़ार आदमी नमाज़ पढ़ सकते हैं वहाँ ज़ोहर

असर की नमाज़ों में मुश्किल से तीन आदमी भी पूरे नहीं होते। वह मस्जिदें आज रो रही हैं।

अंग्रेज़ी चाहने वाले तब्क़े की बदहाली

आप देखिए तो सही कि हमार अंग्रेज़ी चाहने वाला तब्क़ा दीन से कितना नावाक़िफ़ है। जो लोग सुबह शाम अंग्रेज़ी पढ़ने में मस्त हैं उनको अरबी के दो बोल पढ़ने नहीं आते। कोई पी०एच०डी० डाक्टर कभी आपके सामने अज़ान दे तो ज़रा सुना कीजिए कि उसकी अज़ान कितनी अजीब होती है। कभी आप उसे कह दें कि आप तो पी०एच०डी० हैं ज़रा इक़ामत तो कहिए। कहेंगे कि जी हमें इक़ामत नहीं आती। उन्हें नमाज़ पढ़ानी नहीं आती, पढ़नी नहीं आती, नमाज़ जनाज़ा का पता नहीं होता कि क्या है, मसाइल का पता नहीं होता। मालूम हुआ कि दीन से बिल्कुल बेगाना होकर उनकी ज़िंदगी गुज़र रही होती है। अगर उन जैसे लोगों के ज़िम्मे होता कि तुम कम्युनिज़्म और सोशलिज़्म के सैलाब का मुक़ाबला करना है तो ये किश्ती ही डुबो देते क्योंकि ये तो अपने पाँव पर भी खड़े होने के क़ाबिल न थे।

अल्लाह वाले उलमा का दीन पर जमाव

ये अल्लाह वाले उलमा ही थे जिन्होंने सारे हालात का मर्दों की तरह मुक़ाबला किया। मैं सलाम पेश करता हूँ वस्त (मध्य) एशिया के उलमा को जिन्होंने सत्तर साल ज़ुल्म की चक्की में पिसना तो सहन किया मगर दीन को अपने सीनों से जुदा न होने दिया। यहाँ तक कि जब ज़ुल्म की आंधी छटी, ज़ुल्म क साए घट

गए तो उस वक़्त ये उलमाए दीन उसी दीन को सीने से लगाकर फिर खड़े हो गए। आज वहाँ के आम लोग फिर दीन को अपनी ज़िन्दगियों में लागू कर रहे हैं।

वस्त एशिया का इल्मी क़र्ज़

यही तलबा है। जिनके बड़ों ने हम तक दीन पहुँचाया और आज उन्हीं की ये औलादें इन मुल्कों में इल्मे दीन हासिल करने आ रही हैं। कोई सऊदी अरब पहुँच रहा है, कोई पाकिस्तान पहुँच रहा है, कोई इंडिया में दारुल उलूम जा रहा है। यह बुख़ारी रह० मुस्लिम रह० के रुहानी बेटे हमारे इलाक़ों में क़ुरआन व हदीस का इल्म पाने के लिए आ रहे हैं। ये हमारे लिए और उन लोगों के लिए जो इन मदरसों की मदद करते हैं कितनी सआदत की बात है कि हमारे उलमा की वजह से वहाँ के रुहानी बेटे यहाँ क़ुरआन व हदीस का इल्म हासिल करके वापस जा रहे हैं। अरे आपने कम्युनिज़्म और सोशलिज़्म के सामने कुछ न किया, यही उलमा हैं जो उनका क़र्ज़ लौटा रहे हैं। क़र्ज़ उनके बड़ों का था जिनकी हदीस और तफ़्सीर की किताबें पढ़कर हम आलिम बने। आज हम उनकी औलादों को यह क़र्ज़ लौटा रहे हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़ैसलाबाद के उलमा को सआदत बख़्शी है कि उनकी ख़िदमत में बैठकर वस्त एशिया के तलबा ने क़ुरआन व हदीस की तालीम पूरी की।

बच्चों की तर्बियत का अंग्रेज़ी तरीक़ा

इसके ख़िलाफ़ अगर अंग्रेज़ी चाहने वाले तब्क़े की बात होती तो ये बेचारे तो ख़ुद सर से लेकर पाँव तक अंग्रेज़ बने हुए होते

हैं। इतना तो 'गोरे अंग्रेज़' भी अंग्रेज़ी को पसंद नहीं करते जितना 'काले अंग्रेज़' अंग्रेज़ी को पसंद करते हैं। लिहाज़ा उनके घर बच्चा पैदा होता है तो उसको अरबी याद नहीं कराएंगे बल्कि वे उन्हें :

Twinkle, Twinkle little Star

How I wonder what you are

याद कराएंगे। एक साहब अंग्रेज़ी के बारे में बड़ा अजीब शे'र पढ़ा करते हैं। वह फ़रमाते हैं–

सुना वहाँ होगी बोली अरब की
मगर हम ने सीखी इंगलिश ग़ज़ब की

आख़िरत में तो अरबी बोली जाएगी और अरबी ही काम आएगी मगर यहाँ हमारे बच्चे ग़ज़ब की इंगिलश सीख रहे हैं। मज़े की बात तो यह है कि उर्दू में भी बात कर सकते हैं मगर फिर भी इंगलिश में बात करना और इंगलिश के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करना बड़ी इज़्ज़त की बात समझते हैं। चुनाँचे अम्मी के लिए 'मम्मा' बाप के लिए 'डैडी' और बेटी के लिए 'टैडी' यानी हर वक़्त 'रेडी'। इस तरह के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करना उनको अच्छा लगता है। आम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उनकी बोलचाल को देख लीजिए। अगर उनसे कहा जाए कि अरबी पढ़कर ज़रा सुना दीजिए तो वह क़ुरआन पाक की आयत ठीक से नहीं पढ़ सकेंगे जब कि अंग्रेज़ी फ़र-फ़र बोलेंगे।

फ़िक्र की घड़ी

हर माँ-वाप चाहेगा कि बच्चों को अंग्रेज़ी स्कूल में दाख़िल

करवा दिया जाए। ठीक है ज़रूर दाख़िल करवाएं मगर यह भी याद रखें कि यह ज़िंदगी का एक शोबा है जिससे हलाल रिज़्क़ कमाना है, यह ज़िंदगी का मक़सद नहीं है। आप बच्चों को जैसे अंग्रेज़ी सिखाते हैं वैसे ही अरबी क्यों नहीं सिखाते? आप के बच्चे क़ुरआन पाक का तर्जुमा क्यों नहीं पढ़ते? क्या यह इस क़ुरआन का हक़ नहीं है कि हमारे बच्चे उसे पढ़ते और समझते।

ऐ माँ! तू दीन व दुनिया बराबर के राग अलापती है, ऐ वालिद! तू दीन व दुनिया के बराबर-बराबर के फ़लसफ़े को पसंद करता है मगर तेरे पाँच बच्चे हैं और पाँचों के पाँचों कालेज जाते हैं। तेरा एक बच्चा भी ऐसा नहीं जो कभी हदीस पढ़ने के लिए मदरसे जाता, कभी तफ़्सीर पढ़ने के लिए मदरसे जाता। ऐ माँ! तेरे दिल में यह हसरत क्यों नहीं पैदा होती कि तेरा भी कोई ऐसा बच्चा होता जो दामन में क़ुरआन को लेकर बैठता और झोली फैलाकर महबूब के फ़रमानों को याद करता और दुआएं मांगता। तेरा कोई बच्चा तो तेरी सिफ़ारिश करने के क़ाबिल होता। हदीस मुबारका में हाफ़िज़ की सिफ़ारिश के बारे में बताया गया, आलिम की शफ़ाअत के बारे में बताया गया है। रोज़े मशहर यह डाक्टर, इंजीनियर तो सिफ़ारिश नहीं कर पाएंगे। काश! कि तेरा कोई ऐसा बच्चा होता जिसकी वजह से परवरदिगार आलम तेरे सर पर नूर का ताज बरोज़ मह्शर पहनाता। इसलिए तू भी किसी बच्चे को आलिम बना लेती मगर ऐसा नहीं होता। बस इतनी बात है कि बच्चे दुनियादारी में अच्छे दुनियादार बन जाते है। लिहाज़ा माँ-बाप कहते हैं कि जी हमारा बच्चा बड़ी अच्छी पोस्ट पर है। और बड़ी अच्छी सहूलतें हैं मगर के लिए थोड़ी सी दुआ कर दें,

बस ज़रा सा बेदीन बन गया है। ﴿وياسفي﴾ ऐसी बातें ज़बान पर क्यों आती हैं? इसलिए कि हमारी नज़र में दीन की क़ीमत इतनी गिर चुकी है कि हम एहसास नहीं करते कि इन बच्चों को दुनिया का इल्म तो पढ़ाएंगे मगर इसके साथ-साथ और क्या कुछ पाएंगे। इसलिए अकबर ने कहा था–

हम समझते थे लाएगी फ़रागत तालीम
क्या ख़बर थी कि चला आएगा इल्हाद भी साथ

अगर क़ुफ़्र भी साथ चुपके-चुपके ख़ुद ही आ गया तो क्या करोगे? लिहाज़ा हमें चाहिए कि अंग्रेज़ी पढ़े लिखे तलबा को हम इन मदरसों के अंदर थोड़े वक़्त के लिए भेजें। जो जितना इल्म हासिल कर सकता है करे। क़ुरआन की तालीम पा सकता है तो वह पाए ताकि यह अपने आपको तालीम के ज़ेवर से आरास्ता कर सकें। यह दीनी इदारों से पराएपन का नतीजा है कि अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोग जब बैठते हैं और उलमा का ज़िक्र आ जाता है तो वे कहते हैं कि इन उलमा ने अपनी आधी ज़िंदगी तबाह कर ली। ये कैसे कमाएंगे, इन्होंने तो अपनी आधी ज़िंदगी तबाह कर ली।

एक दिलचस्प कहानी

मुझे यहाँ एक कहानी याद आई जो हम इंगलिश की किताबों में पढ़ा करते थे। एक जगह बहुत से टापू थे। उनमें से एक टापू पर आबादी थी मगर दूसरे टापू में स्कूल बनाया गया था। लिहाज़ा बच्चे स्कूल जाने के लिए किसी मल्लाह के साथ उसकी किश्ती में बैठकर दूसरे टापू पर जाया करते थे।

एक दिन तलबा के दिल में शरारत पैदा हुई। उन्होंने ने कहा

कि हम इस मल्लाह को ज़रा छेड़ें तो सही। लिहाज़ा उनमें से एक आगे बढ़ा और मल्लाह से पूछा, क्या आपको रियाज़ी (गणित) आती है? उसने कहा मुझे तो नहीं आती? तो वह कहने लगा, तुमने तो अपनी आधी ज़िंदगी तबाह कर ली और आपस में हंसने लगे। फिर थोड़ी देर के बाद दूसरा आगे बढ़ा और कहने लगा, जनाब! आपको साइक्लोजी का पता है? उसने कहा, जी मुझे तो नहीं पता। वह फिर हंसने लग गए। कहने लगे, तुमने तो अपनी आधी ज़िंदगी बर्बाद कर दी। उसके बाद तीसरा आगे बढ़ा और कहने लगा, जनाब! आपको फिजिक्स और कैमिस्ट्री का पता है? उसने कहा मुझे तो बिल्कुल भी पता नहीं। वह कहने लगे, तूने तो अपनी है आधी ज़िंदगी तबाह कर ली। वह इसी तरह की बातों से उसका मज़ाक़ उड़ाते रहे। इस दौरान बारिश शुरू हो गई। समुंद्र के अंदर तूफ़ान पैदा हुआ। ज्वार-भाटे का वक़्त आ गया। किश्ती हिचकोले खाने लगी। अब मल्लाह की बारी थी इसलिए उसने कहा बच्चो! क्या तुम्हें तैरना आता है? कहने लगे, नहीं, हमें तो तैरना नहीं आता। वह कहने लगा, फिर तो तुमने अपनी पूरी ज़िंदगी तबाह कर ली यानी डूब जाओगे।

क़यामत के दिन बिल्कुल इसी तरह होगा। आज तो आप उलमा को कहते हैं कि तुमने अपनी आधी ज़िंदगी तबाह कर ली अगर रोज़े महशर जाकर पता चला कि हमने तो अपनी पूरी ज़िंदगी तबाह कर ली थी तो सोचिए तो सही वहाँ जाकर क्या बनेगा। लिहाज़ा बजाए इसके कि हम यह कहें कि वह पाँच फ़ीसद उलमा जो दीन की हिफ़ाज़त कर रहे हैं, जिन्होंने क़ुरआन व हदीस की एक-एक आयत पर डेरे डाले हुए हैं, जिन्होंने हर

तरह के फ़ितनों से, तूफ़ानों से, सैलाबों से दीन की हिफ़ाज़त करनी है हम उनको साइंस में घसीटने के बजाए इन पिच्चानवें फ़ीसद से कहें कि जनाब तुम इतना दुनियावी इल्म पढ़ चुके हो अब कोरे मत रहो दीन का कुछ इल्म तो तुम भी हासिल कर लो।

क़ौम का सरमाया

वह बच्चे जो अंग्रेज़ी स्कूलों में जाते हैं वे यक़ीनन क़ौम का सरमाया होते हैं, वह क़ौम की क्रीम होती है, वे टैलेंटेड बच्चे होते हैं, वे मुल्क के होशियार बच्चे हैं। उनको चाहिए कि वे भी इरादा कर लें कि जब वे दीन को पढ़ेंगे तो सही समझकर पढ़ेंगे और फिर दूसरों तक पहुँचाने का काम भी करेंगे। मदरसों और स्कूलों की कशमकश के बीच हक़ बात तो यही है कि हम अपने स्कूलों के बच्चों का इस तरफ़ ध्यान दिलाएं कि मदरसों में जाना भी तुम्हारी ज़रूरत है। जब तक तुम दीन नहीं सीखोगे तुम्हारा ईमान महफ़ूज़ नहीं होगा।

फ़ितनों का तोड़

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जज़ाए ख़ैर दे उन उलमा को कि उन्होंने दीन को थामे रखा। यह कोई मामूली बात नहीं है। इंसान अपने लिए तो ग़रीबी बर्दाश्त कर लेता है मगर अपनी औलाद के लिए ग़रीबी बर्दाश्त करना बड़ा मुश्किल होता है। आप सोचिए तो सही कि अंग्रेज़ के दौर में दीन किसने पढ़ा? उलमा ने पढ़ा। उन्होंने फिर अपनी औलादों को पढ़ाया। हम तो मिस्टर बने रहे, हम तो दफ़्तरों के चक्कर लगाते रहे, हम तो दुनिया की आला तालीम

वाले बने रहे मगर यह उलमा ही थे जिन्होंने ग़रीबी को सहन किया, थोड़ी दुनिया पर सब्र किया, चटाईयों पर बैठना पसंद किया, हुजरों में बंद रहना पसंद किया मगद दीन पर चोट न लगने दी। जब अंग्रेज़ ने दीन के अंदर फ़ितना शामिल करने की कोशिश की तो यह खड़े हो गए। लिहाज़ा हर फ़ितने के सामने सीसा पिलाई हुई दीवार बनकर सामने आए। वह यहूदियत का फ़ितना था या सैहूनियत का फ़ितना था या मिर्ज़ाइयत का फ़ितना था या किसी प्रवेज़ियत का। यही उलमा ही थे जो हर फ़ितने के सर पर ज़र्बे मुस्लिम लगाते रहे आख़िरकार फ़ितनों को अपनी मौत मर जाना पड़ा। इस तरह कुफ़्र को हर मौक़े पर ज़िल्लत उठानी पड़ी।

कुफ़्र नाचा जिनके आगे बारहा तिगनी का नाच
जिस तरह जलते तवे पर नाच करता है सपंद

इनमें क़ासिम हों कि अनवर शाह कि महमूदुल हसन
सबके दिल थे दर्दमंद और सबकी फ़ितरत अरजुमंद

ये दर्दमंद दिल रखने वाले, ये भली फ़ितरत रखने वाले उलमा ही थे जिन्होंने हर मैदान में कुफ़्र के दांत खट्टे किए और इस्लाम का बोल-बाला किया। इन्हीं के दम-क़दम से यह इल्म हम तक पहुँचा बल्कि क़यामत तक इन्हीं की उलमा के दम-क़दम से दीन पहुँगा।

यहाँ तक कि एक वक़्त आएगा जब दज्जाल लोगों को अपने फ़ितने से दीन इस्लाम से निकालकर कुफ़्र के अंदर दाख़िल करने वाला होगा। वहाँ कौन होगा? कोई अंग्रेज़ी वाला नहीं होगा जो इस दज्जाल के मुक़ाबले के लिए खड़ा होगा। अल्लाह के महबूब

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब वह दज्जाल मदीना तैय्यबा में जाने लगेगा, वहाँ पर फ़रिश्तों के पहरे की वजह से दाख़िल तो नहीं हो सकेगा मगर एक ज़लज़ला आएगा और कमज़ोर ईमान वालों में से हर एक आदमी बाहर निकलेगा और उसका लुक़्मा बन जाएगा। एक मोमिन भी होगा जो बाहर निकलेगा कि मैं दज्जाल को देखूं तो सही। दज्जाल उसे बुलाएगा और कहेगा तू मेरे ख़ुदा होने की तसदीक़ कर ले। वह कहेगा नहीं तू पक्का काफ़िर है। दज्जाल कहेगा कि अच्छा मैं तुम्हें मार सकता हूँ। वह कहेगा, मारकर दिखा। दज्जाल थोड़ी देर के लिए मारेगा, उसे मौत आ जाएगी और उसके बाद फिर उसे ज़िंदा करेगा। जब मारने के बाद ज़िंदा करेगा तो दज्जाल को दोबारा मारने पर क़ुदरत नहीं होगी। वह आलिम इसे जानते होंगे। बस कहेंगे अब मारकर दिखाओ? दज्जाल शर्मिन्दा और ज़लील होगा।

गुनाहों की आग

यह उलमा ही हैं जो आज गुनाहों की आग बुझाने के लिए पानी की बाल्टी डालते हैं, बूंद-बूंद पानी बरसा रहे हैं कि किसी तरह यह गुमराही की आग दूर हो जाए। पूरे तौर पर तो दूर नहीं होगी फिर भी हर आदमी अपना-अपना अज्र तो पालेगा।

चिड़िया की वफ़ादारी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब आग में डाला गया तो इतनी बड़ी आग थी कि वह आसमान से बातें करती थी। उस वक़्त एक चिड़िया अपनी चोंच में पानी लेकर आती और हज़रत

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग के ऊपर पानी की एक बूंद डालती थी। किसी दूसरे परिन्दे ने पूछा कि तेरे एक बूंद पानी डालने से आग बुझ जाएगी? वह कहने लगी यह तो मैं भी जानती हूँ कि आग तो नहीं बुझेगी मगर मैंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दोस्ती का हक़ तो निभाना है। ये छोटे-छोटे मदरसे उसी चिड़िया की तरह हैं जो अपनी चोंच में अमन व सकून और अल्लाह की रहमत का एक-एक क़तरा लेकर गुनाहों की आग पर डालने की कोशिश कर रहे हैं।

दुनिया में उलमा की ज़रूरत

इन मदरसों को मुहब्बत की नज़र से देखा करें। मदरसे वालों को मुहब्बत की नज़र से देखा करें। जो इन मदरसों की ख़िदमत कर रहे हैं उनसे मुहब्बत रखा करें। जब आप पैदा होते हैं तो यही हज़रात आपके कानों में अल्लाह का नाम पहुँचाते हैं। जब ज़िंदगी के लिए कोई साथी तलाश करते हैं तो यही ख़ुत्बा पढ़कर उसे आपके लिए हलाल बनाते हैं। जब दुनिया से जाना होता है तब भी यही उलमा आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाते हैं और फिर आपको दफ़न कर दिया जाता है।

जन्नत में उलमा की ज़रूरत

यह भी दिलचस्प हक़ीक़त है कि क़ौम उलमा की सिर्फ़ यहीं हाजतमंद नहीं होगी बल्कि उलमा की ज़रूरत तो जन्नत में भी पड़ेगी। आम आदमी सोचेगा कि जन्नत में उलमा की ज़रूरत कैसे पड़ सकती है। सुनिए हदीस पाक का मफ़हूम है कि अल्लाह

तआला जन्नितयों को जन्नत में हर नेमत अता फ़रमा देंगे यहाँ तक कि वे उन नेमतों से खुश होंगे। कई सालों का अरसा गुज़र जाएगा। आख़िर में एक वक़्त आएगा जब रब्बे करीम फ़रमाएंगे कि ऐ जन्नतियों! क्या तुम्हें किसी और चीज़ की ज़रूरत है? जन्नती कहेंगे कि कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिसकी हमें ज़रूरत महसूस होती हो। उनके ज़हन में कुछ नहीं आएगा। आख़िर रब्बे करीम फ़रमाएंगे कि अच्छा तुम अपने उलमा से जाकर पूछो कि कोई और भी ऐसी चीज़ है जिसकी तुम्हें ज़रूरत है? हदीस पाक में आता है कि जन्नती अपने उलमा से पूछेंगे कि क्या कोई और चीज़ भी है? उलमा कहेंगे, हाँ, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि जन्नत में जहाँ बाक़ी नेमतें मिलेंगी वहाँ हमें अपने परवरदिगार का दीदार भी नसीब होगा। अभी तक दीदार नहीं मिला। लिहाज़ा तुम परवरदिगार से दीदार मांगो। सब जन्नती दीदार मांगेगे। अल्लाह तआला जन्नतियों को अपना दीदार अता फ़रमाएंगे। सुब्हानअल्लाह! यह वह जमात है कि आप जिसका एहसान जन्नत में भी जाकर नहीं उतार पाएंगे।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इन अरबी पढ़ने वाले तलबा और उलमा के साथ दिली मुहब्बत अता फ़रमा दे। इसीलिए इर्शाद फ़रमाया गया ﴿يـاايها الذين امنوا.﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿ان تنصروا الله﴾ अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे ﴿ينصركم﴾ तो वह तुम्हारी मदद करेगा ﴿ويثبت اقدامكم﴾ और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा। अल्लाह तआला हमें तन-मन-धन हर तरह से इन लागों की ताइद करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हम इन हज़रात की ख़िदमत भी करें और एहसान भी उनका

जानें क्योंकि ये बुलंद व बाला काम कर रहे हैं और अगर किसी को अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे कि वह अपनी औलाद को इस दीन के हासिल करने के लिए वक़्फ़ करे तो यक़ीनन वे माँ-बाप मुबारकबाद के लायक़ होंगे। सुब्हानअल्लाह! आज जब छोटे-छोटे बच्चे हिफ़्ज़ करने वाले आ रहे थे और हम उनके सरों पर पगड़ियाँ बाँध रहे थे तो मेरे दिल में यह बात आ रही थी कि मेरे मौला! आज तो हम कपड़े का ताज पहना रहे हैं, कल ये तेरे पास आएंगे, आप तो उनको नूर का ताज पहनाएंगे। यह बच्चे कितने ख़ुशनसीब होंगे। हमें चाहिए कि अपनी औलादों को भी दीन हासिल करने के लिए तर्ग़ीब दें ताकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम अंग्रेज़ी पढ़ने लिखने वाले लोगों को भी दीन का इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

❋ ❋ ❋

सोहबते सुल्हा

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

يا ايها الذين آمنوا اتقوا الله و كونوا مع الصادقين ٥ سبحان ربك رب

العزه عما يصفون .وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

रिजालुल्लाह (अल्लाह वालों) की ज़रूरत

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाया करते थे कि "इंसान का दुनिया में आ जाना आसान है मगर सही माइनों में इंसान बन जाना मुश्किल काम है जो बनता है या बनाता है वह पता पाता है।" यह बात तो सौ फ़ीसद सही है कि आदमी अपने आपको बनाना चाहे तो वह नहीं बना सकता। तौरेत के बारे में क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया गया है, ﴿تفصيل كل شیء﴾ कि हर चीज़ की तफ़्सील मौजूद है मगर इसके बावजूद उन लोगों को हुक्म दिया गया कि तुम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैरवी करना। क़ुरआन मजीद के बारे में कहा गया, ﴿تبيانا لكل شیء﴾ कि इसमें हर बात की वज़ाहत मौजूद है मगर हुक्म दिया गया कि तुम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी करना। नबी अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में दो चीज़ें लाए, एक रोशन किताब दूसरा रोशन दिल। एक इल्मे कामिल दूसरा अमले कामिल। इंसानियत की हिदायत के लिए ये दो चश्मे हैं। सहाबा किराम के सामने क़ुरआन पाक नाज़िल होता था लेकिन इसके बावजूद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया ﴿ويزكيهم﴾ और वह उनका तज़किया (निखारा) करते थे। मालूम हुआ कि तज़्किये के लिए किसी तज़्किया करने वाले की ज़रूरत होती है। जैसे कपड़े धोने के लिए धोबी की ज़रूरत होती है जो उस पर साबुन लगाकर उसके अंदर का मैल निकाल देता है।

एक अक़्ली दलील

कोई भी पढ़ने वाला जब पर्चा देने बैठता है तो वह अपने ज़हन के मुताबिक़ हर-हर सवाल का सही जवाब लिखता है। अगर उसको पता हो कि जवाब ग़लत है तो लिखे ही क्यों? वह तो बेचारा रातों को जागता रहा, वह तो दुआएं भी मंगवाता रहा कि मैं कामयाब हो जाऊँ, उसके दिल की तो तड़प थी लेकिन जब किसी इम्तिहान लेने वाले के सामने पर्चा जाता है तो वह बता देता है कि यह ग़लत है, वह ग़लत है। उस वक़्त तालिब इल्म को अपनी ग़लती का एहसास होता है। यही मामला इंसान का है कि वह अपनी ज़ात की इस्लाह ख़ुद नहीं कर सकता क्योंकि नफ़्स उसके ऐबों को उसके सामने सजा करके पेश करता है। हर बात की कोई न कोई दलील पेश कर देता है। रिश्वत लेने वाला हमेशा कहेगा कि मैं अपने लिए तो नहीं लेता आख़िर बच्चों को भी तो पालना है। इंसान इसी तरह पर शैतान के मकर व फ़रेब में

आकर बुराई कर गुज़रता है। इसीलिए शेख़ की ज़रूरत होती है ताकि वह आदमी पर नज़र रखे। अल्लाह करे कि हम किसी की निगाह में रहने वाले हों क्योंकि वह दिन मातम और ग़म का दिन होगा जब हमारे ऊपर नज़र रखने वाला कोई नहीं रहेगा।

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० का इज़्हारे अफ़सोस

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० एक बार हज पर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत क़ारी फ़तेह मुहम्मद साहब रह० से मुलाक़ात के लिए उनके हाँ गए। आप जिस वक़्त पहुँचे उस वक़्त हज़रत क़ारी साहब लेटे हुए थे। हज़रत फ़रमाते हैं कि जब मैंने उन्हें लेटे हुए देखा तो मैंने पाँव दबाने शुरू कर दिए। हज़रत क़ारी साहब रह० ने फ़ौरन पाँव समेट लिए और फ़रमाया, ना! ना! आपसे तो मैं यह काम नहीं करवा सकता। मैंने काफ़ी इसरार किया मगर न माने। आख़िर मैं रो पड़ा और कहने लगा आज यह कैसा वक़्त आ गया है कि दुनिया में मुझे कोई ऐसा बंदा नज़र नहीं आता जो मुझे अपने पाँव दबाने की इजाज़त दे दे।

उम्मत के बड़े और पीर की ज़रूरत

सालिक के सर पर शेख़ की रूहानियत और उसकी दुआओं का साया होता है। यही वजह है कि बड़े-बड़े मशहूर उलमा ने भी अल्लाह वालों की सोहबत से फ़ैज़ हासिल किया है। सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाते थे कि अगर अबू हाशिम सूफ़ी रह० न होते तो हम रिया (दिखावे) के बारीक नुक्तों से कभी वाक़िफ़ न हो सकते। ख़ुद इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० हज़रत जाफ़र सादिक़

रह० की सोहबत में रहे जो सिलसिलाए आलिया नक़्शबंदिया में पाँचवें नम्बर पर आते हैं और इसके बारे में फ़रमाया ﴿لولا السنتان لهلك النعمان﴾ अगर ये दो साल न होते तो नौमान हलाक हो जाता।

इमाम ग़ज़ाली रह० के पीर व मुर्शिद सिलसिलाए आलिया नक़्शबंदिया के शेख़ हज़रत ख़्वाजा बू अली फ़ारमदी रह० थे। इमाम ग़ज़ाली रह० ख़ुद अपनी एक किताब में लिखते हैं कि मैंने ख़्वाजा बू अली फ़ारमदी रह० से ज़ाहिरी तर्बियत भी पाई और तरीक़ाए नक़्शबंदिया के कमालात भी हासिल किए। इमाम अहमद बिन हंबल रह० हज़रत बशरे हाफ़ी रह० की सोहबत में जाया करते थे। किसी ने कहा, हज़रत आप तो इतने बड़े आलिम है, आप एक गुदड़ी पहनने वाले के पास क्यों जाते हैं? फ़रमाया, "मैं तो किताबुल्लाह का आलिम हूँ और वह अल्लाह तआला का आलिम है इसलिए मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होता हूँ।"

इमाम ग़ज़ाली रह० के नज़दीक इल्म हासिल करने के मक़सद

इमाम ग़ज़ाली रह० ने पढ़ने के ज़माने में ख़्वाजा बू अली फ़ारमदी रह० से तर्बियत पाई। उनकी तर्बियत पर रोशनी डालने के लिए उनके पढ़ने के ज़माने का एक वाक़िआ सुनाता हूँ। जिस मदरसे में पढ़ते थे। वह मदरसा वक़्त के बादशाह निज़ामुल मलिक तूसी ने बनवाया था। मदरसे के हालात के बारे में बादशाह को इत्तिला मिली कि जनाब आपने जो मदरसा बनवाया था वहाँ पर तो पढ़ने वाले सब के सब दुनियादार हैं, दीन सीखने वाला कोई भी नहीं। बादशाह ने कहा, अच्छा मैं इतना पैसा ख़र्च कर

रहा हूँ और अगर तलबा वहाँ किताबें पढ़कर भी दुनियादार बनेंगे तो क्या फ़ायदा, इस मदरसे को तो बंद ही कर दिया जाए मगर दिल में ख़्याल आया कि मैं वहाँ जाकर हालात तो देखूं।

जब बादशाह अपना भेष बदलकर वहाँ पहुँचा तो उसने एक तालिबे इल्म से पूछा कि भाई! आप यहाँ कैसे आए? कहने लगा, मैं इल्म पढ़ रहा हूं मेरे वालिद फ़लां जगह मुफ़्ती हैं, मैं भी मुफ़्ती बनूंगा। लोगों में इज़्ज़त हुआ करेगी। दूसरे से पूछा तो उसने कहा मेरे वालिद फ़लां जगह क़ाज़ी हैं मैं बड़ा होकर उनका ओहदा संभालूंगा। तीसरे से पूछा तो उसने कहा, वक़्त का बादशाह उलमा की बड़ी क़दर करता है, मैं आलिम बनूंगा और बादशाह का साथी बनूंगा। ये सब बातें सुनकर बादशाह ने सोचा वाक़ई ये सब के सब तो दुनियादार हैं। मुझे इतने पैसे ख़र्च करने का क्या फ़ायदा? यह इरादा लेकर जब बाहर निकलने लगा तो दरवाज़े के क़रीब उसने देखा कि एक ताबिल इल्म चिराग़ जलाए पढ़ रहा है। उसने सोचा चलो इससे भी बात करता चलूं। लिहाज़ा बादशाह क़रीब हुआ और कहा, अस्सलामु अलैकुम। तालिब इल्म ने कहा वअलैकुम सलाम और फिर पढ़ना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा कि यह क्या बात है कि आप मुझसे कोई बात ही नहीं करते। तालिब इल्म ने कहा, जी मैं आपसे यहाँ बातें करने तो नहीं आया। बादशाह ने पूछा भई! आप किस लिए आए हो? तालिब इल्म ने जवाब दिया, मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि मैं अपने परवरदिगार को राज़ी करूं, मुझे नहीं पता कि मैं उसे कैसे राज़ी कर सकता हूँ, यह बातें इन किताबों में लिखा हुई हैं। मैं वह किताबें पढूंगा, इन बातों को समझकर इन पर अमल करूंगा और अपने परवरदिगार

को राज़ी करूंगा। यह बच्चा बड़ा हुआ तो अपने वक़्त का इमाम ग़ज़ाली बना। यह शेख़ की सोहबत थी जिसने बचपन से ही उनके दिल में यह जज़्बा भर दिया कि दीन पढ़ने का मक़सद अल्लाह तआला की रज़ा होती है।

ख़ुदा तआला की रज़ा की अहमियत

चटाईयों पर बैठ-बैठ कर आदमी के घुटनों और टख़नों पर निशान पड़ जाते हैं। मगर याद रखें कि अगर अल्लाह की रज़ा का जज़्बा दिल में पैदा न हुआ तो यह निशान फ़ायदा नहीं देंगे। क्या जानवरों के घुटनों और टख़नों पर निशान नहीं होते? जाओ किसी बैल को देखो, जाओ किसी घोड़े को देखो और गधे को देखो। तुम्हें इनकी टांगों और टख़नों पर निशान नज़र आएंगे। जो तालिब इल्म यह सोचे की सफ़ पर बैठ-बैठ कर जिस्म पर निशान पड़ चुके है तो उसे सुन लेना चाहिए कि अगर मक़सद अल्लाह की रज़ा होगी तो एक-एक हर्फ़ के पढ़ने पर अज्र मिलेगा और अगर मक़सद दुनिया होगी तो यह बोझ होगा जो गधे की पीठ पर लादा गया हो।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० की अपने बेटे को नसीहत

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० ने अपने बेटे बाक़र रह० को नसीहत करते हुए फ़रमाया, बेटा! चार आदमियों के पास न रहना, रास्ता चलते हुए उनके साथ थोड़ी देर के लिए भी न चलना। कहने लगे कि मैं बड़ा हैरान हुआ कि वह इतने

ख़तरनाक हैं। पूछा कि वे कौन से आदमी हैं? फ़रमाया कि कंजूस आदमी, उससे कभी दोस्ती न करना, इसलिए कि वह तुझे ऐसे वक़्त में धोका देगा जब तुझे उसकी बहुत ज़रूरत होगी। दूसरा झूठा आदमी कि वह दूर को क़रीब ज़ाहिर करेगा और क़रीब को दूर और तीसरा फ़ासिक़ आदमी क्योंकि वह तुझे एक लुक़्मे के बदले या एक लुक़्मे से भी कम में बेच देगा। कहते हैं कि मैंने पूछा, अब्बू! एक लुक़्मे में बेचना तो समझ में आता है, एक लुक़्मे से कम में बेचने का क्या मतलब है? फ़रमाया कि वह तुम्हें एक लुक़्मा मिलने की उम्मीद पर बेच देगा। और चौथा ताल्लुक़ तोड़ने वाला आदमी क्योंकि मैंने क़ुरआन में कई जगह उस पर लानत देखी है। यह बाप की सोहबत के अनमोल मोती थे जो बेटे को मिल रहे थे। एक वह वक़्त था कि बाप अपने बेटों को नसीहत किया करते थे।

मौलाना याह्या रह० का मलफ़ूज़

शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़क्रिया रह० फ़रमाते थे कि मेरे वालिद मौलाना याह्या रह० फ़रमाया करते थे कि तालिब इल्म कितना ही कुंद ज़हन क्यों न हो अगर उसे दोस्ती लगाने का मर्ज़ नहीं तो वह कभी न कभी मंज़िल पर पहुँच जाएगा और कोई तालिब इल्म कितनी ही ज़हीन क्यों न हो अगर उसे दोस्ती लगाने का मर्ज़ है तो वह कभी भी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकेगा। इसी तरह इंसान देखे कि वह किन लोगों के साथ अपना वक़्त गुज़ार रहा है।

अच्छे और बुरे दोस्त की मिसाल

हदीस मुबारक में बुरे दोस्त की मिसाल लोहार की भट्टी की तरह बताई गई है। अगर आपकी दोस्ती किसी लोहार के साथ हो तो आप जाकर देखिए कि आपको कोयले की स्याही मिलेगी। अगर और ज़्यादा क़रीब जाकर बैठेंगे तो धुंवा मिलेगा अगर और ज़्यादा क़रीब जाकर बैठेंगे तो आग से कपड़े जलेंगे और नेक दोस्त की मिसाल अत्तार की तरह है। उसके पास जाइए, अव्वल तो इत्र की ख़ुशबू आएगी और अगर अच्छा दोस्त होगा तो वह इत्र ही दे देगा। अगर फ़ासिक़ की दोस्ती होगी तो यक़ीनन ज़हर होगी। आहिस्ता-आहिस्ता इंसान पर उसका असर होना शुरू हो जाएगा। किसी शायर ने इसी मज़मून को यूँ बयान किया है–

जहा इत्र खिंचता है जाओ वहाँ गर
तो आओगे इक रोज़ कपड़े बसा कर

जहाँ आग जलती है जाओ वहाँ गर
तो आओगे इक रोज़ कपड़े जला कर

यह माना कि कपड़े बचाते रहे तुम
मगर आग की सेंक खाते रहे तुम

यानी जहाँ इत्र बनाया जाता है वहाँ कपड़ों में ख़ुशबू रची हुई होती है और जहाँ आग जलती है अगर वहाँ जाओगे तो एक न एक दिन अपने कपड़े जलाकर आओगे। अगर कोई आदमी कहे कि मैं आग के पास भी बैठता हूँ और कपड़े भी नहीं जलने देता तो हाँ मान लिया कि तुम कपड़े तो बचाते रहे मगर आग की गर्मी तो तुझे पहुँचती रही। इसी तरह आदमी बुरे दोस्तों की

सोहबत में गुनाहों से बच भी जाए तो गुनाहों के असरात से नहीं बच सकता।

अलग ख़्याल आदमी की सोहबत से परहेज़

सालिक अगर किसी अलग ख़्याल वाले से सोहबत रखेगा तो वह अपने मक़ाम से गिर जाएगा। नाजिन्स ऐसे आदमी को कहते हैं कि जिसका मक़सद कुछ और हो जो हम ख़्याल न हो क्योंकि हम ख़्याल तो उसे कहते है जिसका मक़सद एक हो। बुरा दोस्त तो सांप की तरह होता है जो आदमी को डस लिया करता है। सांप ने डसा तो बंदा जिस्मानी मौत मरा और बुरे दोस्त ने डसा तो इंसान रूहानी मौत मर गया।

जानवरों की सोहबत के असरात

कई लोग कहते हैं कि जी मैंने फ़ासिक़ दोस्त तो बनाए हुए हैं लेकिन उनकी बातों का मेरे ऊपर कोई असर नहीं होता। यह सौ फ़ीसद ग़लत बात है क्योंकि आदमी पर तो जानवरों की सोहबत का भी असर हो जाता है। उलमाए किराम ने लिखा है कि जो आदमी घोड़ों की सवारी करने वाला हो उसके अंदर बहादुरी का जज़्बा होता है, जो आदमी ऊँटों की सोहबत में रहने वाला हो उसके अंदर हटधर्मी होती है, जो बकरियाँ पालने वाला होता है उसमें आजिज़ी और छोटापन होता है। अगर इन जानवरों के साथ रहने की वजह से उनकी फ़ितरत तबियत पर असर करती है तो जो इंसानों के साथ रहेगा उस पर असर क्यों नहीं होगा।

अल्लाह वालों का फ़ैज़ाने नज़र

हज़रत मुर्शिदे आलम एक अजीब बात फ़रमाया करते थे कि देखो बुरी नज़र का लग जाना शरिअत से साबित है। जैसा कि हदीस पाक में है ﴿العين حق﴾ तो फ़रमाते थे कि जिस नज़र के अंदर नफ़रत है, कपट है, अदावत है, दुश्मनी है अगर वह नज़र इंसान के ऊपर असर कर देती है तो शेख़ की वह नज़र जिसमें शफ़क़त हो, रहमत हो, मुहब्बत हो, इनायत हो, इख़्लास हो वह नज़र इंसान के दिल पर क्यों असर नहीं करेगी। अल्लाह वालों की भी नज़र लग जाती है। अल्लाह करे कि किसी की नज़र हमारे दिलों पर लग जाए (आमीन)। जी हाँ तभी तो आदमी महफ़ूज़ रहता है। इसीलिए अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿يا ايها الذين امنوا اتقوا الله﴾ ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो ﴿وكونوا مع الصادقين.﴾ और सच्चे लोगों की सोहबत अपनाओ।

सालिकीने तरीक़त का बुनियादी फ़र्ज़

मौलाना रूमी रह० फ़रमाते हैं–

सारी किताबें और सारे पन्ने आग में डाल दे और जान व दिल को किसी दिलदार के हवाले कर दे।

यह चीज़ किसी शेख़ की सोहबत में बैठकर आती है। किसी पंजाबी शायर ने इस मज़मून को यूँ बयान किया है–

मिट्टी बनकर हम किसी कुम्हार के हाथों में आएं जो हमें प्याले की शक्ल में ढाल दे। अगर क़िस्मत से रियाज़त की भट्टी से पककर निकले तो महबूब के लबों से लगने का हमें मज़ा नसीब हो जाएगा।

मेरे दोस्तो! हम अपने आपको मिट्टी समझें और अपने आपको शेख़ के हवाले कर दें फिर वह हमें जिस शक्ल में ढाले ढलते चले जाएं। फिर देखना अल्लाह तआला हमें कैसे मारिफ़त के जाम पिलाएंगे। देखें कि जिस पौधे का कोई माली न कितना बदसूरत होता है, उसकी शाख़ें किसी ढब पर नहीं होतीं, टेढ़ा-मेढ़ा होता है लेकिन अगर उसका कोई माली हो तो वह उसकी शाख़ों को तराश्ता है और इस तरह यह पौधा देखने में अच्छा और नज़र में उतरने वाला होता है। अल्लाह करे कि हमारा भी कोई निगहबान हो। इस निगहबान को शेख़ कहते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत के असरात

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को जो शर्फ़ नसीब हुआ वह उनकी रियाज़त और इल्मी कमालात से नहीं बल्कि उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत से मिला। वह सहाबी जिसने ईमान की हालत में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहराए अनवर की तरफ़ देखा और कुछ ही लम्हों के बाद उनकी मौत आ गई तो उनको ऐसा दर्जा नसीब हो गया कि अगर सारी दुनिया के बड़े-बड़े औलिया, ग़ौस, अब्दाल और क़ुतबों को से भर जाए तो उस सहाबी के दर्जे को नहीं पहुँच सकती।

अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत

इमाम शाफ़ई रह० से किसी ने सवाल पूछा कि हज़रत! सैय्यदना अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का दर्जा बड़ा है या उमर बिन

अब्दुल अज़ीज़ रह० का। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० बाद के दौर के आदिल ख़लीफ़ा थे जबकि हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बड़ी लड़ाइयाँ रहीं और इन्हीं जंगों की वजह से हालात पुरअमन न थे। इसलिए उस आदमी ने इन दो शख़्सियतों के बारे में सवाल किया। इमाम शाफ़ई रह० ने ऐसा जवाब दिया जो सोने की रोशनाई से लिखने के क़ाबिल है। फ़रमाया, जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह जिहाद के लिए निकले और उनके घोड़े के नथनों में जो गर्द व मिट्टी जा पड़ी, उमर अब्दुल अज़ीज़ रह० से उस मिट्टी का रुत्बा भी बड़ा है।

पीर कक्ड़ चीर

अल्लाह करे कि हमें कोई डांटने वाला हो। आजकल पीर मुरीद बनकर रहते हैं और मुरीद पीर बनकर रहते हैं। पीर मुरीदों की रज़ा हासिल करने के लिए उनकी ख़िदमत करते फिरते हैं। इसलिए कि पीर की नज़र मुरीद की जेब पर होती है। ऐसे दुनियादार पीर, 'पीर' नहीं होते वे तो 'पीड़' होते हैं। पता है कि 'पीड़' किसे कहते हैं? पीड़ दर्द को कहते हैं। पीर कक्ड़ चीर। वे पीर नहीं बल्कि कलंक का टीका होते हैं जिन्होंने असल पीरों को भी बदनाम कर रखा है।

एक नक़ली पीर की हिकायत

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने लिखा है कि एक आदमी तालिब सादिक़ था। किसी शैख़ से बैअत था। उस शैख़ की नज़र उसके

माल पर थी। उस आदमी ने ख़्वाब में देखा और आकर पीर साहब से बयान किया। कहने लगा हज़रत मैंने ख़्वाब में देखा है कि आपके हाथ पर शहद लगा हुआ है और मेरे हाथ पर गंदगी लगी हुई है। बस पीर साहब ने सुना तो फ़ौरन कह उठे कि यह बिल्कुल सच्चा ख़्वाब है क्योंकि हम दीनदार लोग हैं हमारे हाथ पर शहद लगा हुआ है और तुम दुनियादार लोग हो और तुम्हारे हाथ पर गंदगी लगी हुई है। वह कहने लगा हज़रत! अभी पूरा ख़्वाब तो सुनें कि पूरा ख़्वाब क्या है? कहने लगा कि आपने अपना हाथ मेरे मुँह में दिया हुआ है और मैंने अपना हाथ आपके मुँह में दिया हुआ है। मुरीद को अक़ीदत की वजह से शैख़ से फिर भी फ़ायदा हो रहा था मगर शैख़ की नज़र क्योंकि मुरीद की जेब पर थी इसलिए उसको नुक़सान हो रहा था।

मुरीद की डांट-डपट क्यों ज़रूरी है?

आज के दौर में कामिलीन लोग कहाँ नज़र आते हैं जो लालच के बग़ैर बंदे को अल्लाह से मिलाने के लिए मेहनत कर रहे हों। अल्लाह करे कि हम कामिलीन की सोहबत में रहने वाले बन जाएं।

शेख़ कामिल की अलामत यह होती है कि डाँट-डपट करता रहता है। हज़रत फ़रमाते थे, 'दब' न हो तो अदब पैदा नहीं होता। जब डांट पड़ती है तो केई दोस्त घबरा जाते हैं। नहीं, बल्कि उसे तिरयाक़ समझें क्योंकि मशाइख़ ने लिखा है कि शेख़ की जिस मुरीद पर ज़्यादा नज़र होती है शेख़ उसे ज़्यादा डाँट-डपट किया करता है। यह डाँट-डपट करना शेख़ की ज़िम्मेदारी होती है।

और आज के पीर तो 'चुप शाह' बने हुए होते हैं। मुरीद जो कुछ करते फिरें, सुन्नत पर अमल हो रहा है या बिदअत पर, पीर साहब तो चुपकर के बैठे होते हैं। कहते हैं, ओजी! शाह साहब तो पहुँचे हुए हैं। हाँ बेचारे पहुँचे हुए होते हैं मगर कहाँ? जहन्नम में या जिहालत के अंधेरों में। हमारे हाँ ऐसी पीरी मुरीदी नहीं होती। हमारे यहाँ डाँट-डपट और दीन सीखने-सिखाने का नाम पीरी मुरीदी है। शेख़ की ज़िम्मेदारी ऐसी हाती है कि जिस में डांटना और कहना ज़रूरी होती है। अगर जर्राह किसी को नश्तर लगाए तो वह ज़ुल्म नहीं होता बल्कि वह ऐन प्यार होता है, शफ़क़त और रहमत होती है। गोया लोग नश्तर भी लगवाते हैं और सेहत पाकर उसी तबीब को दुआएं भी दिया करते हैं। शेख़ की डाँट-डपट भी उसी नश्तर की तरह होती है जिससे बंदे के जिस्म के जो नासूर होते हैं उनका गंदा मवाद निकाला जाता है।

डांटते वक़्त मशाइख़ की कैफ़ियत

हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाते हैं क जब शेख़ किसी को डांटता है तो अपने आपको उससे अफ़ज़ल नहीं समझता बल्कि उसकी हालत उस जल्लाद की सी होती है जिसको हुक्म दिया जाए कि शहज़ादे की फ़लां ग़लती पर दो कोड़े लगाए जाएं। जल्लाद शहज़ादे को कोड़े तो मार रहा होगा मगर उसके दिल में इस शहज़ादे की अज़मत भी होगी। शेख़ तो इस एहसास से डांटते हैं कि जैसे किसी ख़ूबसूरत बच्चे ने अपने चेहरे पर मिट्टी लगा ली है। अब उसको धोवेंगे तो अंदर से चमकता हुआ चेहरा निकल आएगा।

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की आजिज़ी

शाइख़ में तो इतनी आजिज़ी होती है कि अगर हमारे सामने खुल जाए तो हम हैरान हो जाएं। हज़रत हाजी इमादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० से एक आदमी ने आकर कहा कि फ़लां बुज़ुर्ग तो लोगों को बड़े इस्तिख़ारे करने के बाद बैअत करते हैं लेकिन आप के पास तो जो भी आता है आप उसे बैअत कर लेते हैं। फ़रमाया कि मैं तो हर एक को इसलिए बैअत कर लेता हूँ कि अगर क़यामत के दिन मेरे मुरीद अपने पीर को जहन्नम में जाता हुआ देखेंगे तो कोई तो उनमें से ऐसा होगा जो पीर की सिफ़ारिश करेगा। किसी एक की सिफ़ारिश से अल्लाह तआला पीर को भी जन्नत में जाने की तौफ़ीक़ दे देंगे।

पीर और मौलवी के होंटों का सीमेंट

एक अजीब बात सुनें कि हलवा पीर और मौलवी के होंटों की सीमेंट होता है यानी जो पीर हलवे खाएगा वह मुरीदों की क्या इस्लाह करेगा? जो मौलवी हलवे खाएगा वह लोगों को क्या दीन सिखाएगा? वह तो लोगों की रज़ा के मुताबिक़ मसाइल बताएगा। हमारे मशाइख़ की यही तो ख़ासियत है उन्होंने हलवों पर नहीं बल्कि अल्लाह के जलवों पर नज़र रखी। दुनिया के तालिब नहीं बल्कि वे अल्लाह के तालिब बनकर रहे क्योंकि उन्हें मालूम था ﴿الدنيا جيفة وطالبها كلاب.﴾ दुनिया एक मुर्दार है और उसको चाहने वाले कुत्ते हैं।

फ़िक्र की घड़ी

मेरे दोस्तो! आप हज़रात अपने वक़्तों की हिफ़ाज़त करें। यह दो चार दिन मेरे और आपके लिए सरमाया बन जाएं। चाहे थोड़े से दिन हैं मगर फ़र्क़ नहीं पड़ता, हैं तो सही। देखें एक बुढ़िया 'अट्टी' लेकर जा रही थी ताकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़रीद सके। किसी ने पूछा, अम्मा! आपको वहाँ कौन पूछेगा, वहाँ तो बड़े-बड़े अमीर और ख़रीदार आएंगे, शहज़ादे और बादशाह आएंगे। वह कहने लगी, बेटा! यह तो मैं भी जानती हूँ कि मैं हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़रीद तो नहीं सकती मगर दिल में यह बात है कि क़यामत के दिन जब ऐलान होगा कि हज़रत यूसफ़ अलैहिस्सलाम के ख़रीदार कहाँ है तो मैं भी ख़रीदारों में शामिल हो जाऊँगी।

मेरे दोस्तो! जब क़यामत के दिन पूछा जाएगा कि मेरी याद में सफ़र करने वाले कहाँ हैं? मेरी याद में बीवी-बच्चों को छोड़कर मस्जिदों के धक्के खाने वाले कहाँ हैं? तो मुमकिन है कि हमें भी उनमें शुमार कर लिया जाए। अगर हम इन वक़्तों की क़दर कर लेंगे तो यह हमारी ज़िंदगी की पूंजी बन जाएंगे।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारी इस्लाह फ़रमा दे और क़यामत के दिन हमें बख़्शिश किए हुए गुनागारों की लाइन में शामिल फ़रमा ले। (आमीन सुम्मा आमीन)

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❋ ❋ ❋

क़ुरआन पाक की अज़मत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

ان عرضنا الامانة على السموات والارض والجبال فابين ان

يحملنها واشفقن منها وحملها الانسان انهٗ ظلوما جهولا ٥ وقال

رسول الله صلى الله عليه وسلم خيركم من تعلم القران وعلمهٗ او

كما قال عليه الصلوة والسلام سبحان ربك رب العزه عما

يصفون .وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

इंसानियत के लिए आबे-हयात

﴿كتاب انزلنه اليك﴾ यह एक ऐसी किताब है जिसे हमने आपकी तरफ़ नाज़िल किया ﴿لتخرج الناس من الظلمٰت الى النور.﴾ ताकि आप इंसानों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाएं। क़ुरआन मजीद इंसानों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाने वाली किताब, भटके हुओं को सीधा रास्ता दिखाने वाली किताब, ज़िल्लत के गढ़ों में पड़े हुओं को बुलंदियों पर पहुँचाने वाली किताब और अल्लाह से बिछड़े हुओं को अल्लाह से मिलाने वाली किताब है। क़ुरआन मजीद इंसानियत के लिए शाही फ़रमाने

ज़िंदगी है, इंसानियत के लिए ज़िंदगी का दस्तूर है, इंसानियत के लिए ज़िंदगी गुज़ारने का क़ायदा है बल्कि पूरी इंसानियत के लिए आबे हयात (अमृत) है। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का कलाम है।

﴿تبرك بالقران فانهٗ كلام الله وخرج منهٗ.﴾

क़ुरआन से बरकत हासिल करो कि यह अल्लाह का कलाम है और उससे निकला हुआ है।

इबादत ही इबादत

क़ुरआन मजीद ऐसी किताब है जिसका देखना भी इबादत है, उसका छूना भी इबादत है, उसका पढ़ना भी इबादत है, उसका पढ़ाना भी इबादत है, उसका सुनना भी इबादत है, उसका सुनाना भी इबादत है, उसका समझना भी इबादत है, उस पर अमल करना भी इबादत है और उसको हिफ़्ज़ करना भी इबादत है।

रहमते इलाही की बरसात

आपने दुनिया में चुम्बक देखे होंगे जो लोहे को अपनी तरफ़ खींचते हैं। यूँ मालूम होता है कि यह क़ुरआन मजीद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमतों को खींचने का चुम्बक है। ﴿واذا قـــــرء القران.﴾ और जब क़ुरआन पढ़ा जाए ﴿فاستمعوا لهٗ وانصتوا﴾ उसको ध्यान के साथ सुनो और ख़ामोश रहो ﴿لعلكم ترحمون.﴾ ताकि तुम पर रहमतें बरसाई जाएं। गोया जिस महफ़िल में, क़ुरआन पढ़ा जाए या सुना जाए या बयान किया जाए उस महफ़िल पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतें बरसा करती हैं। गोया रहमते इलाही की बरसात शुरू हो जाती है।

दिल का बर्तन सीधा कर लें

जब आप अपने दिलों का बर्तन सीधा करके बैठेंगे तब अल्लाह तआला की रहमतें पाएंगे। बारिश कितनी ही मूसलाधार क्यों न हो अगर कोई बर्तन ही उल्टा पड़ा हो तो उसके अंदर एक बूंद भी पानी नहीं आता। यह बारिश का क़सूर नहीं होता बल्कि उस बर्तन का क़ुसूर होता है जिसका रुख़ उल्टा होता है। फ़रमाया ﴿ان فی ذٰلك لذكرى﴾ (इस क़ुरआन में नसीहत है उसके लिए) ﴿لمن كان لهٗ قلب﴾ (जिसके अंदर दिल होता है) और जिसके अंदर दिल के बजाए 'सिल' (पत्थर) हो फिर क्या मज़ा ﴿او القى السمع.﴾ (सरापा कान बनकर बैठे) ﴿وهو شهيد.﴾ (और हाज़िर होकर बैठे)। यूँ तलबगार बनकर बैठेगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतों से अपना दामन भर जाएगा।

क़ुरआन मजीद पढ़ने की लज़्ज़त

दुनिया की कोई किताब ऐसी नहीं है जिसके हाफ़िज़ दुनिया में मौजूद हों। यह सिर्फ़ क़ुरआन अज़ीमुश्शान का ही मक़ाम है कि अल्लाह तआला ने उसका याद करना अपने बंदों के लिए आसान फ़रमा दिया है। सुब्हानअल्लाह! इस किताब को पढ़ने की भी अजीब लज़्ज़त है कि दुनिया में कोई दूसरी किताब ऐसी नहीं है कि जिसके पढ़ने वाले को ऐसे मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से पढ़ते हों जिस तरह यह किताब पढ़ी जाती है। यह पढ़ने वालों का कमाल नहीं है बल्कि यह इस किताब का कमाल है जो अलग-अलग अंदाज़ में पढ़ी जाती है। ये छोटे-छोटे बच्चे कभी किसी तरीक़े से पढ़ रहे हैं कभी किसी तरीक़े में पढ़ रहे होते हैं। अगर यह बंदों का कमाल

हो तो यही क़िरात करने वाले दुनिया की किसी दूसरी किताब को पढ़कर दिखा दें। यह अच्छी आवाज़ों वाले दुनिया किसी दूसरी किताब को इस तरह पढ़कर दिखा दें तो फिर जांनें। मालूम हुआ कि यह कमाल उनका नहीं है बल्कि यह कमाल उस कमाल वाले का है जिसने अपनी किताब का पढ़ना आसान फ़रमा दिया।

(सुब्हानअल्लाह)

ज़िंदा लोगों का शहर

एक वक़्त वह भी था जब इस क़ुरआन को तहज्जुद के वक़्त पढ़ा जाता था। मदीना की गलियों में इसे अगर तहज्जुद के वक़्त कोई आदमी चलता तो हर घर से क़ुरआन पढ़ने की यूँ आवाज़ आ रही होती जैसा कि शहद की मक्खियों के भिनभिनाने की आवाज़ होती है। वह ज़िंदा लोगों का शहर था।

ज़मीर की लाश

और अगर रात के आख़िरी पहर में हम गली कूचे बाज़ार से गुज़रें तो यूँ ख़ामोशी होती है जैसे इंसानियत अपने कंधों पर अपने ज़मीर की लाश को लेकर दफ़नाने के लिए जा रही हो। सारी क़ौम सोई हुई होती है। रात दो बजे तक इधर-उधर के बेकार कामों में मशग़ूल रहेंगे और जब मांगने का वक़्त आएगा तो उस वक़्त घोड़े बेचकर सो जाएंगे।

क़ुरआन सुनने के लिए फ़रिश्तों का नाज़िल होना

एक सहाबी अपने घर के अंदर तहज्जुद में क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। तबियत ऐसी मचल रही थी कि जी चाहता था कि

ज़रा ऊँची आवाज़ से पढ़ें मगर क़रीब ही एक घोड़ा बंधा हुआ था और चारपाई पर बच्चा लेटा हुआ था। महसूस किया कि जब ऊँचा पढ़ता हूँ तो घोड़ा बिदकता है। लिहाज़ा दिल में ख़ौफ़ पैदा हुआ कि घोड़ा कहीं बच्चे को नुक़सान न पहुँचा दें। फिर आहिस्ता शुरू कर देते। सारी रात यही मामला होता रहा। जब तहज्जुद मुकम्मल की और दुआ के लिए हाथ उठाए तो क्या देखते हैं कि कुछ सितारों की तरह रोशनियाँ हैं जो उनके सरों पर आसमान की तरफ़ वापस जा रही है। यह उन रोशनियों को देखकर हैरान हुए।

सुबह हुई तो वह सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने रात को तहज्जुद इस अंदाज़ से पढ़ी कि बच्चे के ख़ौफ़ की वजह से आहिस्ता पढ़ता था और जी चाहता था कि ज़रा आवाज़ के साथ पढ़ूं मगर दुआ के वक़्त मैंने कुछ रोशनियाँ आसमान की तरफ़ जाते देखीं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया कि वे रब्बे करीम के फ़रिश्ते थे जो तुम्हारे क़ुरआन सुनने के लिए अर्शे रहमान से नीचे उतर आए थे अगर तुम ऊँची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ते रहते तो आज मदीना के लोग अपनी आँखों से फ़रिशतों को देख लेते। *(सुब्हानअल्लाह, सुब्हानअल्लाह)*

अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का क़ुरआन पढ़ना

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए। तहज्जुद का वक़्त था। एक तरफ़ देखा

कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नफ़्ले पढ़ रहे हैं और आहिस्ता-आहिस्ता क़ुरआन मजीद पढ़ रहे हैं और दूसरी तरफ़ उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रा ऊँची आवाज़ से क़ुरआन मजीद पढ़ रहे हैं। तहज्जुद में दोनों तरह पढ़ने की इजाज़त है। जब दोनों ग़ुलाम पढ़ चुके तो ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, अबू बक्र! तुम आहिस्ता क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं उस ज़ात को क़ुरआन सुना रहा था जो सीनों के भेदों को जानती है, मुझे भला ऊँचा पढ़ने की क्या ज़रूरत थी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा उमर! तुम ऊँचा क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं सोए हुओं को जगा रहा था, शैतान को भगा रहा था। सुब्हानअल्लाह! क़ुरआन पढ़ा जाता था और शैतान उन जगहों से भाग जाया करता था। अल्लाह रब्बुइलइज़्ज़त की रहमतें होती थीं। आज भी अगर कोई इंसान इस क़ुरआन को मुहब्बत से पढ़ेगा तो अल्लाह तआला की रहमतें उतरेंगी और उसकी बरकत से सीने रोशन हो जाएंगे। इसीलिए फ़रमाया

﴿لتخرج الناس من الظلمٰت الى النور.﴾

यह क़ुरआन इंसानों को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ ले जाता है।

ख़ुलूस हो तो ऐसा

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु

क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। सहाबा किराम में उस्ताद और क़ारी की हैसियत से मशहूर थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़रीब से गुज़रे और खड़े हो गए। जब उन्होंने देखा कि अल्लाह के महबूब तशरीफ़ लाए हैं तो वह भी ख़ामोश हो गए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ काब! क़ुरआन पढ़ो। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! यह आप पर नाज़िल हुआ है, मैं आपके सामने कैसे पढ़ूँ? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ मुझे इसी तरह हुक्म दिया गया है। वह रमज़ शनास भी थे। फ़ौरन पहचान गए कि ऊपर से इशारा हुआ है। लिहाज़ा पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! ﴿ءاللّٰه سمانى﴾ क्या अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त ने मेरा नाम लेकर कहा है? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ﴿نعم اللّٰه سماك.﴾ हाँ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तेरा नाम लेकर कहा है कि इब्ने काब से कहो कि क़ुरआन पढ़े, मेरे महबूब आप भी सुनेंगे और मैं परवरदिगार भी सुनूंगा। सुब्हानअल्लाह वह कितने ख़ुलूस के साथ क़ुरआन पढ़ते होंगे कि जिनसे क़ुरआन सुनने की फ़रमाइशें रब्बे रहमान की तरफ़ से आया करती थीं।*(अल्लाहु अकबर)*

एक अजीब शिकवा

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक बार सर्दियों की लम्बी रात में तहज्जुद के वक़्त दो रकूअत नफ़्ल की नियत बांधी। तबियत में कुछ ऐसा जज़्ब, सोज़ और कैफ़ियत थी कि जी चाहता था कि पढ़ती रहूँ, पढ़ती रहूँ। एक-एक आयत को मज़े ले-ले कर पढ़ती रहीं। उन्होंने ख़ूब क़ुरआन पढ़ा। सलाम फेरा तो क्या

देखती हैं कि सुबह सादिक़ क़रीब है। दुआ के लिए हाथ उठाए और रोने गयीं और कहने लगीं ऐ अल्लाह! मैंने तो दो रकूअत की ही नियत बांधी थी। तेरी रात भी कितनी छोटी है कि दो रकूअत में तेरी रात ख़त्म हो गई। उन्हें रातों के छोटा होने की शिकायत हुआ करती थी क्योंकि जब वह क़ुरआन पढ़ते थे तो उनको क़ुरआन पाक की लज़्ज़त आया करती थी।

क़ुरआन से लगाव का एक अजीब वाक़िआ

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिहाद से वापस तश्रीफ़ ला रहे थे। आपने एक जगह पड़ाव डाला और इर्शाद फ़रमाया कि दो आदमी रात को पहरा दें ताकि बाक़ी लोग आराम की नींद सो सकें। दो सहाबा ने अपने आपको इस ख़िदमत के लिए पेश किया। आपने उनसे फ़रमाया कि इस पहाड़ की चोटी पर चले जाओ और दुश्मन का ख़्याल रखो ऐसा न हो कि दुश्मन रात को हमला करे और लोगों को नुक़सान हो। वे दोनों सहाबा पहाड़ की चोटी पर चले गए। थोड़ी देर तो बैठे रहे। थोड़ी देर बाद आपस में मश्वरा किया कि अगर दोनों जागते रहे तो मुमकिन है कि आख़िरी पहर में दोनों को नींद आ जाए। बेहतर यह है कि एक बंदा अभी सो जाए और दूसरा जागता रहे। बाद में दूसरा जाग जाए और पहला सो जाए। इस तरह ज़िम्मेदारी भी पूरी हो जाएगी और वक़्त भी अच्छा गुज़र जाएगा। लिहाज़ा उनमें से एक सो गए और दूसरे जागते रहे। जो सहाबी जाग रहे थे उन्होंने सोचा कि मैं ख़ामोशी से इधर-उधर देख रहा हूँ कितना अच्छा हो कि मैं दो रकूअत ही पढ़ लूँ। दो रकूअत की

नियत बांधी और सूरः कहफ़ पढ़ना शुरू कर दी। सूरः कहफ़ पढ़ने में कुछ ऐसा मज़ा आया कि पढ़ते ही रहे। इस दौरान में दुश्मन इधर कहीं आ निकला। उसने देखा कि लश्कर तो सोया हुआ है, क़रीब कोई ऐसा तो नहीं जो पहरे में हो। उसने ऊपर पहाड़ की चोटी पर देखा तो एक आदमी खड़ा नज़र आया। उसने दूर ही से एक तीर मारा जो उनके जिस्म पर लगा और ख़ून निकल आया। मगर वह सूरः कहफ़ पढ़ते रहे। दूसरा तीर मारा तो ख़ून दूसरी जगह से निकल आया मगर फिर भी क़ुरआन पढ़ते रहे। इस तरह कई तीर उनके जिस्म में लगे और ख़ून निकलता रहा। ख़ून निकलने से वुज़ू के टूटने का मस्अला उस वक़्त वाज़ेह नहीं हुआ था। वह क़ुरआन पढ़ते रहे यहाँ तक कि महसूस हुआ कि जिस्म से इतना ख़ून निकल चुका है कहीं ऐसा न हो कि कमज़ोरी की वजह से बेहोश हो कर गिर जाऊँ, अगर गिर गया तू फिर मेरे भाई को कौन जगाएगा और लश्कर की हिफ़ाज़त कौन करेगा। यह तो ज़िम्मेदारी में कोताही होगी। लिहाज़ा जल्दी से सलाम फेरा और भाई को जगाकर कहने लगे कि दुश्मन तीरों पर तीर मारता रहता, मैं उनको खाता रहता मगर सूरः कहफ़ को पूरा किए बग़ैर में कभी सलाम न फेरता मुझे क़ुरआन के पढ़ने में यूँ मज़ा आ रहा था। *(सुब्हानअल्लाह)*

मेरे दोस्तो! हमारे ऊपर मक्खी आकर बैठती है तो हमारी नमाज़ की कैफ़ियत बदल जाती है। एक मच्छर आकर हमारी नमाज़ के ख़ुशू को ख़त्म कर देता है मगर उन लोगों को तीरों पर तीर लगते थे और उनकी नमाज़ों में ख़लल नहीं आता था।

क़ुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की कैफ़ियत

आज हम जिस तरह आइस क्रीम खाते हैं तो हमें हर-हर चम्मच के खाने पर मज़ा आता है बिल्कुल उसी तरह अल्लाह वाले जब क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं तो उनको हर-हर आयत के पढ़ने पर मज़ा आता है। जब वह क़ुरआन सुनते तो उनकी कैफ़ियत बदल जाती है। इसीलिए फ़रमाया

واذا سمعوا ما انزل الى الرسول ترى اعينهم
تفيض من الدمع مما عرفوا من الحق.

वह क़ुरआन सुनते थे तो उनकी आँखों से आँसुओं रवां-दवां हो जाते थे। ﴿يقولون﴾ वह कहा करते थे ﴿ربنا آمنا﴾ ऐ परवरदिगार! हम ईमान लाए, ﴿فاكتبنا مع الشهدين.﴾ ऐ अल्लाह! हमें गवाही देने वालों में से लिख ले।

وما لنا لا نومن بالله وما جائنا من الحق ونطمع
ان يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين.

सुब्हानअल्लाह! जब वे क़ुरआन सुनते हुए यूँ दुआएं मांगते थे तो रब्बे करीम की तरफ़ से फ़रमान आता था ﴿فاثابهم الله بماقالوا.﴾ वे जो कुछ अल्लाह से मांगते थे तो रब्बे करीम उनको वे तमाम कुछ अता फ़रमा देते थे। *(सुब्हानअल्लाह)*

क़ुरआन मजीद से इश्क़

हर दौर और हर ज़माने में इस क़ुरआन से इश्क़ करने वाले

गुज़रे हैं। दुनिया में कोई दूसरी ऐसी किताब नहीं जिससे इस क़दर मुहब्बत की गई, उसे तन्हाईयों में पढ़ा गया, उसे महफ़िलों में पढ़ा गया, उसे रात के अंधेरों में पढ़ा गया, उसे दिन के उजाले में पढ़ा गया, उसे हर्फ़-ब-हर्फ़ पढ़ा गया, उसे बुलंद आवाज़ से पढ़ा गया, उसे पढ़कर रोया गया, उसे सुनकर रोया गया, उसके एक-एक लफ़्ज़ पर मेहनत की गई, एक-एक लफ़्ज़ को हिफ़्ज़ किया, एक-एक लफ़्ज़ के माइने को समझा गया। इससे मुहब्बत करने वालों ने अपनी पूरी-पूरी ज़िंदगी क़ुरआन की ख़िदमत करते-करते गुज़ार दी और आख़िर में यह कहते हुए गए, ऐ अल्लाह! तू हमें अगर लम्बी उम्र अता कर देता तो हम पूरी ज़िंदगी इस क़ुरआन को पढ़ने-पढ़ाने में गुज़ार देते। भला दुनिया में कोई और किताब है जिससे इंसान ने यूँ मुहब्बत की हो। *(सुब्हानअल्लाह)*

क़ुरआन मजीद का अजीब मौजिज़ा

क़ुरआन मजीद अल्लाह तआला का ऐसा अज़ीमुश्शान कलाम है जिसके मौज्ज़े हर दौर में नज़र आते रहे। सन् 1987 ई० की बात है इस आजिज़ को अमरीका में कुछ वक़्त गुज़ारने का मौक़ा मिला। उस वक़्त मिस्र के मशहूर क़ारी अब्दुल बासित जिनकी कैसेट अक्सर सुनते रहते हैं, वह भी वहाँ तशरीफ़ लाए। कुछ ऐसा सिलसिला बना कि मुख़्तलिफ़ महफ़िलों में वह क़ुरआन पाक की तिलावत करते थे और यह आजिज़ कहीं उर्दू में कहीं इंगलिश में, जैस मजमा होता था उसी के हिसाब से कुछ बातें अर्ज़ कर दिया करता था। इसी अंदाज़ से मुख़्तलिफ़ जगहों पर प्रोग्राम होते रहे। आपको पता ही है क़ारी अब्दुल बासित कितना डूब कर क़ुरआन

पढ़ते थे। अल्लाह करीम ने उनको आवाज़ भी ऐसी दी थी कि जो उनकी ज़बान से क़ुरआन सुनता था वह अश-अश कर उठता था। उनको इस आजिज़ से इतनी मुहब्बत थी कि मेरा नाम लेकर मुझसे बात नहीं करते थे बल्कि जब भी बात करनी होती तो वह मुझे ﴿رجل صالح﴾ 'नेक आदमी' कहकर बात करते थे। एक बार किसी ने उनसे पूछा, क़ारी साहब! आप इतना मज़े का क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं, आप ने भी कभी क़ुरआन मजीद का मौजिज़ा देखा है? वह कहने लगे, क़ुरआन का एक मौजिज़ा? मालूम नहीं मैंने क़ुरआन के सैंकड़ो मौजिज़े आँखों से देखे हैं। उन्होंने कहा, कोई एक तो सुना दीजिए तो यह वाक़िआ उन्होंने खुद सुनाया।

क़ारी साहब फ़रमाने लगे कि यह उस वक़्त की बात है जमाल अब्दुल नासिर मिस्र का सदर था। उस ने रशिया का सरकारी दौरा किया। वहाँ पर कम्युनिस्ट हुकूमत थी। उस वक़्त कम्युनिज़्म का बोल-बाला था। दुनिया इस सुर्ख़ इंक़लाब से घबराती थी। दुनिया में इसको रीछ समझा जाता था। आज तो इस सुपर पावर को अल्लाह तआला ने जिहाद की बरकत से सिफ़र पावर बना दिया है। जमाल अब्दुल नासिर मास्को पहुँचा। उसने वहाँ जाकर अपने मुल्की कामों के बारे में कुछ मुलाक़ातें कीं। मुलाक़ातों के बाद उन्होंने थोड़ा सा वक़्त तबादला ख़्यालात के बारे में रखा हुआ था। उस वक़्त वे आपस में गप मारने के लिए बैठ गए। जब आपस में गप्पे मारने लगे तो कम्युनिस्टों ने कहा, जमाल अब्दुल नासिर! तुम क्या मुसलमान बने फिरते हो, तुम हमारी सुर्ख़ किताब को संभालो, जो कम्युनिज़्म की बुनियादी जड़ है, तुम भी

कम्युनिस्ट बन जाओ, हम तुम्हारे मुल्क में टैक्नोलाजी को रुशनास करा दें, तुम्हारे मुल्क में साइंसी तरक़्क़ी बहुत ज़्यादा हो जाएगी और तुम दुनिया के तरक़्क़ी वाले मुल्कों में शुमार हो जाओगे। इस्लाम को छोड़ दो और कम्युनिज़्म अपना लो। जमाल अब्दुल नासिर ने इसका जवाब दिया तो सही लेकिन दिल को तसल्ली न हुई। इतने में वक़्त ख़त्म हो गया और वापस आ गया मगर दिल में कसक बाक़ी रह गई कि मुझे इस्लाम की हक़्क़ानियत को और वाज़ेह करना चाहिए था। जितना मुझ पर हक़ बनता था मैं उतना नहीं कर सका। दो साल के बाद जमाल अब्दुल नासिर को एक बार फिर रूस जाने का मौक़ा मिला। क़ारी साहब फ़रमाते है मुझे सदर की तरफ़ से लैटर मिला कि आपने तैयारी करनी है और मेरे साथ मास्को जाना है। कहने लगे मैं बड़ा हैरान हुआ कि क़ारी अब्दुल बासित की ज़रूरत पड़े सऊदी अरब में, अरब इमारात में, पाकिस्तान में जहाँ मुसलमान बसते हैं। मास्को और रूस जहाँ ख़ुदा से बेज़ार लोग मौजूद हैं, दीन से बेज़ार लोग मौजूद हैं वहाँ क़ारी अब्दुल बासित की क्या ज़रूरत पड़ गई। ख़ैर तैयारी की और मैं सदर के साथ वहाँ पहुँचा।

वहाँ उन्होंने अपने मिटिंग पूरी की। उसके बाद थोड़ा सा वक़्त तबादलाए ख़्यालात के लिए रखा हुआ था। फ़रमाने लगे कि इस दफ़ा जमाल अब्दुल नासिर ने हिम्मत से काम किया और कहा कि ये मेरे साथी हैं जो आपके सामने कुछ पढ़ेंगे, आप सुनिएगा। वे समझ न पाए कि यह क्या पढ़ेगा। वे पूछने लगे कि यह क्या पढ़ेगा? वह कहने लगे कि यह क़ुरआन पढ़ेगा। उन्होंने कहा

अच्छा पढ़ें। फ़रमाने लगे कि मुझे इशारा मिला और मैंने पढ़ना शुरू किया। सूरः ताहा का वह रुकू पढ़ना शुरू कर दिया जिसे सुनकर किसी दौर में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान लाए थे।

طٰهٰ ما انزلنا عليك القران لتشقٰى الا تذكرة لمن يخشٰى ...

انني انا الله لا الٰه الا انا فاعبدني واقم الصلوة لذكرى.

फ़रमाते हैं कि मैंने जब दो रुकू की तिलावत करके आँख खोली तो मैंने क़ुरआन का मौजिज़ा अपनी आँखों से देखा कि सामने बैठे हुए कम्युनिस्टों में से चार-पाँच आदमी आँसुओं से रो रहे थे। जमाल अब्दुल नासिर ने पूछा, जनाब! आप क्यों रो रहे हैं? वह कहने लगे हम तो कुछ नहीं समझे कि आपके साथी ने पढ़ा है मगर पता नहीं इस कलाम में कुछ ऐसी तासीर थी कि हमारा दिल मोम हो गया। आँखो से आँसुओं की झड़ियाँ लग गयीं और हम कुछ बता नहीं सकते कि यह सब कुछ कैसे हुआ। सुब्हानअल्लाह! जो क़ुरआन को मानते नहीं, क़ुरआन को जानते नहीं अगर वे भी क़ुरआन सुनते हैं तो अल्लाह तआला उनके दिलों में भी तासीर पैदा कर दिया करते हैं।

एक ग़ैर-मुस्लिम पर सूरः फ़ातिहा का असर

अमरीका में जब कोई आदमी बहुत ज़्यादा सकून महसूस करता है तो कहता है कि मैं क़ुदरती तौर पर बहुत ज़्यादा सकून महसूस कर रहा हूँ। अमरीका का एक अमीर आदमी था जिसकी ज़िंदगी में सकून नहीं था। इस वजह से उसके सर में दर्द अक्सर रहता था।

हमारे एक दोस्त 'मिस्टर अहमद' किसी सरकारी काम के सिलसिले में वहाँ गए और एक मकान में रिहाइश कर ली। उस मकान के क़रीब ही वहाँ क मक़ामी लोगों ने एक मस्जिद बनाई हुई थी। मिस्टर अहमद ने भी वहाँ नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी। उस अमीर आदमी से उनकी दोस्ती हो गई। उसका मकान भी क़रीब ही था।

एक दफ़ा मिस्टर अहमद नमाज़ पढ़ने के लिए अपने घर से निकले तो उस अंग्रेज़ ने पीछे से आवाज़ देकर कहा, मिस्टर अहमद! मिस्टर अहमद! इधर आएं मैं आपको गाना सुनाना चाहता हूँ। मिस्टर अहमद ने कहा कि मैं गाना सुनने से नफ़रत करता हूँ और अब मैं नमाज़ के लिए जा रहा हूँ, मैं नहीं आ सकता। उसने ज़िद्द करते हुए फिर वही बात दोहराई। आख़िर मिस्टर अहमद! मैं आपको वह गाना सुनाना चाहता हूँ जो आप इस मीनार से रोज़ाना पाँच बार सुनते हैं।

मिस्टर अहमद फ़रमाते हैं कि मैं समझा कि शायद अज़ान की बात कर रहा है। लिहाज़ा मैं उसके पास आ गया। वह मुझे अपने घर में एक तन्हा कमरे में ले गया। उसने उस कमरे में टेबल पर एक तबला रखा हुआ था। उसने कमरा बंद कर दिया और तबला बजाना शुरू कर दिया। मैं परेशान था कि जमात का वक़्त निकल जाएगा। मगर उसने थोड़ी देर बाद तबले की सुर पर ﴿الحمد لله رب العالمين.﴾ *'अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन'* पढ़ना शुरू कर दिया तो मैं समझ गया कि हक़ीक़त में वह क्या पढ़ रहा है। उसने गाने की सुर बनाकर पूरी सूरः फ़ातेहा पढ़ दी। मैंने बाद में उससे पूछा कि तूने यह गाना किससे हासिल किया? उसने बताया

मुझे बहुत ज़्यादा दिमाग़ी परेशानी थी। मिस्र में मेरे एक मुसलमान दोस्त रहते हैं। मैंने उनसे अपनी दिमाग़ी परेशानी बयान की तो उन्होंने मुझे यह गाना दे दिया कि जब तुम्हें बहुत ज़्यादा परेशानी हो तो किसी तन्हा कमरे में बैठकर पढ़ लिया करो, तुम्हें सकून मिल जाया करेगा। इसके बाद जब भी मुझे कोई परेशानी होती है तो मैं इस तरह यहाँ बैठकर यह गाना गा लेता हूँ तो मुझे बहुत ज़्यादा सकून मिलता है और फिर मैं अपने दोस्तों को बताता हूँ :

'I am feeling natural high.'

मैं क़ुदरती तौर पर बहुत ज़्यादा सकून महसूस कर रहा हूँ।

मेरे दोस्तो! जो लोग क़ुरआन पाक को जानते हैं, मानते नहीं अगर वे इस किताब को पढ़ते हैं तो उनको सकून मिलता है अगर हम अपनी ज़िंदगियों में क़ुरआन पाक के अहकाम को लागू कर लें तो क्या हमारी परेशानी ख़त्म नहीं होंगी?

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० का फ़रमान

मेरे पीर व मुर्शिद फ़रमाया करते थे कि दरियाओं का रास्ता किसने बनाया? कोई नहीं बनाता। दरिया अपना रास्ता खुद बनाते हैं। यह क़ुरआन भी रहमत का वह दरिया है जो सीनों में अपने रास्ते खुद बना लिया करता है, सीनों में उतरता चला जाता है। इसीलिए कुछ काफ़िर जब क़ुरआन सुनते थे तो फ़ौरन इस्लाम क़ुबूल कर लेते थे।

नुस्ख़ाए कीमिया

हम से पहले वालों को भी इसी क़ुरआन की वजह से इज़्ज़तें

नसीब हुई। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा से यही तो लेकर आए थे। किसी कहने वाले ने कहा–

उतर कर हिरा से सूए क़ौम आया
और इक नुस्ख़ाए कीमिया साथ लाया

वह बिजली का कड़का था या सूते हादी
अरब की ज़मीं जिस ने सारी हिला दी

वह नुस्ख़ाए कीमिया क़ुरआन ही तो था, जिसने अरब की ज़मीन हिलाकर रख दी थी।

सहाबा किराम का क़ुरआन पर अमल

सहाबा किराम इसी क़ुरआन को सीने से लगाकर निकले थे और जिधर भी उनके क़दम पड़ते थे कामयाबी उनके क़दम चूमती थी। यह क़ुरआन ही की बरकत है कि अफ़्रीक़ा के जंगलों में रहने वाले दरिन्दों ने सहाबा किराम के लिए जंगल ख़ाली कर दिए। यह क़ुरआन ही की बरकत है कि जंगल और मैदान भी सहाबा किराम के लिए उनके मिशन की तकमील में रुकावट न बन सके। कहने वाले ने कहा–

बात क्या थी कि न क़ैसर व किसरा से दबे
चंद वो लोग कि ऊँटों के चराने वाले

जिनको काफ़ूर पे होता था नमक का धोका
बन गए दुनिया की तक़्दीर बनाने वाले

दुनिया की तक़्दीर को बदलकर रख दिया था। वह क़ुरआन पढ़ते थे तो उस पर अमल भी करते थे। इधर क़ुरआन पूरा होता

था उधर उनका अमल क़ुरआन के मुताबिक़ हो जाया करता था। वह सिर्फ़ हाफ़िज़ क़ुरआन न थे, वे सिर्फ़ क़ारी क़ुरआन न थे बल्कि वे आमिल क़ुरआन हुआ करते थे, वे नाशिर क़ुरआन हुआ करते थे, वे आशिक़ क़ुरआन हुआ करते थे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की इज़्ज़त अफ़ज़ाई

सहाबा किराम में से कितने हज़रात ऐसे थे जिनको क़ुरआन की वजह से अल्लाह तआला ने वह इज़्ज़त अता फ़रमाई जो उनको पहले हासिल नहीं थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार मक्का मुकर्रमा में एक लश्कर के साथ किसी रास्ते में जाते हुए पहाड़ी के दामन में रुक गए। गर्मी का मौसम था। लोगों को पसीना आ चुका था और सख़्त तंगी का आलम था। अमीरुल मोमिनीन क्योंकि खड़े थे इसलिए सारी फ़ौज भी इंतिज़ार में खड़ी थी। अमीरुल मोमिनीन नीचे वादी को देख रहे थे। क़रीब वाले आदमी ने पूछा अमीरुल मोमिनीन! क्या हुआ आप यहाँ खड़े कुछ देख रहे हैं। आपकी वजह से पूरी फ़ौज खड़ी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि मैं इस वादी में लड़कपन में इस्लाम लाने से पहले अपने ऊँट चराने के लिए आता था लेकिन मुझे ऊँट चराने का सलीक़ा नहीं आता था। मेरे ऊँट ख़ाली पेट घर जाते तो मेरे वालिद ख़त्ताब मुझे मारते, मुझे कोसते और कहते थे उमर! तू भी क्या कामयाब ज़िंदगी गुज़ारेगा, तुझे तो ऊँट चराने का सलीक़ा नहीं आता। मैं अपने उस वक़्त को याद कर रहा हूँ जब उमर को ऊँट चराने नहीं आते थे और आज इस वक़्त

को देख रहा हूँ जब क़ुरआन और इस्लाम के सदके अल्लाह तआला ने उमर को अमीरुल मोमिनीन बना दिया है। सुब्हानअल्लाह! सुब्हानअल्लाह! फ़रमाते थे :

﴿اعزنا الله تعالٰی بهٰذا الدین.﴾

अल्लाह तआला ने हमें इस दीन की बरकत से इज़्ज़तें अता फ़रमायीं।

मोहतरम जमात! इस क़ुरआन को पढ़िए, इसको याद कीजिए और इसको ज़िंदगी में लागू कीजिए। इसे पढ़ना एक काम है, पूरा काम नहीं। इस पर अमल करने से काम पूरा होता है। हम ने आमिल क़ुरआन भी बनना है। इस क़ुरआन के आशिक़ बन जाइए। दुआ किया कीजिए रब्बे करीम क़ुरआन को हमारे सीनों की बहार बना दें।

नस्ल से नस्ल तक क़ुरआन का फ़ैज़

आज भी दुनिया में क़ुरआन के आशिक़ मौजूद हैं। आप यह सुनकर हैरान होंगे कि लाहौर में एक आलिमे दीन सिलसिलाए आलिया में बैअत हुए। फ़क़ीर ने उनकी मस्जिद में दर्से क़ुरआन दिया। उसके बाद उन्होंने नाश्ते के लिए घर दावत दी। वह कहने लगे मेरे वालिद बड़े ही आशिक़ क़ुरआन थे। वह हर वक़्त क़ुरआन पढ़ते रहते थे। मैंने कहा, ज़रा आप उनका कोई वाक़िआ सुना दीजिए। उन्होंने अपने वालिद का वाक़िआ सुनाया। कहने लगे कि मेरे वालिद मोहतरम ऐसे आशिक़ क़ुरआन थे कि उन्होंने क़ुरआन मजीद की तिलावत को अपनी ज़िंदगी का मशग़ला बना

लिया था। चलते फिरते क़ुरआन पढ़ते थे, बैठकर भी क़ुरआन पाक की तिलावत करते रहते थे। कोई बात बीच में पूछता तो तिलावत पूरी करके जवाब दे देत थे फिर क़ुरआन पढ़ने लग जाते।

एक बार किसी अल्लाह वाले ने उनको बता दिया कि अगर आप दो साल में रोज़ाना एक क़ुरआन पाक की तिलावत करें तो क़ुरआन पाक का फ़ैज़ आपकी आने वाली नस्लों तक जारी हो जाएगा। मेरे वालिद साहब को यह बात अच्छी लगी और उन्होंने कहा, अच्छा मैं इसकी कोशिश करता हूँ। वह फ़रमाने लगे कि मेरे वालिद साहब का मामूल था कि रोज़ाना एक क़ुरआन मजीद की तिलावत कर लिया करते थे। सर्दी भी, गर्मी भी, सेहत भी, बीमारी भी, सफ़र भी, मक़ाम पर भी, रंज व मुसीबत भी, ख़ुशी भी, मालूम नहीं क्या-क्या कैफ़ियतें होती थीं मगर मेरे वालिद साहब ने पूरे दो साल एक क़ुरआन पाक रोज़ाना पूरा किया। फ़रमाने लगे कि उसका यह असर हुआ कि मेरे वालिद साहब के जितने बेटे और बेटियाँ हुई सब के सब क़ुरआन के हाफ़िज़ हुए और उनके आगे जितने बेटे और बेटियाँ आज दुनिया में मौजूद हैं और उनकी उम्र सात साल या ज़्यादा है वे सब के सब क़ुरआन पाक के हाफ़िज़ हैं।

देखिए कि आशिक़ क़ुरआन की नस्ल में अल्लाह तआला ने क़ुरआन का फ़ैज़ कैसे जारी फ़रमा दिया।

क़ुरआन पाक की सिफ़ारिश

क़ुरआन पाक क़यामत के दिन सिफ़ारिश करेगा। हदीस पाक

में आया है क़ुरआन पाक को एक नौजवान की शक्ल में पेश किया जाएगा। क़ुरआन मजीद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से सिफ़ारिश करेगा कि ऐ अल्लाह! जिन लोगों ने मुझे याद किया, जो तिलावत करते थे, उन्होंने मेरा हक़ अदा कर दिया, वे मुझसे ताल्लुक़ रखने वाले और ग़मगुसार थे, मुझसे मुहब्बत रखने वाले थे, मैं उनका मेहमान था, उन्होंने मेहमान नवाज़ी का हक़ अदा कर दिया। ऐ अल्लाह! उनको जन्नत में भेज दे। रब्बे करीम क़ुरआन पाक की सिफ़ारिश को क़ुबूल फ़रमाकर ऐसे लोगों को बिला हिसाब व किताब जन्नत अता फ़रमा देंगे।

मोहतरम जमात! क़ुरआन से मुहब्बत कीजिए, क़ुरआन को अज़ीज़ बना लीजिए। हर वक़्त इसको पढ़ते रहिए और इसके फ़ैज़ान से अपने दिलों को मुनव्वर करते रहिए। ज़िंदगी में भी कामयाबी होगी और आख़िरत में भी अल्लाह तआला कामयाबी से मिला देंगे।

क़ुरआन पढ़ने वाले की शान

याद रखना कि जो बंदा आलिम क़ुरआन बनेगा या हाफ़िज़े क़ुरआन बनेगा या क़ारी बनेगा, रब्बे करीम उसके इख़्लास की वजह से उसको दुनिया में भी वक़ार अता फ़रमाएंगे कि दुनिया उसके क़दमों में आकर बैठना अपनी सआदत समझेगी। जो इंसान इस किताब के साथ नत्थी होकर अपनी निस्बत को पक्का कर लेता है वह इंसान भी इज़्ज़त वाला बन जाता है। इसीलिए शायर ने कहा—

हर लहज़ा मोमिन की नई शान नई आन
गुफ़्तार में किरदार में अल्लाह की बुरहान
यह राज़ किसी को नहीं मालूम कि मोमिन
क़ारी नज़र आता है हक़ीक़त में है क़ुरआन

फिर इंसान तो यूँ लगता है कि क़ुरआन पढ़ने वाला क़ारी है लेकिन जब उस पर अमल कर लेता है तो यह चलते फिरते क़ुरआन की तरह होता है।

जिस्मानी शक्ल में क़ुरआन

किसी ने सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ क्या हैं? फ़रमाया ﴿كان خلقه القرآن﴾ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ तो क़ुरआन का नमूना थे। अगर क़ुरआन को कोई जिस्म की शक्ल में देखना चाहता है तो मेरे महबूब को देख ले। आप चलते फिरते क़ुरआन की तरह थे। आज भी जो इंसान इस क़ुरआन की आयतों को अपने ऊपर लागू कर लेता है वह चलते फिरते क़ुरआन की तरह बन जाता है। जिधर क़दम पड़ते हैं उधर ही बरकतें होती हैं। जिधर उसकी निगाह पड़ती है उधर ही रहमतें होती हैं।

सूरः बक़रा की ढाई साल में तालीम

हदीस पाक में आता है हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरः बक़रा ढाई साल में पूरी की। उनकी मादरी ज़बान

तो अरबी थी, उनको पढ़ने में फिर क्या दिक़्क़त थी। हक़ीक़त यह थी कि वह क़ुरआन की आयत पढ़ते थे तो उस पर अमल करते थे, इधर क़ुरआन पूरा होता था और उधर उनका अमल क़ुरआन के मुताबिक़ हो जाता था। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ुरआन पर अमल के बारे में कहा जाता है कि ﴿كان وقافا عند حدود الله﴾ वह अल्लाह के हुक्मों को सुनकर अपनी गर्दन झुका दिया करते थे।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सबक़ देने वाला वाक़िआ

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक मेहमान आया। आपने उसे बिठाकर बांदी से फ़रमाया, जाओ इस मेहमान के लिए कुछ लेकर आओ। घर के अंदर शोरबा था। उस बांदी ने वही शोरबा गर्म किया, प्याले में डालकर लाने लगी। जब दरवाज़े में दाख़िल होने लगी तो उस वक़्त बे ध्यानी की वजह से उसका पाँव अटका और शोरबा नीचे गिरा। उसके क़तरे आपके जिस्म मुबारक पर गिरे क्योंकि शोरबा गर्म था इसलिए और गर्म शोरबा अगर जिस्म पर गिरे तो जिस्म जलता है। आपको तकलीफ़ हुई इसलिए हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस बांदी की तरफ़ ग़ुस्से के साथ देखा। वह बांदी पहचान गई कि आपको बहुत ग़ुस्सा आया। मगर वह आपकी ज़िंदगी के उसूल और क़ायदों को जानती थी। जब आपने ग़ुस्से और जलाल से उसकी तरफ़ देखा तो वह फ़ौरन कहने लगी ﴿والكاظمين

﴿الغيظ﴾ क़ुरआन की वह आयत जिसमें अल्लाह तआला मोमिनों की सिफ़ात गिनवाते हैं कि वे तो गुस्से को पी जाने वाले होते हैं। आपने फ़ौरन कहा मैंने अपने गुस्से को पी लिया। वह कहने लगी ﴿والعافين عن الناس﴾ इंसानों को माफ़ कर देने वाले। आपने फ़रमाया जा मैंने तेरी ग़लती को माफ़ कर दिया। वह कहने लगी ﴿والله يحب المحسنين﴾ अल्लाह तआला नेकोकारों से मुहब्बत करते हैं। आप फ़रमाने लगे जा मैंने तुझे अल्लाह के रास्ते में आज़ाद कर दिया।

सुब्हानअल्लाह! उसी लम्हे उसको ग़ुस्से में देख रहे थे और उसी लम्हे उसको अल्लाह के रास्ते में आज़ाद कर दिया। वे क़ुरआन सुनते चले जाते थे और ज़िंदगियों को बदलते चले जाते थे।

क़ुरआन मजीद से हमारा सुलूक

जब हमारी ज़िंदगी में क़ुरआन मजीद के साथ ऐसा अमली ताल्लुक़ पैदा हो जाएगा तो अल्लाह तआला हमें भी इज़्ज़तें अता फ़रमाएंगे। अज़ीज़ तलबा! आप तो अपनी ज़िंदगियाँ क़ुरआन के लिए वक़्फ़ कर चुके हैं, आम लोगों की हालत जाकर देखो रोना आता है। घरों के अंदर क़ुरआन को रेशमी ग़िलाफ़ों में रख देते मगर उनको पढ़ने की फ़ुर्सत नहीं होती। आजकल घरों में टीवी रोज़ाना आन किया जाता है, ड्रामे रोज़ाना देखे जाते हैं, रोज़ाना घंटों प्रोग्राम देखे जाते हैं, अख़बार रोज़ाना पढ़ा जाता है, डाइजेस्ट रोज़ाना पढ़ा जाता है मगर उन घरों में महीनों गुज़र जाते हैं कि कोई बंदा भी अल्लाह का क़ुरआन खोलने वाला नहीं होता। सारे के सारे क़ुरआन से ग़ाफ़िल बनकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं। उनको

क़ुरआन कब याद आता है? जब बहू-बेटी को जहेज़ में देना हो या फिर उस वक़्त याद आता है जब क़सम खाकर किसी को यक़ीन दिलवाना हो, आगे पीछे याद नहीं आता।

ऐ काश! यह क़ुरआन हमें ज़िंदगी में याद आता, हमें अपने बिजनेस के वक़्त याद आता, दफ़्तर की कुर्सी पर याद आता, हमें क़लम से दस्तख़त करते हुए याद आता, मियाँ-बीवी के मामलात में क़ुरआन याद आता।

ग़लबा कैसे मुमकिन है

जब क़ुरआन नाज़िल हो रहा था, उस वक़्त दुश्मन एक दूसरे को बैठकर तलक़ीन करते थे कि जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो तुम उस वक़्त शोर-ग़ुल मचाया करो ﴿لعلكم تغلبون﴾ ताकि तुम ग़ालिब आ जाओ। मगर क़ुरआन ने बता दिया कि ग़लबा इस तरह नहीं मिलता। ग़ालिब होने के लिए तो क़ुरआन भेजा गया है। जो लोग इसके मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ारेंगे रब्बे करीम उन्हें दुनिया में भी ग़लबा अता फ़रमाएंगे और आख़िरत की इज़्ज़तें भी देंगे क्योंकि यह किताब सच्चाईयों का मजमूआ है, हक़ीक़तों का ख़ज़ाना और सच्चाईयों से भरी हुई किताब है जिसे (Ultimate realities of universe.) यानी काएनात की सदाक़तें कहते हैं।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को जो ग़लबा मिला इसी क़ुरआन के सदक़े मिला वरना शुरूआत में तो वह वक़्त था कि जब काफ़िर ज़्यादा थे और सहाबा किराम थोड़े थे। उस वक़्त कुंडी लगाकर एक दूसरे को कलिमे की तालीम दिया करते थे। रब्बे करीम एहसान जतलाते हुए फ़रमाते हैं ﴿واذكروا﴾ तुम याद

करो उस वक़्त को ﴿اذ انتم قليل﴾ जब तुम थोड़े थे ﴿مستضعفون فی الارض.﴾ ज़मीन में कमज़ोर थे ﴿تخافون.﴾ तुम डरते रहते थे ﴿ان يتخطفكم الناس﴾ कि कहीं लोग उचक न लें ﴿فاوٰكم﴾ उस अल्लाह ने तुम्हें ठिकाना दिया ﴿ايدكم بنصره﴾ और अपनी मदद से तुम्हें मज़बूत किया ﴿ورزقكم من الطيبات﴾ और ख़ुदा ने तुम्हें पाकीज़ा रिज़्क़ दिया ﴿لعلكم تشكرون﴾ ताकि तुम अपने परवरदिगार का शुक्र अदा करते रहो।

ऐलाने ख़ुदावंदी

कुफ़्फ़ार तो चाहते थे कि किसी तरह इस पौधे को काटकर रख दें मगर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿هو الذی ارسل بالهدی ودين الحق﴾ वह ज़ात जिसने अपने रसूल को नूरे हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा ﴿ليظهره على الدين كله﴾ ताकि यह दीन दुनिया के तमाम दीनों पर ग़ालिब आ जाए ﴿ولو كره المشركون.﴾ चाहे यह बात मुश्रिकों को अच्छी न लगे ﴿ولو كره الكفرون.﴾ चाहे काफ़िरों को यह बात अच्छी न लगे। इसलिए अल्लाह तआला ईमान वालों से फ़रमा रहे हैं कि तुम काफ़िरों से नहीं डरना। अल्लाह तआला काफ़िरों के बुरे इरादों से पर्दा उठाते हुए फ़रमा रहे है, ﴿يريدون﴾ वे यह इरादा करते हैं ﴿ليطفئوا نور الله بافواههم.﴾ कि अल्लाह के नूर को फूंकों से बुझा दें मगर अल्लाह तआला भी फ़रमाते हैं कि ﴿والله متم نوره.﴾ अल्लाह तआला ने इस नूर को कामिल करना है ﴿ولو كره الكفرون.﴾ अगरचे काफ़िरों को यह बात अच्छी न लगे। सुब्हानअल्लाह! जिस नूर को अल्लाह तआला रोशन फ़रमाएं दुनिया उसको फूंकों से कैसे बुझा सकती है।

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़ंदा ज़न
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

कुफ़्फ़ार की बेफ़ायदा तदबीरें

कुफ़्फ़ार ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में बड़ी चालें चलीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शहीद कर दें। जबकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿واذ يمكر بك الذين كفروا﴾ ऐ महबूब! जब आप के साथ कुफ़्फ़ार ने मकर किया कि हर क़बीले का एक आदमी आ जाए, रात को घेराव कर लेंगे, सुबह जब नमाज़ के लिए जाएंगे तो हम शहीद कर देंगे। कुफ़्फ़ार की चालें भी कोई मामूली बातें नहीं होती थीं, वे बड़े ज़हीन लोग थे, बैठकर पक्की मंसूबा बंदी करते थे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وان كان مكرهم لتزول منهُ الجبال﴾ वे ऐसी तदबीरें करते थे कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाते। मगर फ़रमाया ﴿ومكر اولٰئك هو يبور.﴾ अल्लाह तआला उनकी तदबीरों को ज़ाए कर दिया करते थे। अपने महबूब को तसल्ली देते हैं। फ़रमाया ﴿قد مكر الذين من قبلهم﴾ मेरे महबूब! उन्होंने आपसे पहले वालों के साथ भी तदबीरें कीं ﴿فاتى الله بنيانهم من القواعد.﴾ लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी दीवारों को बुनियादों से ही उखाड़ फेंका ﴿فخر عليهم السقف من فوقهم﴾ उनकी छतें उन पर आ गिरीं ﴿واتهم العذاب﴾ उन पर ऐसा अज़ाब आया ﴿من حيث لا يشعرون.﴾ जिसका वह शऊर भी नहीं रखते थे। अल्लाह तआला ने अपने महबूब से फ़रमाया ﴿واذ يمكر بك الذين كفروا﴾ जब आप के साथ इन काफ़िरों ने तदबीर की ﴿ليثبتوك﴾ कि आपको बिला वजह घुटन में रखें ﴿او يقتلوك﴾ या आप को

शहीद करें ﴿اويخرجك﴾ आपको देस निकाला दे दें ﴿ويمكرون﴾ उन्होंने भी तदबीरें कीं ﴿ويمكرو الله﴾ और अल्लाह तआला ने भी तदबीरें कीं ﴿والله خير الماكرين﴾ अल्लाह तआला सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। सुब्हानअल्लाह अल्लाह तआला फ़रमाते ने अपने महबूब को काफ़िरों से कैसे बचाया।

मेरे दोस्तो! हम क़ुरआन को सीने से लगाएं, काफ़िर अगर फिर भी हमारे ख़िलाफ़ तदबीरें करेंगे तो परवरदिगार उनकी तदबीरों को ज़ाए कर देंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿فلا تهنوا﴾ तुम सुस्त न बनो ﴿ولا تحزنوا﴾ और तुम अपने अंदर ग़म पैदा न करो ﴿وانتم الاعلون ان كنتم مؤمنين.﴾ तुम ही आला व बाला होगे अगर तुम ईमान वाले हो।

मोमिन के साथ ग़लबे का वायदा है क़ुरआन में
तू मोमिन है और ग़ालिब नहीं तो नुक़्स है तेरे ईमान में

यह हमारे ईमान का नुक़्स होता है जिसकी वजह से हम दुनिया में मग़लूब होकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं वरना रब्बे करीम तो हमें ग़लबा अता करना चाहता है।

कुफ़्फ़ार की मायूसी

जिस दिन क़ुरआन की आख़िरी आयतें उतरीं ﴿اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتي.﴾ उसी दिन क़ुरआन की ये आयतें भी उतरीं ﴿اليوم يئس الذين كفروا من دينكم.﴾ आज के दिन ये कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन से मायूस हो चुके हैं। उनके दिलों में यह बात बैठ चुकी है कि ये मुसलमान तो लोहे के चने हैं उन्हें चबाना कोई

आसान काम नहीं है। उनकी उम्मीदें टूट चुकी हैं। वे तुमसे मायूस हो चुके हैं। आगे फ़रमाया, ﴿فلا تخشوهم﴾ तुमने उनसे नहीं डरना ﴿واخشونى﴾ एक मुझसे डरते रहना और जब तक हम अल्लाह तआला से डरते रहेंगे रब्बे करीम हमारी मदद फ़रमाते रहेंगे।

अल्लाह तआला की मदद

याद रखें कि जिस पलड़े में अल्लाह तआला की मदद का वज़न आ जाता है। वह पलड़ा सारी काएनात से ज़्यादा भारी हो जाता है। रब्बे करीम फ़रमाते हैं ﴿كم من فئة قليلة﴾ कितनी बार ऐसा हुआ कि एक थोड़ी जमात ﴿غلبت فئة كثيرة باذن الله﴾ एक बड़ी जमात पर ग़ालिब आ गई अल्लाह के हुक्म से ﴿والله مع الصابرين.﴾ अल्लाह तआला तो सब्र व ज़ब्त वालों के साथ हैं। अगर इसका मफ़हूम बयान किया जाए तो यूँ बनेगा कि कितनी बार ऐसा होता है अल्लाह तआला ने चिड़ियों से बाज़ मरवा दिए। लिहाज़ा अगर हम कुफ़्फ़ार को इस वक़्त क़वी और ज़्यादा देखते हैं तो घबराने की कोई ज़रूरत नहीं। क़ुरआन को सीनों से लगा लीजिए, क़ुरआन के मुताबिक़ ज़िंदगी को ढाल लीजिए, रब्बे करीम बदर वाली मदद अता फ़रमा देंगे। रब्बे करीम ने फ़रमाया :

﴿لقد نصركم الله فى مواطن كثيرة، لقد نصركم الله ببدر وانتم اذلة﴾

अल्लाह तआला हमारी मदद व नुसरत का वायदा फ़रमा रहे हैं। और फ़रमाया ﴿انا لننصر رسلنا﴾ अपने रसूलों की मदद हमारे ज़िम्मे है ﴿والذين امنوا﴾ और ईमान वालों की भी ﴿فى الحيوة الدنيا﴾ इस दुनिया की ज़िंदगी में भी ﴿ويوم يقوم الاشهاد﴾ और उस दिन

गवाहियाँ क़ायम होंगी। जब अल्लाह तआला ईमान वालों की मदद अपने ज़िम्मे ले रहे हैं तो हमें फिर घबराने की ज़रूरत नहीं।

इतनी बड़ी गारन्टी

अज़ीज़ तलबा! हम अपने दुश्मनों को नहीं पहचानते। रब्बे करीम फ़रमाते हैं ﴿والله اعلم باعدائكم﴾ ऐ ईमान वालो! तुम अपने दुश्मनों को नहीं जानते, तुम्हारी सफ़ों में मुनाफ़िक़ भी होंगे, तुम्हारी सफ़ों में भेष बदलकर आने वाले जासूस भी होंगे। तुम्हें क्या मालूम कि जिससे तुम बात कर रहे हो वह तुम्हारा दोस्त है या दुश्मन मगर तुम्हारा रब जानता है। वह तो दिलों के भेद भी जानता है। जब हमारा परवरदिगार हमारे दुश्मनों को जानता है तो याद रखना ﴿ولن يجعل الله للكفرين على المؤمنين سبيلا﴾ कि अल्लाह तआला कभी भी काफ़िरों को ईमान वालों तक आने का रास्ता नहीं देगा। सुब्हानअल्लाह! रब्बे करीम ने कितनी बड़ी गारन्टी दे दी। अल्लाह तआला उनके रास्ते में रुकावट बन जाएगा। जैसे हम एक दूसरे से बात करते हुए कहते हैं कि अरे! तुम मेरे दोस्त तक जाओगे तो मेरी लाश से गुज़रकर जाओगे, बिल्कुल यही मज़मून रब्बे काएनात बयान फ़रमा रहे हैं कि ऐ मोमिनो! जो तुम तक आएगा वह पहले मुझसे निबटेगा फिर तुम तक आएगा और मुझसे जो टकराता है मैं उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता हूँ। मैं उसे तिगनी का नाच नचा दूंगा, मैं उसे नेस्त व नाबूद कर दूंगा।

जंगे ख़न्दक़ में अल्लाह तआला की मदद

जंगे ख़न्दक़ में जब मक्का से लेकर मदीना तक के रास्ते के

जितने काफ़िर थे सारे के सारे मिलकर आ गए थे। उस वक़्त मुसलमान थोड़े थे और काफ़िर बहुत ज़्यादा थे। वे कहते थे कि हम मुसलमानों को ख़त्म करके रख देंगे। एक महीने तक घेराव क़ायम रहा मगर उनके पल्ले कुछ न आया। परवरदिगार आलम फ़रमाते हैं ﴿ورد اللّٰه الذين كفروا بغيظهم﴾ अल्लाह तआला ने काफ़िरों को उनके ग़ुस्से के साथ वापस लौटा दिया। ﴿لم ينالوا خيرا﴾ उनके पल्ले कोई ख़ैर न आई। हक़ीक़त यह थी हमारे पिछले बुज़ुर्गों सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का यह तक़्वा और परहेज़गारी थी जिसकी वजह से उन पर काफ़िर ग़ालिब न आ सके।

ज़ाहिर व बातिन को निखारने का नुस्ख़ा

आजिज़ के पीर व मुर्शिद अजीब बात इर्शाद फ़रमाते थे कि

तेरे हाथ में हो क़ुरआन तो दुनिया रहे परेशान
तेरे हाथ में हो क़ुरआन तो दुनिया रहे नाकाम
तेरे हाथ में हो क़ुरआन तो दुनिया रहे ग़ुलाम

ग़ुलामी नफ़्स की हो, शैतान की हो या किसी इंसान की हो... ना! ना! ना! हमें कहता है यह क़ुरआन... हमें कहता है यह क़ुरआन... ऐ मेरे मानने वाले मुसलमान... ﴿اقرا وربك الاكرم﴾ तू पढ़ क़ुरआन... तेरा रब करेगा तेरा इकराम... तेरा रब तुझे इज़्ज़त व वक़ार देगा, तेरे ज़ाहिर व बातिन को निखार देगा मगर हमारी हालत इस क़दर रहम के क़ाबिल हो चुकी है कि अल्लाह के महबूब क़यामत के दिन कहेंगे :

﴿يا رب ان قومي اتخذوا هذا القران مهجورا﴾

ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी क़ौम ने क़ुरआन को पीठ पीछे डाल दिया था।

लिहाज़ा आज से ही क़ुरआन से मुहब्बत कर लीजिए। इससे अपने रूहानी बीमारियों को ठीक कर लीजिए।

ठीक होने का नुस्ख़ा

ग़ौर तो कीजिए कि ठीक होने का नुस्ख़ा भी हमारे हाथ में है और हमारे ही सीने में बीमारी मौजूद है। कुछ कीना की, कुछ बुग़्ज़ की, हसद की, घमंड की। जब क़ुरआन सीनों में आ जाएगा तो वह सारी की सारी रुहानी बीमारियाँ ख़त्म हो जाएंगी। नुस्ख़ा भी हमारे हाथ में है और मरते भी हम ही हैं। क्या आज के मुसलमान को कोई समझाने वाला नहीं कि तुम इस नुस्ख़े से फ़ायदा क्यों नहीं उठाते। अरे यह ठीक होने का नुस्ख़ा है जो तुम्हारे हाथ में दे दिया गया है। आइए क़ुरआन से पूछें कि तुम कैसे शिफ़ा देते हो? क़ुरआन बताएगा।

وشف صدور قوم مؤمنين○ شفاء لما في الصدور وهدى ورحمة للمؤمنين○ وننزل من القران ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ولا يزيد الظلمين الا خسارا○قل هو للذينين امنوا هد وشفاء○

यह नुस्ख़ा शिफ़ा है जो सीनों को धो दिया करता है। मगर इस साबुन को इस्तेमाल तो करो यह मैल उतर जाएगा, यह सीना धुल जाएगा मगर दिल को उजला बनाने के लिए क़ुरआन को ज़बान से नीचे उतारना होगा सिर्फ़ ज़बान तक न रखना, इसे दिल में उतार लेना। यह दिल तक उतर गया तो फिर दिल को नूरानी

बना देगा।

रब्बे करीम हमें क़ुरआन पाक का हाफ़िज़ बना दे, आलिम बना दे, नाशिर बना दे, आशिक़ बना दे, क़ुरआन को हमारे दिलों की बहार बना दे।

(आमीन सुम्मा आमीन)

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾